ISSN 2229-547X VIDEHA



'विदेह' २५३ म अंक ०१ जुलाइ २०१८ (वर्ष ११ मास १२७ अंक २५३)

वि दे ह *विदेह Videha विदेह http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।*

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

साहित्य अकादमी, दिल्ली मैथिली लेल ऐ बेरुका युवा साहित्य पुरस्कार श्री उमेश पासवान जी कें हुनकर २०१२ मे प्रकाशित पद्य संग्रह "वर्णित रस' पर देबाक निर्णय लेलक अछि। निर्णय विलम्बित मुदा स्वागत योग्य अछि।

https://dbb13891-a-96a2f0ab-s-sites.googlegroups.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/UmeshPaswan.pdf?attachauth=ANoY7coRlGM02SpW8rbrtLhu4Nv4f7F4vtyo56SmjrOoRMDSi9nHhMV9uqV0mwLzGsgdjK-R2HKNiVvSkqvqdJUXDR4Q5zlGEZ7PfHHEaiD9LFLEjz2sIC8F7pyCruDc0J4T3NS0zb1RSoLfQnCONbYP7XRoG3Pn1fr8Ol8w2644nsB5Qfz5Edz1dw9DqNLUdQ6X-yQM3XUI0i3P31bUMqOlaD_EkRdzQQ%3D%3D&attredirects=0

http://sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/pdf/Pressrelease_YP-2018.pdf

साहित्य अकादमीक मैथिलीक नव परामर्शदात्री समिति आ जूरी संकीर्णतासँ बाहर एबामे सफल भेल, तइ लेल धन्यवादक पात्र अछि। डॉ. प्रेम मोहन मिश्र नव परामर्शदात्री समितिक अध्यक्ष छथि, मैथिलीक नै वरन् रसायनशास्त्रक प्रोफेसर छथि, से मेडियोकर नै छथि। मुदा असली परीक्षाक परिणाम साहित्य अकादमीक मैथिलीक मूल पुरस्कार देबा काल सोझाँ आएत, जखन पता लागत जे नव परामर्शदात्री समिति टी.एन. शेषन बनल आकि फेर भोथला गेल आ पिछला ५० सालसँ जे होइत रहल ओही रस्तापर चलऽ लागल।

बी.बी.सी. क हिन्दी विभागमे ऐ पुरस्कारक चर्चा भेल तँ संगमे दलित न्यूजमे सेहो आ अरविन्द दास सेहो ऐपर लिखलन्हि:

https://www.bbc.com/hindi/india-44635012

http://www.dalitdastak.com/yuva-sahitya-akademi-awardee-2018-maithili-poet-umesh-paswan-latest-news-story-literature/

https://www.thelallantop.com/bherant/dr-arvind-das-writes-about-a-maithili-poet-umesh-paswan-who-is-a-watchman-in-madhubani/

मुदा ऐसँ विपरीत मैथिलीक किछु युवा आ अधवयसु साहित्यकारक टिप्पणी सोचबापर विवश केलक जे २१म शताब्दीयो मे हिनकर सभक सोच कतेक पाछू छन्हि। मुदा ऐ तरहक लोकक संख्या नगण्य अछि, से खुशीक गप।

....

२. गद्य

२.१.१.आशीष अनचिन्हार- आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय २.उमेश मण्डल-सगर राति दीप जरय- ९८म कथा गोष्ठी- सिमरा (झंझारपुर)

२.१.उमेश मण्डल- बीहैन कथा- भिनसुरका गप-सप २.रबीन्द्र नारयण मिश्रक किछु लघुकथा

२.३.जगदीश प्रसाद मण्डलक २ टा लघुकथा

२.४.१. जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास)- आगाँ २.रबीन्द्र नारायण मिश्र- नमस्तस्यै (उपन्यास)- आगाँ

१.आशीष अनचिन्हार- आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय २.उमेश मण्डल-सगर राति दीप जरय- ९८म कथा गोष्ठी- सिमरा (झंझारपुर)

१

आशीष अनचिन्हार

आधुनिक मैथिली गजलक संक्षिप्त आलोचनात्मक परिचय

प्रस्तुत आलेख हम मैथिली गजलपर लिखने छी। वर्तमान शोधकेँ मानी तँ आब मैथिली गजल लगभग112 बर्खक भऽ गेल अछि। एहि 112 बर्खमे मैथिली गजलमे बहुत रास प्रयोग आ स्थापना भेलै तकरे निरूपण करब एहि लेखक उद्येश्य अछि। एहि लेखकेँ पढ़बासँ पहिने किछु तथ्य सामने राखि दी जाहिसँ मैथिली गजलक सभ प्रयोग आ स्थापनाकेँ अहाँ सभ नीक जकाँ परखि सकब--

1) गजल लेल बहर ओ काफिया अनिवार्य छै (बहरक पालनमे किछु छूट सेहो भेटै छै गजलकारकेँ मुदा धेआन राखू जे बहरमे लिखते नै छथि हुनका लेल ई छूट कोन काजक)। पं.जीवन झासँ आधुनिक मैथिलीक गजलक जन्म मानल जाइत अछि आ स्वाभाविक छै जे पहिल चीजमे सही आ गलत दूनू तत्व रहै छै तँइ पं.जीक किछु गजलमे बहर ओ काफियाक नीक प्रयोग भेटत तँ किछु गजल गीत जकाँ भेटत। मुदा तकर बाद कविवर सीताराम झा आ काशीकांत मिश्र मधुपजी मैथिलीक गजलक भार उठेला आ मैथिली गजलकेँ विस्तार देला। कविवर आ मधुपजीक गजल सभ पूर्णरूपेण बहर ओ काफियासँ सजल अछि। हिनक दूनूक गजल यथार्थमे मैथिली गजल अछि (भाषा मैथिलीक आ गजल व्याकरणकेँ मैथिलीक अनुरूप देल गेल अछि)। कविवरजी आ मधुपजी दूनू कम्मे गजल लिखलाह मुदा हमरा जनैत ई गजल सभ व्याकरणयुक्त आधुनिक मैथिली गजलक पृष्ठभूमि अछि।

2) लगभग 1970-75सँ मैथिली गजल ओहन धाराक लोक सभहँक हाथमे आबि गेल जे कि गजल बारेमे किछु नै जनैत छलाह। ओ मात्र दू पाँतिक बहर-काफियाहीन पाँति सभसँ बनल कविताकेँ गजल कहए लगलाह। कोनो विधामे प्रयोग खराप नै छै मुदा पाठककेँ भ्रमित कए कऽ कएल प्रयोग हानिकारक होइत छै। एहि धाराक लोक सभ कहैत छलाह गजलमे कोनो नियम नै होइत छै। किछु गोटे कहैत छलखनि जे मैथिलीमे गजल भैए ने सकैए। जखन कि हुनका सभसँ पहिनेहें कविवर आ मधुपजी व्याकरणयुक्त गजल लीखि चुकल छलाह। उपरेमे कहने छी जे एहि धाराक लोक सभकेँ गजलक ज्ञान नै छलनि संगे-संग हिनका सभकेँ मैथिली गजलक इतिहासक बारेमे सेहो पता नै छलनि अन्यथा "गजलमे कोनो नियम नै होइ छै" वा " मैथिलीमे गजल लिखले नै जा सकैए" एहन-एहन बयान देबासँ पहिने ओ सभ जरूर पं.जीवन झा, कविवर सीताराम झा, काशीकांत मिश्र मधुपजीक गजलमे प्रयोग भेल नियम सभकेँ जरूर देखितथि।

3) एहि आलेखमे हम दूनू धाराक उल्लेख करब। दूनू धाराक गजलमे की-की अंतर अछि, दूनू धाराक गजलमे कोन-कोन काज भेल अछि। दूनू धाराक की कमजोरी अछि। दूनू धाराक प्रतिनिधि गजलकार सभहँक किछु शेर सभ सेहो हम देब। मैथिलीमे व्याकरणयुक्त धारा पहिनेसँ अछि तँ पहिने ओकरे वर्णन हएत बादमे बिना व्याकरण बला धाराक। जे गजलक नियम पालन नै करै छथि हुनकर कहब छनि जे व्याकरणसँ विचार ओ भाव बन्हा जाइ छै (ई मोन राखू जे एहन कहए बला लोक सभ मात्र साम्यवादी वा कथित प्रगतिशील भावक बात करै छथि)। हम एहि लेखमे व्याकरणयुक्त गजल सभहँक उदाहरण दैत साबित करब जे कोना व्याकरणसँ भाव कि विचार आदि पुष्ट होइत छै।

4) मैथिली गजल मने ओ गजल जे कि मैथिलीमे लिखल गेल चाहे ओकर देश कोनो किएक ने हो।

5) एहि आलेखक सभ तथ्य हमर पोथी "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास"मे आबि चुकल अछि जकरा हम एहिठाम प्रसंगक हिसाबें पुनर्लेखन केलहुँ अछि।

आधुनिक मैथिली गजलक इतिहास

मैथिलीमे गजल उर्दू भाषाक माध्यमें आएल। उर्दूमे फारसीसँ आ फारसीमे अरबीसँ। पं.जीवन झा (जन्म आ मृत्युः 1848-1912) अपन नाटक "सुन्दर संयोग" आ "सामवती पुनर्जन्म"मे पहिल बेर गजल लिखलाह। सुन्दर संयोग 1905 इ.मे प्रकाशित भेल छल। तकर बाद कविवर सीताराम झा (जन्म 1891 ई.मे तथा निधन 1975 ई) गजल लिखलाह। कविवरजीक "जगत मे थाकि जगदम्बे अहिँक पथ आबि बैसल छी" ई गजल 1928मे प्रकाशित कविवर सीताराम झा जीक " सूक्ति सुधा (प्रथम बिंदु)मे संग्रहीत अछि।

काशीकांत मिश्र मधुप (जन्म-मृत्युः 1906-1987) "मिथिलाक पूर्व गौरव नहि ध्यान टा धरै छी" नामक गजल लिखलाह जे कि 1932मे मैथिली साहित्य समिति, द्वारा काशीसँ "मैथिली-संदेश" नामक पत्रिकामे प्रकाशित भेल।

व्याकरणयुक्त आधुनिक मैथिली गजलक इतिहास

पं.जीवन झाजीसँ एहि धाराक शुरुआत भेल आ तकर बाद कविवर सीताराम झा, काशीकांत मिश्र मधुप, योगानंद हीरा, जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल", विजय नाथ झा, गजेन्द्र ठाकुर, मुन्नाजी, शान्तिलक्ष्मी चौधरी, ओमप्रकाश झा, अमित मिश्र, जगदानन्द झा मनु,, कुन्दन कुमार कर्ण, श्रीमती इरा मल्लिक, राम कुमार मिश्र, नीरज कुमार कर्ण, प्रदीप पुष्प, राजीव रंजन मिश्रा, चंदन कुमार झा आदि भेलथि। एहि धाराक अंतर्गत सरल वार्णिक बहरमे लीखए बला किछु गजलकार एना छथि-- इरा मल्लिक, सुनील कुमार झा, पंकज चौधरी नवल श्री, मिहिर झा, अनिल मल्लिक, दीप नारायण विद्यार्थी,प्रवीन नारायण चौधरी प्रतीक, भावना नवीन, रवि मिश्रा भारद्वाज, अजय ठाकुर मोहन, प्रभात राय भट्ट, सुमित मिश्रा "गुंजन" आदि। एहि ठाम स्पष्ट करब बेसी जरूरी जे सरल वार्णिक बहर मात्र आरंभिक अनुशासन लेल अछि। एकर उद्येश्य ई अछि जे पहिने गजलकार हल्लुकसँ सीखथि आ तकर बाद गजलक मूल बहरपर जाथि। ओना ई कहबामे हमरा कोनो संकोच नै जे बहुतो बिना व्याकरण बला गजलकार सभसँ नीक ई सरल वार्णिक बला गजलकार सभ लीखै छथि। सरल वार्णिक बहर मूल वैदिक छंद अछि जाहिमे गजलक हरेक पाँतिमे अक्षरक संख्या एक समान देल जाइ छै जखन कि गजलक मूल बहर वर्णवृत अछि जाहिमे गजलक हरेक पाँतिक मात्राक्रम एक समान रहै छै मने हरेक पाँतिक लघुकेँ निच्चा लघु आ दीर्घक निच्चा दीर्घ।

उपरक नाम सभहँक अलावे हम अपने व्याकरणयुक्त गजलक समर्थक छी आ किछु गजल सेहो लीखि/कहि लै छी।

व्याकरणयुक्त आधुनिक मैथिली गजलमे भेल काज

1905सँ लगातार व्याकरणयुक्त लिखाइत रहल आ 11/4/2008केँ ‘‘अनचिन्हार आखर’’ नामक ब्लाग इंटरनेटपर आएल। एकरा एहि लिंकपर देखल जा सकैए https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/। अनचिन्हार आखर केर छोटका नाम " अ-आ " राखल गेल अछि। ई ब्लाग हमरा द्वारा शुरू कएल गेल छल आ समय-समयपर आन-आन गजलकार सभकेँ जोड़ल गेल। वर्तमानमे ई ब्लाग हमरा आ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा संपादित भऽ रहल अछि तँ देखी व्याकरणयुक्त आधुनिक मैथिली गजल लेल भेल किछु एहन काज जे अ.आ द्वारा भेल ---

1) अ-आ प्रिंट वा इंटरनेटपर पहिल उपस्थिति अछि जे की मात्र आ मात्र गजल एवं गजल अधारित विधापर केन्द्रित अछि।

2) अ-आ केर आग्रहपर श्री गजेन्द्र ठाकुर जी गजलशास्त्र लिखला जे की मैथिलीक पहिल गजलशास्त्र भेल। एही गजलशास्त्रमे ठाकुरजी सरल वार्णिक बहरक जन्म देलाह।

3) अ-आ द्वारा "गजल कमला-कोसी-बागमती-महानन्दा सम्मान" केर शुरूआत भेल। जे की स्वतन्त्र रूपें गजल विधा लेल पहिल सम्मान अछि।

4) अ-आ केर ई सौभाग्य छै जे ओ मैथिली बाल गजल नामक नव विधाकेँ जन्म देलक आ ओकर पोषण केलक। मैथिली भक्ति गजल सेहो अ-आ केर देन अछि। विदेहक अङ्क 111 पूर्ण रूपेण बाल-गजल विशेषांक अछि आ अङ्क 126 भक्ति गजल विशेषांक।
5) बर्ख 2008 आ 2015 माँझ करीब 30टासँ बेसी गजलकार मैथिली गजलमे एलाह। ई गजलकार सभ पहिनेसँ गजल नै लिखै छलाह। संगे-संग करीब 6-7टा गजल समीक्षक-आलोचक सेहो एलाह।
6) पहिल बेर मैथिली गजलक क्षेत्रमे एकै बेर करीब 16-17 टा आलोचना लिखाएल।
7) अ-आ मैथिली गजलकेँ विश्वविद्यालय ओ यू.पी.एस. सी एवं बी.पी.एस. सीमे स्थान दिएबाक अभियान चलौने अछि आ एकटा माडल सिलेबस सेहो बना कऽ प्रस्तुत केने अछि।
8) अ-आ प. जीवन झा जीक मृत्यु केर अंग्रेजी तारीख पता लगा ओकरा गजल दिवस मनेबाक अभियान चलौने अछि।
9) अ-आ 1905सँ लऽ कऽ 2013 धरिक गजल सङ्ग्रहक सूची एकट्ठा ओ प्रकाशित केलक (व्याकरणयुक्त एवं व्याकरणहीन दूनू)।
10) अ-आ अधिकांश गजलकारक (व्याकरण युक्त एवं व्याकरणहीन दूनू) संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत केलक।
11) अ-आ 62 खण्डमे गजलक इस्कूल नामक श्रृखंला चलौलक जे की समान्य पाठकसँ लऽ कऽ गजलकार धरि लेल समान रूपसँ उपयोगी अछि।
12) अ-आ मैथिलीमे पहिल बेर आन-लाइन मोशयाराक आरम्भ केलक आ ई बेस लोकप्रिय भेल।
13) मैथिली गजल आ अन्य भारतीय भाषाक गजल बीच संबंध बनेबाक लेल "विश्व गजलकार परिचय शृखंला" शुरू कएल गेल।
14) एखन धरि अ.आ केर माध्यमें मैथिली गजलमे गजल-1386, रुबाइ-417, बाल गजल 207, बाल रुबाइ-47, भक्ति गजल-47, हजल-21, आलोचना-28, कसीदा-3, नात-2, बंद-4,भक्ति रुबाइ-1, माहिया-2, देल जा चुकल अछि। जतेक गजलकार अ.आ केर माध्यमें आएल छथि हुनका सभ द्वारा रचित गजलक संख्या जोड़ल जाए तँ लगभग 3000 गजलक संख्या पहुँचत।
अनचिन्हार आखरक एही काज सभकेँ देखैत मैथिली गजलक पहिल अरूजी गजेन्द्र ठाकुर 2008क बाद सँ लऽ कऽ वर्तमान कालखंडकेँ "अनचिन्हार युग" केर नाम देलाह (1905सँ लऽ कऽ 2007 धरिक कालखंडकेँ गजेन्द्रजी आधुनिक मैथिलीक पहिल गजलकार जीवन झाजीक नामपर "जीवन युग" नाम देलाह)।

मैथिली गजलमे विदेह केर योगदान
विदेह इंटरनेटक प्रसिद्ध मैथिली पत्रिका अछि जे कि गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा संचालित अछि आ हरेक मासक 1 आ 15 तारीखकेँ प्रकाशित होइत अछि। एकरा एहि लिंकपर देखल जा सकैए http://videha.co.in/ विदेहक किछु एहन काज जै बिना आधुनिक व्याकरणयुक्त मैथिली गजलक उत्थान सम्भव नै छल--
1) विदेहक 21म अंक (1 नवम्बर 2008)मे राजेन्द्र विमल जीक 2 टा गजल अछि। राम भरोस कापड़ि भ्रमर आ रोशन जनकपुरी जीक 11 टा गजल अछि। संगे-संग धीरेन्द्र प्रेमर्षि जीक 1 टा आलेख मैथिलीमे

गजल आ एकर संरचना। अछि संगे-संग ऐ आलेखक संग 1 टा गजल सेहो अछि प्रेमर्षि जीक। विदेहक ऐ अंकमे कतहुँ ई नै फड़िछाएल अछि जे ई गजल विशेषांक थिक मुदा विदेहक ऐसँ पहिनुक अंक सभमे गजलक मादें हम कोनो तेहन विस्तार नै पबै छी तँए हम एही अंककेँ विदेहक गजल विशेषांक मानलहुँ अछि।

2) विदेहक अंक 96 (15 दिसम्बर 2011)मे मुन्नाजी द्वारा गजल पर पहिल परिचर्चा भेल। ऐ परिचर्चाक शीर्षक छल मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)। ऐमे भाग लेलथि सियाराम झा सरस, गंगेश गुंजन, प्रेमचंद पंकज, शेफालिका वर्मा, मिहिर झा ओमप्रकाश झा, आशीष अनचिन्हार आ गजेन्द्र ठाकुर भाग लेलथि। ऐकेँ अतिरिक्त राजेन्द्र विमल, मंजर सुलेमान ऐ दूनू गोटाक पूर्वप्रकाशित लेखक भाग, धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक पूर्व प्रकाशित लेख) सेहो अछि।

3) विदेहक अंक 111 (1/8/2012) जे की बाल गजल विशेषांक अछि जाहिमे कुल 16 टा गजलकारक कुल 93 टा बाल गजल आएल।

4) विदेहक 15 मार्च 2013 बला 126म अंक भक्ति गजल विशेषांक छै।

5) 15 नवम्बर 2013केँ विदेहक 142म अंक "गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा" विशेषांक छल।

एहि सभहँक अलावे विदेह समय-समयपर विभिन्न विधाक गोष्ठी करबैत रहल अछि जाहिमसँ एकटा गजल सेहो अछि।

आधुनिक व्याकरणयुक्त मैथिली गजलक आलोचना

आधुनिक व्याकरणयुक्त गजल आलोचनाक बात करी तँ सभसँ पहिने रामदेव झा जी द्वारा लिखल ओ रचना पत्रिकाक जून 1984मे प्रकाशित ओहि लेख केर चर्चा करए पड़त जकर शीर्षक "मैथिलीमे गजल" छल। हमरा जनैत ई लेख ओहि समयक हिसाबें मैथिली गजल आलोचनाक सभ मापडंद पूरा करैत अछि (वर्तमान समयमे रामदेव झाक जीक पुत्र सभ एही आलेखसँ वर्तमान गजलकेँ मापै छथि आ ई हुनकर सीमा छनि। ईहो कहब उचित जे वर्तमान समयक हिसाबें ओ आलेख औसत स्तरक अछि मुदा एही कारणसँ एकर महत्व कम नै भऽ जेतै)। ओना ई उल्लेखनीय जे ईहो आलेख गजलक विधानकेँ ओझरा कऽ राखि देने अछि कारण एहि लेखमे गजलक बहरकेँ मात्रिक जकाँ मानल गेल छै जे कि वस्तुतः लेखक महोदय केर सीमा छनि। वर्णवृत छंदमे हरेक पाँतिक मात्राक जोड़ एकै अबै छै आ मात्रिक छंदमे सहो। हमरा जनैत रामदेव झा जी एहीठाम भ्रममे फँसि गेलाह। वर्णवृतमे लघु-गुरू केर नियत स्थान होइत छै मुदा मात्रिक छंदमे लघुक स्थानपर दीर्घ सेहो आबि सकैए आ दीर्घक स्थानपर लघु सेहो। मुदा गजलक बहर वर्णवृत छै। तथापि कमसँ कम ओहि समयमे ई कहए बला कियो सेहो भेलै जे गजलमे विधान होइत छै आ सएह एहि आलेखक पहिल विशेषता अछि। एहि आलेखक दोसर विशेषता ई जे रामदेव झाजी प्राचीन मैथिली गजलकार सभहँक नाम देने छथि जे कि सभ गजलक इतिहासकार ओ पाठक लेल उपयोगी अछि। एहि आलेखक तेसर विशेषता अछि जे रामदेव झाजी स्पष्ट स्वरमे ओहि समयक बहुत रास कथित क्रांतिकारी गजलकार सभहँक गजलकेँ खारिज करै छथि जे कि ओहि समयक हिसाबसँ बड़का विस्फोट छल। ई आलेख ततेक प्रभावकारी भेल जे ओ समयक बिना व्याकरण बला गजलकार सभ छिलमिला गेलाह आ एहि आलेखक विरोधमे विभिन्न वक्तव्य सभ देबए लगलाह। उदाहरण लेल सियाराम झा सरस, तारानंद वियोगी, रमेश ओ देवशंकर नवीनजीक संपादनमे प्रकाशित साझी गजल संकलन "लोकवेद आ लालकिला" (वर्ष 1990) केर कतिपय लेख

सभ देखल जा सकैए जाहिमे रामदेव झाजी ओ हुनक स्थापनाकेँ जमि कऽ आरोपित कएल गेल अछि। ओही संकलनमे देवशंकर नवीन अपन आलेख "मैथिली गजलःस्वरूप आ संभावना"मे लिखै छथि जे "...........पुनः डा. रामदेव झाक आलेख आएल। एहि निबन्ध मे दू टा बात अनर्गल ई भेल जे गजलक पंक्ति लेल छंद जकाँ मात्रा निर्धारित करए लगलाह आ किछु एहेन व्यक्तिक नाम मैथिली गजल मे जोड़ि देलनि जे कहियो गजल नै लिखलनि"

आन लेख सभमे एहने बात सभ आन आन तरीकासँ कहल गेल अछि। रामदेव झाजीक आलेखक बाद एहन आलेख नै आएल जाहिमे गजलकेँ व्याकरण दृष्टिसँ देखल गेल हो कारण ताहि समयक गजलपर कथित क्रांतिकारी गजलकार सभहँक कब्जा भऽ गेल छल। कोनो विधा लेल आलोचना प्राण होइत छै तँइ "अनचिन्हार आखर" अपन शुरूआतेसँ आन काजक अतिरिक्त गजल आलोचनापर सेहो ध्यान केंद्रित केलक आ मैथिली गजलक अपन आलोचक सभकेँ चिह्नित कऽ बेसी आलोचना लिखबेलक। आ एही कारणसँ मैथिली गजल आब ओहन आलोचक सभसँ मुक्त अछि जे कि मूलतः साहित्य केर आन विधाक आलोचक छथि आ कहियो काल गजलक आलोचना कऽ गजलपर एहसान करै छथि। ई पाँति लिखैत हमरा गर्व अछि जे मैथिली गजलकेँ आब छह-सात टासँ बेसी अपन आलोचक छै। अनचिन्हार आखर जे-जे गजल आलोचना लिखबा कऽ प्रकाशित करबेलक तकर विवरण एना अछि----

1) गजलक साक्ष्य (तारानंद वियोगी जीक गजल संग्रह केर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल गेल आलोचना)
2) बहुरुपिया रचनामे (अरविन्द ठकुर जीक गजल संग्रह केर ओमप्रकाश जी द्वारा कएल गेल आलोचना)
3) घोघ उठबैत गजल (विभूति आनंद जीक गजल संग्रह केर ओम प्रकाश जी द्वारा कएल गेल आलोचना)
4) विदेहक 103म अंकमे प्रकाशित प्रेमचंद पंकजक दूटा गजलक समीक्षा जे की ओमप्रकाश जी केने छथि
5) मुन्नाजीक गजल संग्रह "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"- समीक्षक गजेन्द्र ठाकुर
6) मैथिली गजल आ अभट्टाकारी
7) अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल (घर-बाहर पत्रिकाक अप्रैल-जून 2012 अंकमे प्रकाशित गजलक समीक्षा)
8) मैथिली बाल गजलक अवधारणा
9) कतिआएल आखर (मुन्ना जीक गजल संग्रह केर अमित मिश्र जी द्वारा कएल गेल आलोचना)
10) गजलक लेल (विजयनाथ झा जीक गजल ओ गीत संग्रह- अहीँक लेल के ओमप्रकाश जी द्वारा कएल समीक्षा)
11) भोथ हथियार (श्री सुरेन्द्र नाथ जीक गजल संग्रह केर ओमप्रकाश जी द्वारा कएल गेल आलोचना)
12) पहरा अधपहरा (बाबा बैद्यानथ जीक गजल संग्रह केर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल गेल आलोचना)
13) गजलक लहास (स्व. कलानन्द भट्टजीक गजलसंग्रह केरजगदानन्द झा मनु द्वारा कएल गेल आलोचना)
14) सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त (राजेन्द्र विमल जीक गजल संग्रहक आशीष अनचिन्हार कएल गेल आलोचना)
15) बहुत किछु बुझबैए: कियो बूझि ने सकल हमरा (ओमप्रकाशजीक गजल संग्रहपर चंदन कुमार झाजीक आलोचना)
16) प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल (सियाराम झा सरसजीक गजल संग्रहपर जगदीश चंद्र ठाकुर अनिलजीक आलोचना)

17) अरविन्दजीक आजाद गजल (अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रहपर जगदीश चंद्र ठाकुर अनिलजीक आलोचना)
18) छद्म गजल (गंगेश गुंजनजीक गजल सन किछुपर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल आलोचना)
19) कलंकित चान (राम भरोस कापड़ि भ्रमरजीक गजल संग्रहक आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल आलोचना)
20) मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग (गजेन्द्र ठाकुरजीक गजल संग्रह "धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ" केर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल आलोचना)
21) चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (रमेशजीक गजल संग्रह "नागफेनी" केर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल आलोचना)
22) नवगछुलीक प्रांजल सरस रसाल: नव अंशु (अमित मिश्र केर गजल संग्रह "नव-अंशु" केर शिव कुमार झा"टिल्लू" द्वारा कएल गेल समीक्षा)
23) सियाराम जा सरस जीक गजल संग्रह "शोणिताएल पैरक निशान"पर कुंदन कुमार कर्णजीक टिप्पणी
24) श्री जगदीश चन्द ठाकुर ऽअनिलऽ जीक लिखल गजल संग्रह "गजल गंगा" केर जगदानंद झा"मनु" द्वारा कएल समीक्षा
25) मैथिली गजलक संसारमे अनचिन्हार आखर (आशीष अनचिन्हारक गजल संग्रहक जगदीश चंद्र ठाकुर अनिलजी द्वारा कएल आलोचना)
26) थोड़े माटि बेसी पानि (सियाराम झा सरसजीक गजल संग्रहपर कुंदन कुमार कर्णजीक आलोचना)

आधुनिक व्याकरणयुक्त मैथिली गजलक किछु उदाहरण

एहि ठाम आब हम किछु शेरक उादहरण देब आ एहिमे हम अरबी बहर जे कि गजलक मूल बहर अछि आ सरल वार्णिक बहर दूनूमे लिखल शेर सभ प्रस्तुत करब। हम उदहारणमे सभ विचार बला शेर राखब जाहिसँ पाठक सहजहिं बुझता जे बहर-व्याकरण गजलक विचारमे बाधक नै होइत छै। गजलक पहिल पाँतिमे जे मात्राक्रम रहै छै तकर ओ पूरा गजलमे पालन करब छंद वा बहरक निर्वाह केनाइ भेलै। ऐठाम हम स्पष्ट करी जे मैथिलीक आधुनिक व्याकरणयुक्त गजलकारक संख्या बहुत बेसी अछि मुदा हम एहिठाम मात्र ओतबे गजलकारक शेर लेलहुँ अछि जाहि हमर उद्येश्य पूरा भऽ जाए (उदाहरणमे आएल शेर सभ एकौ गजलक भऽ सकैए आ अलग अलग गजलक सेहो। संपादक महोदयसँ आग्रह जे उदाहरणमे देलग गेल शेर सभहँक वर्तनीकेँ यथावत् राखथि)।--

पं जीवन झाजीक एकटा गजलमे वर्णित विरहक नीक चित्रण देखू–

अनंङ्ग सन्ताप सौं जरै छी अहाँक चिन्ता जतै करै छी
सखीक लाजे ततै मरै छी जतै कही वा जतै कहाबी

एहि शेरक मात्रक्रम 12+122+12+122+12+122+12+122 अछि आ पूरा गजलमे एकर प्रयोग भेल अछि। झाजीक दोसर गजलक एकटा आर विरहपरक शेर देखू–

अहाँ सों भेंट जहिआ भेल तेखन सों विकल हम छी
उठैत अन्धार होइए काज सब करबामे अक्षम छी

एहि शेरक मात्राक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि आ पूरा गजलमे एकर प्रयोग भेल अछि। उपरक एहि तीन टा उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे पं. जीवन झाजी मैथिली गजल आ गजलक व्याकरणक बीच नीक ताल-मेल रखने छलाह। फेर हुनक तेसर शेरक एकटा आरो शेर देखू जे कि प्रेममे पड़ल नायक-नायिका मनोभाव अछि--

पड़ैए बूझि किछु ने ध्यानमे हम भेल पागल छी
चलै छी ठाढ़ छी बैसल छी सूतल छी कि जागल छी

एहि शेरक मात्राक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि आ पूरा गजलमे एकर प्रयोग भेल अछि। कविवर सीताराम झाजीक किछु शेरक उदाहरण देखू–

हम की मनाउ चैती सतुआनि जूड़शीतल
भै गेल माघ मासहि धधकैत घूड़तीतल'

मतलाक छंद अछि 2212+ 122+2212+ 122 आब एही गजलक दोसर शेर मिला लिअ-

अछि देशमे दुपाटी कङरेस ओ किसानक
हम माँझमे पड़ल छी बनि कै बिलाड़ि तीतल

पहिल शेर आइयो ओतबे प्रासंगिक अछि जते पहिले छल। आइयो नव साल गरीबक लेल नै होइ छै। दोसर शेरकेँ नीक जकाँ पढ़ू आइसँ साठि-सत्तर साल पहिलुक राजनीतिक चित्र आँखि लग आबि जाएत। स्पष्ट अछि जे बिना व्याकरण तोड़ने कविवरजी प्रगतिशील भावक गजल लिखला जे अजुको समयमे ओतबे प्रासंगिक अछि जतेक की पहिने छल। जे ई कहै छथि जे बिना व्याकरण तोड़ने प्रगतिशील गजल नै लिखल जा सकैए हुनका सभकेँ ई उदाहरण देखबाक चाही। काशीकान्त मिश्र "मधुप" जीक दूटा शेर देखल जाए–

मिथिलाक पूर्व गौरव नहि ध्यान टा धरै छी
सुनि मैथिली सुभाषा बिनु आगियें जड़ै छी

सूगो जहाँक दर्शन-सुनबैत छल तहीँ ठाँ
हा आइ "आइ गो" टा पढ़ि उच्चता करै छी

एहि गजलमे 2212-122-2212-122 मात्राक्रम अछि जे कि गजलक हरेक शेरमे पालन कएल गेल अछि। देखू मधुपजी भिन्न स्वर लऽ कऽ आएल छथि मुदा बिना व्याकरण तोड़ने। योगानंद हीराजीक गजलक दू टा शेर–

मोनमे अछि सवाल बाजू की
छल कपट केर हाल बाजू की
मतलाक दूनू पाँतिमे 2122-12-1222 अछि आ दोसर शेर देखू-

छोट सन चीज कीनि ने पाबी
बाल बोधक सवाल बाजू की
हीराजी दोसर गजलक दू टा आर शेर देखू–

शूल सन बात ई
संसदे जेल अछि

आब हीरा कहै
जौहरी खेल अछि
एहि गजलक हरेक शेरमे सभ पाँतिमे 2122+12 मात्राक्रम अछि। आब अहीं सभ कहू जे हीराजीक गजलमे समकालीनता, प्रगतिशीलता आदि छै कि नै। पहिल शेरमे शाइर वर्तमान जीवनमे पसरल अजरकताकेँ देखा रहल छथि तँ दोसर शेरमे अभावक कारण बच्चा धरिकेँ कोनो चीज नै दऽ पेबाक विवशता छै। तेसर शेर आजुक विडंबना अछि। संसद वएह छै जे पहिने छलै मुदा सांसद सभ आब अपराधी वर्गक अछि तँइ शाइरकेँ ओ जेल बुझा रहल छनि। चारिम शेरमे शाइर प्रायोजित प्रसंशाक खेलकेँ उजागर केने छथि। ई खेल साहित्य कि आन कोनो क्षेत्रमे भऽ सकैए। जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल" जीक गजलक दू टा शेर–

टूटल छी तँइ गजल कहै छी
भूखल छी तँइ गजल कहै छी
मतलाक दूनू पाँतिमे 2222 +12 + 122 छंद अछि आ एकर दोसर शेर देखू–

ऑफिस सबहक कथा कहू की

लूटल छी तँइ गजल कहै छी
भूख केर कथा सेहो व्याकरणयुक्त गजलमे। सरकारी आफिसक कथा सभ जनैत छी। अनिलजी एहू कथाकेँ व्याकरणक संग उपस्थित केने छथि। समकालीन स्वरे नै कालातीत स्वरक संग विजयनाथ झा जीक ऐ गजलक दूटा शेर देखू–

चिदाकाश मधुमास मधुमक्त मति मन
विभव अछि विविधता उदय ह्रास अपने
मतलाक छंद अछि 122-122-122-122 आब दोसर शेरक दूनू पाँतिकेँ जाँच कऽ लिअ संगे संग भाव केर सेहो-

खसल नीर निर्माल्य निधि नोर जानल
सकल स्रोत श्रुति विन्दु विन्यास अपने
जँ आदि शंकराचर्य केर मातृभाषा मैथिली रहितनि तँ शायद विजयनाथेजी सन लिखने रहितथि ओ। राजीव रंजन मिश्रजीक ई गजल देखू–

जिनगी खेल तमाशा टा
आसक संग निराशा टा

के जानल गऽ कखन केहन
दैबक हाथ तऽ पासा टा

उपरक दूटा शेरक मात्राक्रम 2221 1222 अछि आ एहि गजल सभ शेरमे एकरे पालन कएल गेल अछि। जीवनक गूढ़ बातकेँ सरल शब्दमे कहल गेल अछि सेहो व्याकरणक संग। आस आ निराश दूनू जिवनक भाग छै। दोसर शेरमे भग्य केखन पलटत तकर वर्ण अछि। अहीं कहूँ विचार कतए बन्हा गेल छै व्याकरणसँ। ओमप्रकाशजीक ई दूटा शेर देखू–

कखनो सुखक भोर लिखै छी
कखनो खसल नोर लिखै छी

मिठगर रसक बात कहै छी
संगे करू झोर लिखै छी
2-2-1-2, 2-1, 1-2-2 मात्राक्रम प्रत्येक पाँतिमे अछि। शाइर अपन निजी जीवनक बातकेँ बहर-व्याकरणमे कहलथि आ नीक जकाँ कहलथि अछि। कोनो शाइरकेँ जीवनमे भऽ रहल सभ बातकेँ लिखबाक चाही मुदा अफसोच जे लोक किछु क्षणिक लाभ लेल ने सच बाजए वाहैए आ ने सूनए चाहैए। मुदा शाइर अपन मीठ-तीत सभ बात व्याकरणमे कहि रहल छथि। कहाँ कोनो दिक्कत छै। अमित मिश्रक दूटा शेर देखल जाए–

जाहि घरमे भूखल दीन अहाँ देखने होयब
हाड़ मांसक बनल मशीन अहाँ देखने होयब

एक पाइक लेल परान अपन बेच दै छै ओ
गाम घरमे एहन दीन अहाँ देखने होयब
एकर मात्राक्रम 2122-2112-1122-1222 अछि। एहि गजलमे प्रगतिशीलता सेहो अछि आ बहर-व्याकरण सेहो। एखनो कतहुँ-कतहुँसँ समाद आबि जाइए से फल्लाँ किछु पाइ लेल अपन बच्चा बेचि लेलक वा अपन बच्चा संग जान दऽ देलक। ई सभ बात गजलमे अमितजी व्याकरणक संग रखने छथि। प्रदीप पुष्प केर एकटा गजल देखल जाए आ समकालीनता, व्यंग्य आ व्याकरण तीनू एकै संग देखू---

गमकैत घाम बला लोक
चमकैत चाम बला लोक

भाषण आमो पर दै छै
थुर्री लताम बला लोक

बाँटै दरद सगरो खूब
ई झंडु बाम बला लोक

करतै उद्धार मिथिलाक
दिल्ली असाम बला लोक

मौंसो केर हाट लगबै
गाँधीक गाम बला लोक
222-222-2 सब पाँतिमे मात्राक्रम अछि। प्रदीपजीक ई गजल समग्र रूपें ओहन गजलकार सब लेल अछि जे कि अनेरे गजलक व्याकरणकेँ खराप मानै छथि। प्रदीपजी जखन दोसर शेरमे "थुर्री लताम बला लोक" कहै छथि तँ व्यंग्यक पराकाष्ठा भऽ जाइत अछि। अंतिम शेरमे प्रयोग भेल "गाँधीक गाम बला लोक" पाँति ओहन लोकक नकाब उतारैत अछि जिनकर जीवनमे भीतर किछु छनि आ बाहर किछु। राम कुमार मिश्रजीक टूटा शेर देखू–

जाति- धर्मक जुन्नामें अँटियाइते रहलहुँ
छूत-अछुतक अदहनमें उधियाइते रहलहुँ

पेट कोना जड़लै पतियौलक कियो कहिया
झूठ-साँचक भाषण धरि पतियाइते रहलहुँ

सभ पाँतिमे मात्राक्रम 2122+222+2212+22 । जाति-धर्म एखनो अपना समाज लेल भयावह सपना अछि। आ शाइर रामकुमार मिश्रजी व्याकरणक संग एकर वर्णन केने छथि। दोसर शेरमे ओ झूठ भाषणसँ जनता कोना तृप्त होइ छै से कहने छथि। अहीं सभ कहू की व्याकरणसँ भाव बन्हा गेलै? दू टा शेर कुंदन कुमार कर्णजीक देखू जाहिमेसँ पहिल शेर निश्चिते रूपें उपनिषद् केर मोन पाड़ि दैए --
भाव शुद्ध हो त मोनमे भय कथीके
छोड़ि मृत्यु जीव लेल निश्चय कथीके

जाति धर्मके बढल अहंकार कुन्दन
रहि विभेद ई समाज सुखमय कथीके
एकर मात्राक्रम 212-1212-122-122 अछि। भय कि डर ओकर होइ छै जे गलत काज करै छै। कुंदनजीक पहिल शेर एकरे उद्घाटित करैए। दोसर शेरमे शाइरक विश्वास छनि जे जा धरि जाति भेद ने हटत ता धरि समाज सुखमय नै भऽ सकैए। प्रसंगवश कही जे कुंदन कुमार कर्ण नेपालमे मैथिली ओहन पहिल गजलकार छथि जे कि अरबी बहरमे गजल लिखै छथि। आगू बढ़बासँ पहिने सरल वार्णिक बहर बला गजलक किछु उदाहरण देखि ली। मुन्नाजीक टूटा शेर देखू-

केखन धोखा देत ई समान बजरुआ गारंटी नै
ई केखनो हँसाएत केखनो देत कना गारंटी नै

सरकार बनाबै एहन योजना गरीबक लेल
केखन जेतैक गरीबक अस्तित्व मेटा गारंटी नै
(19 वर्ण हरेक पाँतिमे।) मुन्नाजी आजुक बजारवादसँ उपजल कमगुणवत्ता बला समानक हाल अपन पहिल शेरमे कहलथि। दोसर शेरमे ओ सरकारी योजनका मूल उद्येश्यपर व्यंग्य कऽ रहल छथि। आब देखू सुमित मिश्र गुंजनजीक दूटा शेर–

नै कहू कखनो पहाड़ छै जिनगी
दैबक देलहा उधार छै जिनगी

भारी छै लोकक मनोरथक भार
कनहा लगौने कहार छै जिनगी
(वर्ण-13) गुंजनजीक पहिल सेर आसासँ भरल अछि। ओ जीवनकेँ भारत मानबाक ओकालति नै करै छथि। दोसर शेरमे ओ लोकक अनेरेक सेहंताक संकेत देने छथि।
सरल वार्णिक बहरक उपरका उदाहरणक अतिरिक्त विजय कुमार ठाकुर, नारायण मधुशाला, रामसोगारथ यादव , विद्यानंद बेदर्दी आदि सभ सेहो सरल वार्णिक बहरमे गजल लिखबाक प्रयास कऽ रहल छथि। एही क्रममे मैथिल प्रशांतजीक नाम सेहो जोड़ जा सकैए। मुदा चिंता ई जे ई सभ विभिन्न विधामे सेहो लिखैत छथि तँइ हिनकर सभहँक गजलक प्रभाव केर आकलन एखन तात्काल नै भऽ सकैए। दोसर चिंता ईहो जे व्याकरणक मूल भाव रचना सुंदर करब छै केकरो आलोचनामे स्थान भेटबाक कि पुरस्कार प्राप्ति कि आन कोनो प्रयोजन नै। तँइ बहुत रास गजलकार एहनो भऽ सकै छथि जे कोनो अभीष्ट पूरा नै भेलापर व्याकरणक पालन छोड़ि सकै छथि। मुदा फेर दोहरा दी जे "व्याकरणक मूल भाव रचना सुंदर करब छै आन कोनो प्रयोजन सिद्ध करब नै"।

मैथिली बाल गजल

मैथिली बाल गजल शब्दक निरूपण हमरा द्वारा भेल छल मुदा एहि विषय-वस्तुक गजल कविवर सीताराम झा पहिने लीखि गेल छथि। तँइ ई मानब उचित जे बाल गजलक अस्तित्व मैथिलीमे पहिनेसँ छल मुदा ओकर नामाकरण अनचिन्हार आखर कालखंडमे भेलै। उपर जतेक गजलकार सभहँक उदाहरण देने छी वएह सभ बाल गजल सेहो लिखने छथि तँइ बेसी नै तँ दू-चारि टा बाल गजलक शेर राखि रहल छी। पहिने कविवर सीताराम झाजीक ई बाल गजल देखू–

बाउजी जागू ठारर भरै छी कियै
व्यर्थ सूतल कि बैसल सड़ै छी कियै
2122+ 122+ 122+ 12 मात्राक्रम अछि। आब कुंदन कुमार कर्णजीक बाल गजल देखू–

गामक बूढ हमर नानी
छै ममतासँ भरल खानी
2221-1222 मात्राक्रम अछि। आब अमित मिश्रजीक देखू–

हाट चल हाथकँ पकड़ि भैया हमर
भीड़मे जाउँ नै बिछड़ि भैया हमर
212-212-212-212 मात्राक्रम अछि। आब पंकज चौधरी नवलश्रीजीक देखू–

देख भेलै भोर भैया
आब आलस छोड़ भैया

दाय-बाबा माय-बाबू
लाग सभके गोर भैया
2122+2122 मात्राक्रम अछि।

मैथिली भक्ति गजल

मैथिली भक्ति गजल शब्दक निरूपण अमित मिश्र द्वारा भेल छल मुदा एहि विषय-वस्तुक गजल कविवर सीताराम झा पहिने लीखि गेल छथि। तँइ ई मानब उचित जे बाल गजलक अस्तित्व मैथिलीमे पहिनेसँ छल मुदा ओकर नामाकरण अनचिन्हार आखरक बाद भेलै। उपर जतेक गजलकार सभहँक उदाहरण देने छी वएह सभ बाल गजल सेहो लिखने छथि तँइ बेसी नै तँ दू-चारि टा भक्ति गजल क शेर राखि रहल छी, पहिने कविवर सीताराम झाजीक–

जगत मे थाकि जगदम्बे अहिंक पथ आबि बैसल छी
हमर क्यौ ने सुनैये हम सभक गुन गाबि बैसल छी
1222+1222+1222+1222 मात्राक्रम मने बहरे हजज। आब जगदानंद झा मनुजीक भक्ति गजल देखू–

हम्मर अँगना मैया एली
गमकै चहुँदिस अड़हुल बेली

धन हम छी धन हम्मर अँगना
मैया जतए दर्शन देली
22-22-22-22 मात्राक्रम अछि। आब कुंदन कुमार कर्णजीक भक्ति गजल देखू–

हे शारदे दिअ एहन वरदान
हो जैसँ जिनगी हमरो कल्याण
2212-222-221 मात्राक्रम अछि। आब अमित मिश्रजीक देखू–

सजल दरबार छै जननी
भगत भरमार छै जननी

किओ नै हमर छै संगी
खसल आधार छै जननी
1222-1222 मात्राक्रम अछि।
उपरक एहि उदाहरण सभसँ ई स्पष्ट भऽ गेल हएत जे व्याकरण केखनो भाव वा विचार लेल बाधक नै होइ छै। हँ, हजारक हजार रचनामे किछु एहन रचना बुझाइ छै जाहिमे व्याकरणक कारण भाव बाधित भेलैए मुदा ई तँ रचनाकारक सीमा सेहो भऽ सकै छै। गजल, भक्ति गजल ओ बाल गजलक अतिरिक्ति मैथिलीमे व्याकरणयुक्त रुबाइ, बाल रुबाइ, भक्ति रुबाइ, कता, हजल, नात आदि विधा सेहो लिखल गेल अछि आ ओकर उदाहरण प्रचुर मात्रामे अछि आ अहाँ सभ एकरा अनचिन्हार आखरपर नीक जकाँ देखि सकै छी।
बिना व्याकरण बला मैथिली गजलक इतिहास

लगभग 1970-75सँ एखन धरि बहुतो गजलकार ओहन गजल लिखलथि जाहिमे गजलक नियमक पालन नै भेल अछि। ई कहब बेसी उचित जे ओहि धाराक गजलकार सभ नियम पालन करहे नै चाहैत छथि। ओ हुनकर अवधारणा हेतनि। एहिठाम ओहि धाराक किछु प्रतिनिधि गजलकार सभहँक नाम देल जा रहल अछि --

1) रवीन्द्र नाथ ठाकुर, 2) मायानंद मिश्र, 3) कलानंद भट्ट, 4) सियाराम झा "सरस", 5) अरविन्द ठाकुर, 6) सुधांशु शेखर चौधरी, 7) धीरेन्द्र प्रेमर्षि, 8) बाबा बैद्यनाथ, 9) विभूति आनन्द, 10) तारानन्द वियोगी, 11) रमेश, 12) राजेन्द्र विमल... आदि।

उपरमे देल प्रतिनिधि गजलकारक अतिरिक्त बहुतों एहन शाइर सभ छथि जे की छिटपुट आजाद गजल लिखला आ अन्य विधामे महारत हासिल केलाह। एहि सूचीमे बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन, रमानंद रेणु, फूल चंद्र झा प्रवीण, वैकुण्ठ विदेह, शीतल झा, प्रेमचंद्र पंकज, प.नित्यानंद मिश्र, शारदानंद दास परिमल, केदारनाथ लाभ, तारानंद झा तरुण, रमाकांत राय रमा, महेन्द्र कुमार मिश्र, विनोदानंद, दिलीप कुमार झा दिवाना, वैद्यनाथ मिश्र बैजू, विलट पासवान विहंगम, सारस्वत, कर्ण संजय, अनिल चंद्र ठाकुर, श्याम सुन्दर शशि, अशोक दत्त, कमल मोहन चुन्नू, रोशन जनकपुरी, जियाउर रहमान जाफरी, धर्मेन्द्र विहवल्, सुरेन्द्र प्रभात, अतुल कुमार मिश्र, रमेश रंजन, कन्हैया लाल मिश्र, गोविन्द दहाल, चंद्रेश, चंद्रमणि झा, फजलुर रहमान हाशमी, रामलोचन ठाकुर, विनयविश्व बंधु, रामदेव भावुक, सोमदेव, रामचैतन्य धीरज, महेन्द्र, केदारनाथ लाभ, गोपाल जी झा गोपेश, नंद कुमार मिश्र, देवशंकर नवीन,मार्कण्डेय प्रवासी,अमरेन्द्र यादव, नरेन्द्र आदि। बहुत रास नाम धीरेन्द्र प्रेमर्षि जी द्वारा संपादित गजल विशेषांक पर आधारित अछि। किछु दिन धरि गीतल नामसँ सेहो प्रयोग भेल मुदा हम एकरा अजादे गजल मानै छी आ वस्तुतः ओ अजादे गजल छै। आ तँइ निच्चा हम ओकरो समेटने छी एहिठाम।

बिना व्याकरण बला मैथिली गजलमे भेल काज

बिना व्याकरण बला मैथिली गजलमे एखन धरि कोनो एहन काज नै भेल अछि तँइ एहि आधारपर एकर मूल्याकंन करब असंभव तँ नै मुदा बहुत कठिन अछि। एहि धाराक शाइर सभ बस अपन-अपन गजलक पोथीकेँ प्रकाशित करबा लेबाकेँ काज मानि लेने छथि। आगूसँ हम "बिना व्याकरण बला मैथिली गजल" लेल "अजाद गजल" शब्दक प्रयोग करब। अजाद गजलक इतिहासमे जे पहिल जगजियार काज देखाइए ओ अछि एहि1990मे सियाराम झा सरस, तारानंद वियोगी, रमेश आ देवशंकर नवीनजी द्वारा संकलित ओ संपादित साझी गजल संग्रह "लोकवेद आ लालकिला" केर प्रकाशन। एहि संकलनमे कुल 12 टा गजलकारक 84 टा गजल अछि। भूमिका सभहँक अनुसारे ई संकलन प्रगतिशील गजलक संकलन अछि आ जाहिर अछि जे एहिमे सहभागी गजलकार सभ सेहो प्रगतिशील हेबे करता। बारहो गजलकारक नाम एना अछि कलानंद भट्ट, तारानंद वियोगी, डा.देवशंकर नवीन, नरेनद्र, डा. महेन्द्र, रमेश, रामचैतन्य धीरज, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, विभूति आनंद, सियाराम झा सरस, प्रो. सोमदेव। एहि संकलनक अलावे धीरेन्द्र प्रेमर्षिजी द्वारा संपादित पल्लव केर "गजल अंक" जे कि 2051 चैतमे मैथिली विकास मंच, माठमांडूक मासिक साहित्यिक प्रकाशन अंतर्गत प्रकाशित भेल (वर्ष-2, अंक-6, पूर्णांक-15) सेहो अजाद गजलक धारामे नीक काज अछि। जँ अंग्रेजी तारीखसँ बूझी तँ मार्च,1995 केर लगभगमे पल्लवक "गजल अंक" प्रकाशित भेल अछि (नेपालक तारीख बदलबामे जँ हमरासँ गलती भेल हो तँ ओकरा सुधारल जाए)। आगू बढ़बासँ पहिने

पल्लवक गजलक अंकक किछु बानगी देखि लिअ--एहि गजल विशेषांकमे कलानंद भट्ट, फूलचंद्र झा प्रवीण, रमानंद रेणु, सियाराम झा सरस, राजेन्द्र विमल, रामदेव झा, बैकुंठ विदेह, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, रमेश, शेफालिका वर्मा, शीतल झा, गोपाल झाजी गोपेश, प्रेमचंद्र पंकज, पं.नित्यानंद मिश्र, शारदानंद परिमल, रमाकांत राय रमा, महेन्द्रकुमार मिश्र, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, चंद्रेश, विनोदानंद, दिलिप कुमार झा दीवाना, वैद्यनाथ मिश्र बैजू, रोशन जनकपुरी, सारस्वत, कर्ण संजय, श्यामसुंदर शशि, अजित कुमार आजाद, ललन दास, धर्मेन्द्र विह्वल, सुरेन्द्र प्रभात, अतुल कुमार मिश्र, रमेश रंजन, कन्हैयालाल मिश्र, गोविन्द दहाल आदि 34 टा गजलकारक एक एकटा गजल अछि मने 34 टा गजलकारक 34 टा गजल अछि। एहि विशेषांकक संपादकीय अजादक गजलक हिसाबे अछि। ई पत्रिका कुल चारि पन्नाक छपैत छल आ ओहि हिसाबें चौंतीस टा गजल कोनो खराप संख्या नै छै।

नेपालसँ प्रकाशित पल्लवक "गजल अंक" आ भारतसँ प्रकाशित "लोकवेद आ लालकिला" दूनूक समयमे करीब 6-7 बर्खक अंतराल अछि (प्रकाशनसँ पहिनेक तैयारीकेँ सेहो देखैत)। दूनूक संपादको अलग छथि। दूनू काजक स्थान ओ परिस्थितियो अलग अछि मुदा ओहि के अछैत एकटा दुर्योग दूनूमे एक समान रूपसँ विद्यमान अछि। ई दुर्योग अछि ओहि अंक कि संकलनमे पुरान गजलकारकेँ स्थान नै देब। जँ दूनू संपादक चाहतथि तँ ओहि अंक कि संकलनमे पुरान गजलकारकेँ समेटि कऽ एकटा संपूर्ण चित्र आनि सकै छलाह मुदा पता नै कोन परिस्थिति कि तत्व छलै जे दूनू ठाम एहि काजमे बाधक बनल रहल। प्राचीन गजल बेसी अछिए नै तँइ ने बेसी पाइ लगबाक संभवाना छलै आ ने बेसी मेहनतिक जरूरति छलै। भऽ सकैए जे हिनका सभ लेल ई प्रश्न महत्वपूर्ण नै हो मुदा एकटा गजल अध्येताक रूपमे हमरा सभसँ बेसी इएह बात खटकल अछि। किछु एहन तत्व तँ जरूर रहल हेतै जाहिसँ प्रभावित भऽ कऽ दूनू संपादकक एकै रंगक सोच रखने छलाह। खएर सूचना दी जे वर्तमान समयमे हमरा ओ गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा संपादित पोथी "मैथिलीक प्रतिनिधि गजलः1905सँ 2016 धरि" जे कि ई-भर्सन रूपमे प्रकाशित अछि ताहिमे उपरक दुर्योगकेँ दूर कऽ देल गेल अछि। एहि संकलनमे सभ प्राचीन गजलकारकेँ स्थान देल गेल अछि जाहिसँ मैथिली गजलक संपूर्ण छवि पाठक लग आबि जाइत छनि।

उपरक काजक अलावे एक-दू बर्ख पहिने मधुबनीमे सेहो अजाद गजलकार सभ द्वारा गजल कार्यशाला आयोजित भेल रहए मुदा ओकर समुचित तथ्य हमरा लग नै अछि तँइ ओहिपर हम किछु बजबासँ बाँचि रहल छी।

अजाद गजलक शाइर सभ काजमे नै ‘‘प्रयोग’’मे बेसी विश्वास राखै छथि आ तकर बानगी थिक "गीतल"। गीतल (जे कि वस्तुतः अजादे गजल अछि) केर जन्मदाता छथि मायानंद मिश्र। ओ अपन गीतल विधा केर पोथी "अवातंतर" केर भूमिकामे(पृष्ठ 6 पर) लिखै छथि-- "अवान्तरक आरम्भ अछि गीतलसँ। गीतं लातीति गीतलम्ऽ अर्थात गीत कें आनऽ बला भेल गीतल। किन्तु गीतल परम्परागत गीत नहि थिक, एहिमे एकटा सुर गजल केर सेहो लगैत अछि। गीतल गजल केर सब बंधन (सर्त) कें स्वीकार नहि करैत अछि। कइयो नहि सकैत अछि। भाषाक अपन-अपन विशेषता होइत अछि जे ओकर संस्कृतिक अनुरूपें निर्मित होइत अछि। हमर उद्येश्य अछि मिश्रणसँ एकटा नवीन प्रयोग। तैं गीतल ने गीते थिक, ने गजले थिक, गीतो थिक आ गजलो थिक। किन्तु गीति तत्वक प्रधानता अभीष्ट, तैं गीतल।" ई पोथी 1988मे मैथिली चेतना परिषद्, सहरसा द्वारा प्रकाशित भेल। उपरका उद्घोषणामे अहाँ सभ देखि सकै छिऐ जे कतेक दोखाह स्थापना अछि।

प्रयोग हएब नीक गप्प मुदा अपन कमजोरीकेँ भाषाक कमजोरी बना देब कतहुँसँ उचित नै आ हमरा जनैत मायानंद जीक ई बड़का अपराध छनि। जँ ओ अपन कमजोरीकेँ आँकैत गीतल केर आरम्भ करतथि तँ कोनो बेजाए गप्प नै मुदा मायाजी पाठककेँ भ्रमित करबाक प्रयास केलाह जे कि तात्काल सफल सेहो भेल। ई मोन राखब बेसी जरूरी जे 2011मे प्रकाशित कथित गजल संग्रह " बहुरुपिया प्रदेश मे " जे की अरविन्द ठाकुर द्वारा लिखित अछि ताहूमे ठीक इएह गप्पकेँ दोहराओल गेलैए। गीतल विधाक उद्घोषणापर सभसँ बेसी आपत्ति सियाराम झा सरसजीकेँ छनि जकरा ओ अपन पोथी "शोणिताएल पएरक निशान" केर भूमिकामे लिखलनि अछि आ एहीठाम अजाद गजल दू ठाम बँटि गेल। पहिल सियाराम झा सरस एवं अन्य जे कि गजलकेँ गजल मानै छलाह जाहिमे तारानंद वियोगी, रमेश, देवशंकर नवीन आदि छथि। दोसर गीतल जाहिमे मायानन्द, तारानन्द झा तरुण, विलट पासवान विहंगम, आदि एला वा छथि। ऐठाँ हम ई स्पष्ट करऽ चाहब जे नाम भने जे होइ मायानन्द जी बला गुट वा सरसजी बला गुट दूनू गुटमेसँ कोनो गोटा गजल नै लिखै छलाह कारण ओ व्याकरणहीन छल। आ व्याकरणहीन कथित गजलकेँ गजल नै गीतले टा कहल जा सकैए।

मैथिलीक अजाद गजलमे नै भेल काज

1) गजलक संख्या वृद्धि दिस धेआन नै देब-- गजलक संख्या वृद्धिसँ हमर मतलब अपनो लिखल गजल आ अनको लिखल गजल अछि। कथित क्रांतिकारी सभहँक विचार अछि जे कम्मे लिखू मुदा नीक लिखू। मुदा सवाल ओतत्हि रहि जाइ छै जे नीक रचना निर्धारण केना हो जखन कि लोक लग सीमित संख्यामे रचना रहै। हमरा हिसाबें ई भ्रांति अछि जे कम रचलासँ नीके होइत छै। हमर स्पष्ट विचार अछि जे रचना संख्या बढ़लासँ अपना भीतर प्रतियोगिता बढ़ै छै आ भविष्यमे नीक रचना लिखबाक संभावना बढ़ि जाइत छै। जाहि विधामे बेसी लिखाइत छै ओकर प्रचार-प्रसार ओ लोकप्रियता बेसी जल्दी होइत छै। मुदा अजाद गजलकार सभ एहि मर्मकेँ नै बुझि सकलाह। हमरा बुझाइए जे मैथिलीक अजाद गजलकार सभ प्रतियोगितासँ डेराइत छथि। हुनका बुझाइ छनि जे जँ कादचित् प्रतियोगितामे हारि गेलहुँ तँ हमर की हएत। मुदा हुनका सभकेँ बुझबाक चाही जे साहित्यमे जीत-हारि सन कोनो बात नै होइ छै।

2) गजलकारक संख्या वृद्धि दिस धेआन नै देब--- कोनो विधाक नियम टुटलासँ ओ विधा सरल बनि जाइत छै आ ओहि विधामे बहुत रास रचनाकार आबै छथि जेना कि कविता विधामे भेलै। तखन मैथिलीमे बिना नियम केर गजल रहितों ऐमे शाइरक कमी किएक रहल? मैथिलीक अजाद गजलकार सभ कते नव शाइरकेँ प्रोत्साहित केलथि। जबाब सुन्ना भेटत। मैथिलीक अजाद गजलकार सभ अपने लीखै छथि आ अपनेसँ शुरू आ अपनेपर खत्म। आखिर गजल विधामे नव शाइर अनबाक जिम्मा केकर छलै? ईहो कहल जा सकैए जे मैथिलीक अजाद गजलकार सभ जानि बूझि कऽ अपन वर्चस्व सुरक्षित रखबाक लेल नव शाइरकेँ प्रोत्साहित नै केलथि। हुनका सभ डर छनि जे कहीं हमरासँ बेसी ओकरे सभहँक नाम नै भऽ जाइ।

3) मैथिली गजलक आलोचना दिस धेआन नै देब-- जेना कि सभ जानै छी जे आलोचना कोनो विधा लेल प्राण होइत छै मुदा आश्चर्य जे मैथिलीक अजाद गजलकार सभ गजल-आलोचनाकेँ हेय दृष्टिसँ देखला। मैथिलीमे अजाद गजलक प्रतिनिधि गजलकार सियाराम झा सरस, तारानंद वियोगी, रमेश, देवशंकर नवीनजीक संपादनमे बर्ख 1990मे " लालकर्िला आ लोकवेद " नामक एकटा साझी गजल संग्रह आएल। एहि संग्रहमे गजलसँ पहिने तीनटा भाष्यकारक आमुख अछि। पहिल आमुख सरसजीक छन्हि आ ओ तकर शुरुआत एना करै छथि -- " समालोचना आ साहित्यिक इतिहास लेखनक क्षेत्रमे तकरे कलम भँजबाक चाही जकरा ओहि साहित्यिक

प्रत्येक सूक्ष्तम स्पंदनक अनुभूति होइ......."। अर्थात सरसजीकँ हिसाबें कोनो साहित्यिक विधाक आलोचना, समीक्षा, वा ओकर इतिहास लेखन वएह कए सकैए जे की ओहि विधामे रचनारत छथि। जँ हम एकर व्याख्या करी तँ ई नतीजा निकलैए जे गजल विधाक आलोचना वा समीक्षा वा ओकर इतिहास वएह लीखि सकै छथि जे की गजलकार होथि। मुदा हमरा आश्चर्य लगैए जे ने 1990सँ पहिले सरसजी ई काज केलाह आ ने 1990सँ 2008 धरि ई काज कऽ सकलाह (सरसेजी किए आनो सभ एहन काज नै कऽ सकलाह)। 2008कँ एहि दुआरे हम मानक बर्ख लेलहुँ जे कारण 2008मे हिनकर मने सरसजीक एखन धरिक अंतिम कथित गजल संग्रह "थोड़े आगि थोड़े पानि" एलन्हि मुदा ओहूमे ओ एहन काज नै कऽ सकलाह। ई हमरा हिसाबें कोनो गजलकारक सीमा भए सकैत छलै मुदा सरसजी फेर ओही आमुख के तेसर आ चारिम पृष्ठपर लिखै छथि" मैथिली साहित्यमे तँ बंगला जकाँ गीति-साहित्यिक एकटा सुदीर्घ परंपरा रहलैक अछि। गजल अही परंपराक नव्यतम विकास थिक, कोनो प्रतिबद्ध आलोचककँ से बुझऽ पड़तैक। हँ ई एकटा दीगर आ महत्वपूर्ण बात भए सकैछ जे मैथिलीक समकालीन आलोचकक पास एहि नव्यतम विधाक आलोचना हेतु कोनो मापदंडिके नहि छन्हि। नहि छन्हि तँ तकर जोगार करथु........" आब ई देखल जाए जे एकै आलेखमे कोना दू अलग अलग बात कहि रहल छथि सरसजी । आलेखक शुरुआतमे हुनक भावना छन्हि जे " जे आदमी गजल नै लीखै छथि से एकर समीक्षा वा इतिहास लेखन लेल अयोग्य छथि मुदा फेर ओही आलेखमे ओहन आलोचकसँ गजल लेल मापदंड चाहै छथि जे कहियो गजल नहि लिखला। भए सकैए जे सरसजी ई आरोप सरसजी अपन पूर्ववर्ती विवादास्पद गजलकार मायानंद मिश्र पर लगबथि होथि। जे की सरसजीक हरेक आलेखसँ स्पष्ट होइत अछि। मुदा ऐठाम हमरा सरसजीसँ एकटा प्रश्न जे जँ कोनो कारणवश माया जी ओ काज नै कए सकलाह वा जँ मायानंद जी ई कहिए देलखिन्ह मैथिलीमे गजल नै लिखल जा सकैए तँ ओकरा गलत करबा लेल ओ अपने (सरसजी) की केलखिन्ह। 2008 धरि मैथिलीमे 10-12 टा कथित गजल संग्रह आबि चुकल छल। मुदा अपने सरसजी कहाँ एकौटा कथित गजल संग्रह समीक्षा वा आलोचना केलखिन्ह। गजलक व्याकरण वा इतिहास लेखन तँ बहुत दूरक बात भए गेल। ऐ आलेखसँ दोसर बात इहो स्पष्ट अछि जे सरसजी कोनो समकालीन आलोचककँ गजलक समीक्षा लेल मापदंड देबा लेल तैयार नै छथि। जँ कदाचित् कनेकबो सरसजी आलोचक सभकँ मापदंड दितथिन तँ संभवतः 2008 धरि गजल क्षेत्रमे एहन अकाल नै रहितै।

आब हम आबी विदेहक अंक 96 पर जाहिमे श्री मुन्ना जी द्वारा गजल पर परिचर्चा करबाओल गेल छल। आन-आन प्रतिभागीक संग-संग प्रेमचंद पंकज नामक एकटा प्रतिभागी सेहो छथि। पंकजजी अपन आलेखमे आन बातक संग इहो लिखैत छथि -" कतिपय व्यक्ति एकटा राग अलापि रहल छथि जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ परम्परा रहितहु एकरा मान्यता नै भेटि रहल छैक। एहन बात प्रायः एहि कारणे उठैत अछि जे मैथिली गजलकँ कोनो मान्य समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछूत मानिकऽ एम्हर ताकब सेहो अपन मर्यादाक प्रतिकूल बूझैत छथि। एहि सम्बन्धमे हमर व्यक्तिगत विचार ई अछि, जे एकरा ओहने समालोचक-समीक्षक अछूत बुझैत छथि जिनकामे गजलक सूक्ष्मताकँ बुझबाक अवगतिक सर्वथा अभाव छनि। गजलक संरचना, मिजाज आदिकँ बुझबाक लेल हुनका लोकनिकँ स्वयं प्रयास करऽ पड़तनि, कोनो गजलकार बैसि कऽ भट्ठा नहि धरओतनि। हँ, एतबा निश्चय जे गजल धुड़झाड़ लिखल जा रहल अछि आ पसरि रहल अछि आ अपन सामर्थयक बल पर समीक्षक-समालोचक लोकनिकँ अपना दिस आकर्षित कइए कऽ छोड़त " अर्थात प्रेमचंद

जी सरसे जी जकाँ भट्ठा नै धरेबाक पक्षमे छथि। सरसजी 1990मे कहै छथि मुदा पंकजजी 2011केर अंतमे मतलब 22साल बाद। मतलब बर्ख बदलैत गेलै मुदा मानसिकता नै बदललै। ऐठाम हम ई जरुर कहए चाहब जे भट्ठा धराबए लेल जे ज्ञान आ इच्छा शक्ति होइ छै से बजारमे नै बिकाइत छै। संगे-संग ईहो कहए चाहब जे मायानंद मिश्रजीक बयान आ अज्ञानतासँ मैथिली गजलकेँ जतेक अहित भेलै ताहिसँ बेसी अहित सरसजी वा पंकजजीक सन गजलकारसँ भेलै। ऐठाम ई स्पष्ट करब बेसी जरूरी जे हम ऐ बातसँ बेसी दुखी नै छी जे ई सभ बिना व्याकरणक गजल किए लिखला मुदा ऐ बातसँ बेसी दुखी छी जे ई गजलकार सभ पाठकक संग विश्वासघात केला। जँ ई सभ सोंझ रूपें कहि देने रहितथिन जे गजलक व्याकरण होइ छै आ हम सभ ओकर पालन नै कऽ सकै छी तखन बाते खत्म छलै मुदा अपन कमजोरीकेँ नुकेबाक लेल ई सभ नाना प्रकारक प्रपंच रचला जकर दुष्परिणाम गजल भोगलक। हमरा जहाँ धरि अध्ध्यन अछि तहाँ धरि लगभग मात्र 4-5 टा गजल आलोचना स्वतंत्र लेखक रूपमे अजाद गजलकार सभ द्वारा लिखल गेल अछि (जँ पोथीक भूमिका सभकेँ सेहो जोड़ी तँ एकर संख्या 8-9 टा भऽ सकैए)। एहि कड़ीमे तारानंद वियोगीजीक "मैथिली गजलः मूल्याकंनक दिशा", देवशंकर नवीनजीक "मैथिली गजलःस्वरूप आ संभावना", धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक "मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना" आदि प्रमुख अछि।

मैथिलीक अजाद गजलक किछु उदाहरण

जेना कि पहिने कहने छी अजाद गजलमे व्याकरण नै अछि तँइ हम एकर उदाहरणमे शेर सभहँक खाली भाव संबंधी विवेचना करब (उदाहरणमे आएल शेर सभ एकौ गजलक भऽ सकैए आ अलग अलग गजलक सेहो। संपादक महोदयसँ आग्रह जे उदाहरणमे देलग गेल शेर सभहँक वर्तनीकेँ यथावत् राखथि)--

सुधांशु शेखर चौधरी जीक दू टा शेर--

अपने बेसाहल बाटसँ पेरा रहल छी हम
अपने लगाओल काँटसँ घेरा रहल छी हम
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
हम पल ओछौने बाट छी निराश नै करबै
नितुआन सन अधार छी हताश नै करबै

पहिल शेरमे शाइर सुधांशुजी अपनेसँ जन्मल समस्या कोना परैशान करै छै तकर नीक संकेत देलाह अछि। दोसर शेर हिनक गजलक मूल भाव (खुदा-बंदा बला, एकरा संसारिक रूपमे सेहो लऽ सकै छियै) समेटने अछि।

अरविन्द ठाकुर जीक दू टा शेर–

संसद केर फोटो मे किछुओ नहि हेर फेर
सांपनाथ नागनाथ इएह दुनू बेर बेर

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
लीक छोड़ि जे चलल सियार
बनि गेल एक दिन चौकीदार
पहिल शेरमे शाइर अरविन्द ठाकुरजी देशक जनताक विडंवनाक चित्रण केने छथि। जनता बरू कोनो पार्टीकेँ भोट किए ने दै सभ पार्टीक चरित्र एकै रंगक भऽ जाइ छै। दोसर शेरक हिनक व्यंग्य अछि जाहिमे नकली क्रांतिकारिताकेँ उजागर कएल गेल अछि।

विभूति आनंद जीक दू टा शेर–

एकेटा धारणा अछि एकेटा उदेस
क्यो ने होए रंक आ ने क्यो नरेश
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
फूलो मे फूल, अड़हूल केर रंग जकाँ
चारूभर तेजी सँ पसरि रहल जनता
पहिल शेरमे शाइर विभूति आनंदजी सभहँक मोनक बात रखने छथि। आ दोसर शेरमे ओ कम्यूनिष्ट पार्टीक प्रतीक लाल रंगक तुलना हड़हूल फूलसँ केने छथि।

कलानंद भट्ट जीक दू टा शेर–

शंकामे विध्वंसक आइ जीबि रहल लोक
अविवेकी अधिकारमे अणुबम भेल छै
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
अछि बटोही सशंकित बनल बाट पर
दिन मे आभास रातुक अभरि गेल अछि
पहिल शेरमे शाइर कलानंद भट्टजी वर्तमान समस्याक वर्णन केने छथि। कोन देश कोन बहन्नासँ कतए कहिया आक्रमण कऽ देत तकर कोनो ठिकान नै। दोसर शेरमे सेहो एहने सन भाव अछि।

बाबा बैद्यनाथ जीक दू टा शेर–

कोन एहन हम काज करू जे लागय कोनो पाप नहि
भूखक आगिसँ बेसी भैया अछि कोनो संताप नहि
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
कहियो जँ मोन पड़ए अपन अतीतक जीवन
बस आँखि मूनि दूनू कनियें लजा लिअ
अरब देशक एकटा कहबी छै जे पाथर वएह मारए जे कोनो पाप नै केने हो। एही भावकेँ शाइर वैद्यनाथजी अंकित केने छथि पहिल शेरमे। दोसर शेर हिनक कमालोसँ कमाल अछि। कोनो कुकर्मीकेँ एहिसँ बेसी धुतकारल नै जा सकैए।

रवीन्द्र नाथ ठाकुर जीक दू टा शेर–

हँसैत भोर सजल साँझ लोक सदा चाहैए
उदास भोर मरल साँझ तकर की होयत
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
जे पानि पीबि बैसल हो घाट घटा केर
पता तकरहिंसँ जाय पूछी बजार हाट केर
शाइर रवीन्द्रजी पहिल शेरमे घटल लोकक संकेत देने छथि प्रतीकक रूपमे। पाइ घटिते समांग सेहो घटि जाइ छै अइ दुनियाँमे। दोसर शेरमे कमालक प्रतीकक प्रयोग भेल अछि। हाट-बजारमे वएह ठठि सकैए जे कि घाट-घाट केर पानि पीने हो। ई बात प्राचीन हाटसँ लऽ कऽ एखनुक आधुनिक स्टोरपर सेहो लागू अछि।

मायानंद मिश्र जीक दू टा शेर–

एखन तँ राति अछि आ राति केर बातो अछि
कतेक राति धरि कतेक राति केर चलतै
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
देखक बाद नहि देखैक बड़ बहाना अछि
चलैत भीड़ मे एकसगर जेना हेरायल छी
शाइर मायानंदजी पहिल शेरमे समयचक्रसँ संदर्भित बात कहने छथि। दोसर शेरमे हुनकर ओहन दुख सामने आएल अछि जाहिमे पहिचानल लोक सेहो अनचिन्हार बनि जाइ छै।

सियाराम झा सरस जीक दू टा शेर–

पूर्णिमा केर दूध बोड़ल ओलड़ि गेल इजोर हो
श्वेत वसनक घोघ तर धरतीक पोरे पोर हो
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
माथ उठबए सवाल सोनित के
काल लीखैछ हाल सोनित के
सियारामजीक पहिल शेर शाश्वत सौंदर्यक वर्णनमे अछि तँ दोसर शेर प्रगतिशील।

रमेश जीक दू टा शेर–

सींथ जए टा चाही तए टा छूबि लिय
टीस मुदा ताजिन्दगी रहैत छै
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
जामु आ गम्हारि केर छाह तर मे
बाँस केर कोपर सुखैल जा रहल
शाइर रमेश जीक पहिल शेर असफल प्रेम आ ओकर टीसक नीक वर्णन अछि। दोसर शेर उन्टा अछि। व्यावहारिक रूपसँ बाँसक छाहमे कोनो आर गाछ नै नमहर होइत छै मुदा शाइर अपन शेरमे जामु आ गम्हारि केर छाहसँ बाँसक भयक वर्णन केने छथि। दोसर शेरक विविध व्याख्या भऽ सकैए।

राजेन्द्र विमल जीक दू टा शेर–

डारिसँ जे चूकत तँ बानर बडौर लेत
बेरपर हूसत से केराके घौर लेत
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
चानीक बट्टा सन नभमे संचित नक्षत्रक मोती
अहीं लेल बस अहीं लेल सृष्टिक सतरंगी जोती

शाइर राजेन्द्रजीक पहिल शेर हमरा जनैत जनतापर व्यंग्य अछि। जनते एहन अछि जे सभ समय हो-हो करैए मुदा बेरपर हुसि जाइए। हिनक दोसर शर प्रेमक सौंदर्य वर्णन अछि।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि जीक दू टा शेर–

जिनगी अछि बड़ घिनाह नाक चुबैत पोटासन
सुड़कि सुड़कि तैयो छी ढोबि रहल मोटासन!
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
कोन विजय लए खेल ई खुनियाँ
जइमे सभक सिकस्त भेल छै
जीवनकेँ निमाहिए कऽ कियो महान बनै छै। आ जीवन निमाहए लेल नीक-बेजाए सभ करए पड़ैत छै धीरेन्द्रजीक पहिल शेरक मूल भाव इएह अछि। दोसर शेरमे धीरेन्द्रजी ओहि अज्ञात मजबूरी दिस संकेत केने छथि जाहि कारणसँ लोक एक दोसरक दुश्मन बनि गेल अछि। आ मात्र अपन जय लेल सभहँक पराजय केर जोगाड़ करैए मुदा अंतमे सभहँक संग ओहो हारि जाइए अनेक कारणसँ।

तारानंद वियोगी जीक दू टा शेर–

घिचने घिचाइछ नहि जिनगी के गाड़ी
एक खंड मुस्की आ बहुते लचारी
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
ओहिना के ओहिना जिनगी मरैत गेलै
एक्के सन फोटो सँ एलबम भरैत गेलै
पहिल शेरमे शाइर तारानंद वियोगी जीवन ओहि सीमापर पहुँचि गेल छथि जतए आदमी हताश भऽ बैसि जाइए। किछु लोक एहि सेरकेँ निराशावादी कहि सकै छथि मुदा हमरा जनैत निराशा सेहो जीवनेक अंग छै। दोसर शेरमे शाइर जीवनक एकरसतासँ उबिआएल बुझाइत छथि।

रोशन जनकपुरी जीक दू टा शेर–

आङनमे अछि गुम्हरि रहल कागजके बाघ
घर घरमे अछि रोहटि-कन्ना, डर लगैए
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
जानि ने कहिया धरि बूझत ई लोक जे
वधशालामे आत्माक जोर नहि होइत छै

पहिल शेरमे शाइर जनकपुरीजी लोकक भीतरक अज्ञात अदंकक वर्णन केने छथि। सभकेँ बूझल छै जे बाघ कागज केर छै मुदा एखनुक लोक असगर भऽ चुकल अछि आ ओही कारणसँ ओकरा कागजक बाघसँ सेहो डर लागि रहल छै। कोनो हत्या करए बला आदमिए होइत छै से दोसर शेरसँ बुझा जाइत अछि जखन कि शाइर हत्याराक पैरवी करै छथि। आब ई हत्यारा कोनो रूपमे कोनो कारणसँ कियो भऽ सकैए। मात्र आदमिएकेँ मारए बला हत्यारा होइत छै से मानब एकभगाह अछि।

उपरमे देल गेल अजाद गजलक उदाहरणसँ ई बात स्पष्ट अछि जे सभ अजाद गजलकार सभहँक भाव नीक छनि। भावमे बसल बिंब खाँटी मैथिल छनि। प्रतीक सेहो नव छनि मुदा बस गजलक व्याकरण नै छनि। जखन कि शुरुआतेमे कहने छी बिना काफिया बहरक गजल नै होइत छै। आश्चर्य ईहो जे अजाद गजलकार सभ दुष्यंत कुमार कि अदम गोंडवी की फैज अहमद फैज केर उदाहरण दै छथि मुदा दुष्यंत कुमार कि अदम गोंडवी की फैज अहमद फैज केर गजलमे प्रयोग भेल व्याकरणकेँ नै देखि पाबै छथि। अजाद गजलकार सभहँक तर्क छनि जे जखन रचनामे भाव, बिंब, विचार सभ किछु छै तखन ओकरा गजल मानबामे की दिक्कत। मुदा हम उन्टा पूछब जे ओकरा कविते मानबामे की दिक्कत? अंततः कोनो कवितामे भाव, बिंब, विचार होइते छै ने। तँइ ओकरा कविते मानू। मुदा दुखद जे अजाद गजलकार सभ कहता जे ई कविता नै गजल अछि मुदा कोना तइ लेल हुनका तर्क नै छनि। किछु तँ तत्व हेतै जे कविता, गीत आ गजलकेँ अलग-अलग करैत हेतै। हमरा हिसाबें बहर-काफिया, व्याकरण ओ तत्व छै जाहिसँ कविता, गीत आ गजलमे अंतर कएल जा सकैए।

उपरमे हम कहने छी जे अजाद गजलकार सभ दुष्यंत कुमार, अदम गोंडवी आदिकेँ बहुत मानै छथि तँ एक बेर कने ईहो देखि ली जे दुष्यंत कुमार, अदम गोंडवी सभ गजल व्याकरणक पालन केने छथि की नै---

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जीक ई शेर देखू-

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाए जो पूँजी तुम्हारी मिल में है

मतला (मने पहिल शेर)क मात्राक्रम अछि-- 2122+2122+2122+212 आब सभ शेरक मात्राक्रम इएह अछि। निरालाजीक ई गजल ताकि कऽ पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै।

दुष्यंत कुमारक ऐ गजलक तक्ती देखू---

हो गई है / पीर पर्वत /सी पिघलनी / चाहिए,
इस हिमालय / से कोई गं / गा निकलनी / चाहिए।
अइ शेरक मात्राक्रम 2122 / 2122 / 2122 / 212 अछि। दुष्यंतजीक ई गजल ताकि कऽ पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै। आब कने अदम गोंडवी जीक दू टा गजलक तक्ती देखू–

ग़ज़ल को ले / चलो अब गाँ / व के दिलकश /नज़ारों में
मुसल्सल फ़न / का दम घुटता / है इन अदबी / इदारों में
अइ शेरक मात्राक्रम 1222 / 1222 / 1222 / 1222 अछि।

भूख के एह / सास को शे / रोसुख़न तक /ले चलो
या अदब को / मुफ़लिसों की / अंजुमन तक /ले चलो
अइ शेरक मात्राक्रम 2122 / 2122 / 2122 / 212 अछि। अहाँ सभ अदमजीक दूनू गजल ताकि पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै। एकटा ओहन गजलकारक गजल केत तक्ती देखा रहल छी जिनक नाम लऽ सभ अजाद गजलकार सभ बहर ओ छंदक विरोध करै छथि। तँ चलू फैज अहमद फैज जीक ई गजल देखू–

शैख साहब से रस्मो-राह न की
शुक्र है ज़िन्दगी तबाह न की
अइ शेरक मात्राक्रम 2122-1212-112 अछि। अहाँ सभ पूरा गजल ताकि पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै। तेनाहिते आजुक प्रसिद्ध शाइर मुनव्वर राना केर ऐ गजलक तक्ती देखू–

बहुत पानी बरसता है तो मिट्टी बैठ जाती है
न रोया कर बहुत रोने से छाती बैठ जाती है
अइ शेरक मात्राक्रम 1222 / 1222 / 1222 / 1222 अछि। अहाँ सभ पूरा गजल ताकि पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै। हसरत मोहानीक ई प्रसिद्ध गजल देखू---

चुपकेचुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
हमको अब तक आशिक़ी का वो ज़माना याद है

अइ शेरक मात्राक्रम 2122+2122+2122+212 अछि। अहाँ सभ पूरा गजल ताकि पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै। अंतमे राहत इन्दौरी जीक एकटा गजलक दू टा शेरकेँ देखू देखू–

चरागों को उछाला जा रहा है
हवा पर रौब डाला जा रहा है

न हार अपनी न अपनी जीत होगी
मगर सिक्का उछाला जा रहा है

अइ दूनू शेरक मात्राक्रम गजल (1222 / 1222 / 122) (बहर-ए-हजज केर मुजाइफ) अछि। अहाँ सभ पूरा गजल ताकि पढ़ू आ मिलाउ जे पूरा गजलमे व्याकरणक पालन भेल छै कि नै।

उपरमे देल गेल हिंदी-उर्दू गजलकार सभहँक शेर सभकेँ देखलासँ पता चलत जे निराला जी गजलक विषय नव कऽ देलखिन प्रेमिकाक बदला विषय मिल आ पूँजी बनि गेलै मुदा व्याकरण वएह रहलै। अदमजी भखूक एहसासकेँ शेरो-सुखन धरि लऽ गेलाह मुदा ओही व्याकरणक संग। दुष्यंतजी अपन गजलक माध्यमे हिमालयसँ गंगा निकालि देलाह मुदा व्याकरण ने तोड़लाह। फैज अहमद फैज अपन गजलमे धार्मिक कट्टरताक विरोध केलाह मुदा ओहो व्याकरण नै तोड़लाह। तेनाहिते आनो शाइर सभ नव भाव-भंगिमाक गजल लिखने छथि सेहो व्याकरणक पालन करैत। तखन ई मैथिलीक अजाद गजलकार सभ कहै छथि जे व्याकरणसँ भाव-विचार बन्हा जाइ छै या गजलमे व्याकरण नै होइ छै से कते उचित? एहिठाम आबि हमरा ई कहबा / स्वीकार करबामे कोनो संकोच नै जे जँ ई अजाद गजलकार सभ अपन जिद छोड़ि एखनो गजलक व्याकरण स्वीकार कऽ लेता तँ मैथिली गजलक सुदिन शुरू भऽ जाएत कारण हिनका सभ लग भाव-बोध, विचार ओ अनुभव बहुत बेसी छनि मुदा विधागत व्याकरण ने पालन करबाक कारणे हिनकर सभहँक लिखलपर विधाक रूपमे प्रश्नचिह्न लागि जाइत अछि। सियाराम झा सरसजीकेँ दुख छनि जे गीत विधा वर्तमानमे मैथिलीक केंद्रीय विधा किए नै अछि (देखू हुनकर पोथी आखर-आखर गीत केर भूमिका)। ई दुख हमरो अछि गजलक संदर्भमे, गीतक संदर्भमे आ सभ छंदयुक्त काव्यक संदर्भमे। हमरो ई इच्छा अछि जे गजल-गीत-अन्य छंदयुक्त काव्य मैथिली साहित्य केर केंद्रीय विधा बनए। बनियो सकैए। जँ अनचिन्हार आखर-विदेह मात्र दस बर्खमे किछुए गजल कार्यकर्ताक संग अपन गजल संबंधी लक्ष्य पूरा कऽ सकैए तँ फेर अनुमान करू जे जँ सभ अजाद गजलकार सभ अपन जिद छोड़ि व्याकरण बला गजल लिखनाइ शुरू कऽ देथि तँ कतेक कम समयमे ई लक्ष्य पूरा हएत? मुदा ताहि लेल जरूरी छै विधागत छंद ओ व्याकरणकेँ माननाइ। एकटा गजल कार्यकर्ताक तौरपर हमरा विश्वास अछि जे जँ सभ नै तँ अधिकांश अजाद गजलकार जिद छोड़ि विधागत छंद के मानता तँ मात्र 15-20 बर्खमे गजल-गीत-अन्य छंदयुक्त काव्य मैथिली साहित्य केर केंद्रीय विधा बनि जाएत। ई विश्वास हमरा एनाहिते नै अछि एकर पाछू अनचिन्हार आखर ओ विदेहक विश्वास सेहो अछि। गजलक एकटा कार्यकर्ताक तौरपर हम प्रतीक्षा कऽ रहल छी जे कहिया मैथिली गजलकेँ ई सौभाग्य भेटतै जे ओ मैथिली साहित्यक केंद्रीय विधा बनत आ ताहूसँ पहिने हमरा अइ बातक प्रतीक्षा अछि जे कोन-कोन अजाद गजलकार सभ हमर एहि सपनाकेँ यथार्थमे बदलबाक लेल सहयोग देता। प्रतीक्षारत.....................

२

उमेश मण्डल-सगर राति दीप जरय- ९८म कथा गोष्ठी- सिमरा (झंझारपुर)

सगर राति दीप जरय- सिमरा (झंझारपुर) 98म कथा गोष्ठी

संयोजक : डॉ. शिव कुमार प्रसाद

उद्घाटन सत्र-

दीप प्रज्जवलन : श्री महावीर प्रसाद, डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', श्री श्यामानन्द चौधरी, श्री अरविन्द ठाकुर, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पो. प्रीतम'निषाद', श्री उमेश नारायण कर्ण, श्री नारायण यादवआ श्री योगेन्द्र राउत।

उद्घाटन भाषण : श्री अरविन्द ठाकुर, श्री श्यामानन्द चौधरी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'आ श्री महावीर प्रसाद।

मंच संचालक : श्री संजीव कुमार 'शमा'

पोथी लोकार्पण सत्र-

लोकार्पित पोथी :

(1.) मरजादक भोज (कथा संग्रह) : नन्द विलास राय
(2.) दुधबेचनी (कथा संग्रह) : राम विलास साहु
(3.) देखल दिन (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल
(4.) कथा कुसुम (क.सं. दो.सं.) : दुर्गानन्द मण्डल
(5.) सोंहँत-अनसोंहँत (काव्य संग्रह) : डॉ. शिव कुमार प्रसाद
(6.) पघलैत हिमखंड (काव्य संग्रह, अनु.) डॉ. शिव कुमार प्रसाद
(7.) नमस्तस्यै (उपन्यास) : रबीन्द्र नारायण मिश्र
(8.) पंगु (उपन्यास) : जगदीश प्रसाद मण्डल

लोकार्पण कर्ता :

श्री महावीर प्रसाद, डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', श्री श्यामानन्द चौधरी, श्री अरविन्द ठाकुर, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पो. प्रीतम 'निषाद', श्री उमेश नारायण कर्ण, प्रो. शुभ कुमार वर्णवाल, श्री नारायण यादवआ श्री योगेन्द्र राउत।

दू शब्द : श्री महावीर प्रसाद

मंच संचालक : उमेश मण्डल

कथा सत्र-

अध्यक्ष मण्डल

डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', श्री श्यामानन्द चौधरी, श्री अरविन्द ठाकुर, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पो. प्रीतम 'निषाद'

संचालन समिति : सूर्य नारायण यादव, दुर्गानन्द मण्डल, नन्द विलास राय, अनील ठाकुर

कथा पाठ-

प्रथम पाली-

1. प्रेमक अश्रुधार : नारायण यादव
2. बोझ : दुर्गानन्द मण्डल
3. देखल दिन : जगदीश प्रसाद मण्डल

समीक्षा : श्यामानन्द चौधरीजी, राम विलास साहुजी, अरविन्द ठाकुरजी, योगेन्द्र पाठकजी

दोसर पाली-

4. दहेज पाप छी : नन्द विलास राय
5. संघर्ष : अरविन्द ठाकुर
6. भिनसुरका गप-सप्प

समीक्षा : दुर्गानन्द मण्डलजी, उमेश नारायण कर्णजी, शिव कुमार प्रसादजी, नारायण यादवजी

तेसर पाली-

7. घरतोड़नी : प्रो. प्रीतम कुमार 'निषाद'
8. ऐगला पड़ाव : ललन कुमार कामत
9. ई केकर दोख : राम विलास साहु

समीक्षा : कपिलेश्वर राउतजी, उमेश मण्डलजी, श्यामानन्द चौधरीजी

चारिम पाली-

10. मराएल जिनगी : कपिलेश्वर राउत
11. केकरो कियो नहि : लक्ष्मी दास
12. काबू : उमेश नारायण कर्ण

समीक्षा : नारायण यादवजी, प्रीतम कुमार 'निषाद'जी, योगेन्द्र पाठकजी

पाँचम पाली-

13. प्रेत लेल लड़ाइ : अमर कान्त लाल
14. जाएब नेपाल मुदा कपार जाएत संगे : शिव कुमार मिश्र
15. पुत्र मोह : लक्ष्मी नारायण प्रसाद

समीक्षा : नारायण यादवजी, प्रीतम कुमार 'निषाद'जी, राम विलास साहुजी

छठम पाली-

16. टिप्स : रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'
17. नसीहत : नारायण यादव
18. आमक चोर सगर शोर : अच्छेलाल शास्त्री

समीक्षा : नन्द विलास रायजी, शिव कुमार प्रसादजी, सूर्य नारायण यादवजी

सातम पाली-

19. वाइफ : लक्ष्मी नारायण प्रसाद
20. अनुशासित प्रतिष्ठान : श्रीमती ज्योति कुमारी
21. कोचिंग : श्रीमती ज्योति कुमारी

समीक्षा : प्रीतम कुमार 'निषाद'जी, श्यामानन्द चौधरीजी, नारायण यादवजी

अध्यक्षीय भाषण : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पो. प्रीतम कुमार 'निषाद'

धन्यवाद ज्ञापन : डॉ. शिव कुमार प्रसाद।

ऐगला आयोजन : प्रो. प्रीतम कुमार 'निषाद'क संयोजकत्वमे, स्थान- मुरहदी (बाबूबरही)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.उमेश मण्डल- बीहैन कथा- भिनसुरका गप-सप २.रबीन्द्र नारयण मिश्रक किछु लघुकथा

१

उमेश मण्डल

बीहैन कथा- भिनसुरका गप-सप्प

सभ दिन भिनसरे-भिनसरबुलैले निकलै छी। कौलेजक फिल्डपर पहुँच ऐकातसँ-ओइ-कातपाँच-दस चक्कर लगबै छी।ओना तँ अनेको लोक फिल्डपर चक्कर लगैबते छैथ मुदा चारि-पाँच बेकतीक मित्र-मण्डलीमेहमहूँ रहै छी। कहियो अपने पहिने पहुँचलौं, कहियो वएह सभ पहिनेसँ पहुँचल रहै छैथ। संगे सभ कियो टहलै-बुलै छी। पछाइत सबहक बैसार चाहक दोकानपर होइत अछि। दोकानोपर खाली हमहीं सभ रहै छी सेहो नहियेँ कहल जाएत, आरो-आरो लोक सभ रहै छैथ। किछु लोक पहिनौंसँ बैसल रहै छैथ आ पछातियो अबिते छैथ।

चाहक दोकानपर रंग-बिरंगक गपो-सप्प चलिते अछि। रंग-बिरंगक माने विषयगत सेहो आ बेकतीगत-सामुहिक सेहो। बेकतीगत गप-सप्प तँ बेकती-बेकतीक बीच चलैए, मुदा तैसंग किछु एहनो बात चलिते अछिजे सामुहिक रहल।सामुहिक बात जखन किमहरोसँ चलैए तँ ओइमे कोनो समुहक लोक अपन विचार राखब उचित बुझै अछि। ओना, समुहो समुहमे अन्तर अछिए। नवयुवक, अर्द्धवृद्धआवृद्धसँ लऽकऽसहरगंजाक संगतगमाबला धरिक समूह अछिए। मुदा विषयो तँ बहुत एहेन अछिए जे करीब-करीब सभ तरहक लोकक कानकेँ ठाढ़ कइयेदैत अछि।

आजुक गप-सप्पक विषय छल- आरक्षण। किछु लोकक कहब रहैन आरक्षण अनुचित अछि आ किछु लोक आरक्षणकेँ उचित कहै छला।

कए गोरे अपन-अपन बात बाजि-बाजि चुप भऽगेल छला आ कए गोरे बाजियो रहल छला। किछु गोरे पक्षमे आ किछु गोरे विपक्षमे बाजि रहल छला। माने आरक्षण नहि रहक चाही ई एक समूहक कहब रहैन। कहबे नहि रहैन, साबित कहैत एक गोरे स्पष्ट विचार रखबो केलाह-

“आरक्षण अनुचित अछि। मानि लिअ, डाक्टरीए पढ़ाइमे जे आरक्षण अछि। ऐसँ क्षति हेबे करैए किने। जइ काजमे कुशाग्र बुधिक जरूरत अछि ओ काज आरक्षणक चलैत मन्द बुधिक हाथ पड़ने की क्षति नइ होइए। हेबे करैए।”

बेसी गोरेकेँ ऐ विचारपर जेना सहमैत बनलैन।वास्तवमे आरक्षण नइ रहक चाही।

जेना चुप्पी पसैर गेल। मुदा चुप्पी रहल नहि। बिच्चेमेहमर मित्र- शिबुजी सेहो थोड़ेक सह लगा देलखिन-

“देखै नइ छिऐ, आएदिन केहेन-केहेन घटना ऑफिस-कार्यालयसँ लऽकऽअस्पताल धरिमे होइत रहैए।”

ओना, शिबुजी किछु आर बातकेँ गप-सप्पमे आनए चाहि रहल छला, मुदा हुनका,माने जे पहिनेसँ बाजि रहल छलातिनका बुझि पड़लैन जे आरक्षणक विरोधेमे शिबुजी बजला अछि। ओ अपन मुड़ी डोलबैत बिच्चेमे शिबुजीकेँ कहलखिन-

"तँए ने कहलौं, आरक्षण बेकार अछि। आरक्षण हटि जेबा चाही।"

हुनकर बात सुनिते शिबुजी हमरा दिस ताकए लगला। हमहूँ शिबुजीक चेहरा देखए-पढ़ए लगलौं। बुझि पड़ल जेना इशारेमे कहि रहला हेन-

"देखियौ, आरक्षणक मात्र एक पहलूकेँ कनी-मनी जनैए कि नहि जनैए, मुदा पंनचैती केना करैए!"

बुझि पड़ल किछु बजबाक चाही। ओइ बेकतीकेँ पुछलयैन-

"अँइ यौ भाय साहैब, डोनेसनपर जे नामांकण होइ छै, ओ की एक प्रकारक आरक्षण नइ छी? की ओइमे सभटा कुशाग्रे बुधिक नामांकण होइ छइ?"

कए गोरे अपन-अपन कपकेँ देखबुझि गेला जे आब चाह सठि गेल,मुदाकए गोरे से बिनु देखनहि मुँहमे लगा-लगाबुझला- जा! चाह तँ सठि गेल।

जहिना सबहक कपक चाह सठि गेल तहिना गपो सठि गेल।

२

रबीन्द्र नारयण मिश्रक

किछु लघुकथा

<u>हम बौक छी</u>

पाकड़ी गाछ तर ओ पसीना पोछि रहल छल। आगा-पाछा ओकर क्यो नहि छलैक। अगसरे छल। नित्य भोरे उठैत छल आ साँझ धरि परिश्रम करैत छल। बदलामे किछु अन्न-पानि भेटि जाइत छलैक। दुपहरियामे जहन कनेक उसास होइक तँ गामक जे पूव दिस पाकरिक गाछ छेलैक ओकरे छाहरिमे बैसि पसीना पोछए लगैत छल। दस साल बएस ओकर हेतैक। पता नहि, कहिआ ओकर माए-बाप मरि गेलैक। ओकरे संगतुरिया सभ कैटा छैक जे स्कूल जाइत रहैत छैक। माए-बाप सभ ओकरा रंग-बिरंगक कपड़ा कीनि दैत छैक। किताब कीनि दैत छैक। केहन भागबंत छैक ओकर संगी सभ। सएह सभ अर्र-दर्र ओ सोचैत रहि जाइत अछि। पता नहि अखन धरि कतेक मालिक ओहिठाम ओ काज केने अछि। जतहि गेल ओतहि लात-जुत्तासँ स्वागत भेलैक। मुदा ओ की कए सकैत छल?पेटक सबाल छलैक। जाधरि सहि सकैत छल, सहैत छल। आ कहिओ चुप्पे भागि जाइक। पाछू लागल मालिक गरजैत उठैत छलैक। जेना-तेना कए ओ अपन पेट पोसैत गेल। आगा बढ़ैत गेल। जीबनक एक-एक दिन एकटा उपलब्धि जकाँ बीतैत गेलैक। क्रमशः ओ जवान भए गेल। एमहर सरकार नया-नया योजना सभ लागू केलक अछि। गाम-गाममे बैंक सभ खुजि गेलैक अछि। एक दिन ओहो बैंक गेल आ मनेजर साहेबक आगू उचिती-विनती केलक। मनेजर साहेब ओकरा एकटा रिक्सा कीनि देलखिन।

ओकरो नाम मनेजरे छलैक मुदा गामक लोक मनेजरा कहैत छलैक। मनेजरा रिक्सा चलबए लागल। नित्य दससँ पन्द्रह टाका आमदनी भए जाइत छलैक। ठाठसँ जिनगीक गाड़ी सरकए लगलैक।

'मनेजर राय' लिखल रहैक रिक्सापर। भोरे उठए मनेजरा आ घण्टी बजबैत दनादन निकलि पड़ए। मनेजराक प्रतिष्ठा छोटका लोक सभमे बढ़ए लगलैक। कैटा कथा सेहो ओकरा बिआहक लेल आबए लगलैक। आ अन्ततोगत्वा मनेजरा बिआह कए लेलक। गामसँ पाँच कोस पच्छिम सासुर छलैक। अमन-चैन भए गेल रहैक ओकर जिनगीमे। भोरे छह बजे रिक्सा लए कए बिदा भए जाइत आ साँझमे सात बजे एक ढेरी कैंचा लेने आपस होइत। मुदा ओकर ई जिनगी बेसी दिन नहि चलि सकलैक।

सात-आठ बर्ख पहिने ओ फूल बाबूसँ दसटा टका पैंच लेने छलैक। संयोगसँ वो पैसा आइ धरि आपस नहि भए सकल छलैक। ओकर हालतमे सुधार देखि गौँआ-घरूआ सभ अनेरे ओकरासँ जरएलागल छलैक। ओहि दिन साँझमे आपस भेल। बेस आमदनी भेल रहैक। घर पहुँचले छल कि फूल बाबूक गर्जन सुनेलैक-

"मनेजरा छैँ, मनेजरा छैँ?"

"की है मालिक।"

"तों अपन हिसाब किएक नहि फड़िछा रहल छैँ।"

"कोन हिसाब?"

"कोन हिसाब! केना बजैत अछि जेना एकरा किछु बुझले ने होइक। दस बर्ख भए गेलौ ओहि कर्जाकेँ। कहिओ देबाक सुधि अएलौक? सुदि समेत ओकर आब पाँच सौ टाका भए गेल अछि! काल्हि भोर तक टाका चूका दे, नहि तँ...।"

मनेजरा तामसे बुत्त भए गेल। नहि सहि भेलैक ई सरासर अन्याय ओ बैमानी। तामसमे ओहो गरजए लागल-

"होशमे बात करू मालिक..! बुझलौं जे बड़ टाकाबला छी।"

एतबा ओ बाजल कि फूल बाबू गरिआएब शुरू केलखिन। मनेजराकेँ सेहो टाकाक गरमी रहबे करैक। ओ अत्याचारक प्रतिकार करब कर्तव्य बुझि गेल छल।

एहले-वएहले फूल बाबूकेँ गट्टा पकड़लक आ गर्दनियाँ दैत अपना दरबाजापर सँ भगा देलक।

फूल बाबू बेस तावमे आबि गेल छलाह। मैथिली छोड़ि हिन्दीमे गरजए लगलाह-

"कल देख लेंगे। ऐसे-ऐसे कितने पाजी को मैंने ठीक किया हूँ।"

जबरदस्त हल्ला गाममे बजरि गेलैक। चारूकातसँ लोक सभ दौड़लैक आ दूनू गोटेकेँ फराक कए देलक। फूल बाबू अड़्-बड़् बजैत आपस अएलाह।

प्रात भेने मनेजरा पूर्व जकाँ रिक्सा निकाललक। ठाठसँ ओकर सीटपर बैसल आ घण्टी टनटनबैत घरसँ बिदा भेल। गामसँ बहराएल कि रिक्साक चालिकें तेज कए देलक। रिक्सा हवामे उड़ए लगलैक। किछु दूर आगा बढ़लापर रस्तापरजारनि राखल भेटलैक। मनेजरा रिक्सा रोकलक आ जारनिकेँहटबए लागल। एतबेमे चारि-पाँचटा लठैत दन-दन कए दूनू कातसँ धानक खेतसँ बहरेलैक। दन-दन-दन। मनेजराक कपारपर लाठी पड़ए लगलैक।

मनेजरा ठामहि खसि पड़ल। ओ लठैत सभ रिक्सा पकड़लक आ ओकरा मारि लाठीसँ, मारि लाठीसँ ओतहि खण्ड-खण्ड कए देलक। फेर पता नहि, ओ लंठ सभ कतए निपत्ता भए गेलैक। बहुत काल धरि मनेजरा एहिना अचेत बीच रस्तापर पड़ल रहल आ ओकर रिक्सा टुकड़ी-टुकड़ी भए कए बगलमे राखल रहैक। माथपर सँ खुन टपकैत रहैक आ मारिसँ सौंसे देह भुजरी-भुजरी भए गेल रहैक। धण्टा भरिक बाद एकटा रिक्साबला ओही रस्तासँ गेल।

मनेजराकेँ ओतए पड़ल देखि ओ सन्न रहि गेल। ओकरा रिक्सापर दूटा यात्री छलैक हुनका सभकेँ रिक्सेपर छोड़ि ओ उतरल। मनेजरा रिक्सा चलबैमे ओस्ताद भए गेल छल आ तेँ रिक्साबला ओकरा 'गुरु' कहि कए बजबैत छलैक। 'गुरु'क ई दशा के केलक? किछु काल धरि ओ रिक्साबला क्षुब्ध रहल। आ तकर बाद जेना ओकरा अकिलमे सभटा फुराय लगलैक। धराक दए मनेजराकेँ रिक्सापर लदलक आ आपस अस्पताल दिसि रिक्साकेँ तेजीसँ चलबए लागल।

मनेजरा तीनि दिन धरि लगातार अस्पतालमे पड़ल रहल। ऑक्सीजन देल गेलैक। बहुत रास दवाइ करए पड़लैक। चारिम दिन साँझमे ओ आँखि खोललक। होश अबिते अपन रिक्साकेँ ताकए लागल। मुदा क्यो किछु नहि कहलकै। मनेजरा फेर चुप्प भए गेल। अस्पतालमे ओकरा एक मास समय लागि गेलैक। गामपर बच्चा सभ अन्न-पानिक अभावमे मरणासन्न रहैक। घरवाली मालिक सभबहक आँगनमे काज कए कए गुजर करैक। मुदा जाहि दिन मनेजरा आपस अस्पतालसँ अएलैक तँ ओकर घरवाली खुशीसँ दौड़ए लगलैक।

मनेजरा घुरि तँ आएल मुदा ओकर बाँमा पैर नेंगराय लागल छलैक। रिक्सा थकूचल गेल रहैक। आगा कि करए से नहि फुरा रहल छलैक। घरमे दूटा बच्चा सेहो भए गेल छलैक। सभ अन्न बिना रोगा रहल छलैक। डाक्टर मनेजराकेँ मास दिन आराम करबाक परामर्श देने छलैक। मुदा घरक परिस्थिति देखिकए ओकरा बैसल नहि गेलैक।

मनेजरा साहस केलक आ आँगनसँ निकलल। मुदा जाए तँ कतए? टांग टुटि गेल छलैक। रिक्सा थकुचाएल राखल छलैक। गाममे मात्र फूले बाबू लहनाक कारोबार करैत छलाह। कीकरए? झख मारि कए फूल बाबूक ओहिठाम पहुँच गेल। ओकरा अखन धरि नहि बुझल छलैक जे ओकर घरवाली फूले बाबूक ओतए काज करैत छैक। फूल बाबू ओकरा बेस ध्यान करैत छलखिन। ओकर घरवालीक नाम सुनरी

छलैक। तेहने गुणो छलैक। मुदा सौन्दर्य गरीबीसँ दागल छलैक। फूल बाबूक कहि ने कहिआसँ ओकरापर नजरि गरि गेल रहनि।मनेजरा पहुँचते फूल बाबूकेँ सुनरीसँ असगरेमे हँसी-ठठा करैत देखि लेलक। ओ कतहुँ दोगमे नुका गेल आ तमासा देखए लागल। सुनरी नै नै करैत रहलैक। मुदा फूल बाबूक आक्रमकता बढ़ले गेलनि। एहिसँ आगू मनेजराकेँ देखबाक शक्ति नहि रहि गेल रहैक। प्रत्याक्रमणक सामर्थ्य नहि रहैक। तँ ओ चोट्टे घुरि गेल आ घरमे आबि कए धराम दए खसल। किछु बाजल नहि होइक। ओ बौक भए गेल।

¦
¦

फाटू हे धरती !

पण्डितजी बेस कर्मकाण्डी छलाह। भोरसँ साँझ धरि जतेक काज करितथि सभमे भगवानकेँ स्मरण अवश्य करितथि। मंत्रोच्चार करैत उठितथि आ मंत्रेच्चारेक संग सुतितथि। त्रिपुण्ड आ ताहि पर लाल ठोप हुनक ललाटकेँ सुशोभित केने रहैत छल। ताहिपरसँ हरदम मुँहमे पान कचरैत, लाल-लाल पानक पीक फेकैत ओ साक्षात् कालीक अवतार लगैत छलाह। कारी चामपर ललका वस्त्र धारण कए जखन ओ भगवतीक बन्दना करए पहुँचैत छलाह तँ वातावरणमे एकटा अपूर्व सनसनी पसरि जाइत छल।

पण्डितजीक बएस करीब ४५ बर्ख होएतनि। परिवारमे दुटा बेटी आ एकटा बेटा छलनि। घरवालीक स्वर्गवास आइसँ दस साल पहिने भए गेल छलनि। पण्डितजीक दूनू बेटी बेस सुन्नरि आ लुड़िगर छलनि। मुदा हुनका पासमे टाकाक अभाव छलनि तँ कतहु कन्यादान पटैत नहि छलनि। बेटा भिन्न भए गेल छलखिन आ पण्डितजी अपन दूनू बेटीक संग एकठाम छलाह।

पण्डितजीक घरक आस-पासमे बेस सम्पन्न परिवार सभ छलैक। पण्डितजीक गुजरो हुनके सभहक माध्यमसँ होइत छलनि। बेटा अपन घरवालीक संग दरिभंगामे रहैत छलखिन। ओहिठाम डिस्ट्रीक्ट बोर्डमे खजांचीक काज करैत छलाह। मुदा पण्डितजीकेँ किछु मदति नहि करैत छलखिन। ओ अखनो पण्डिताइक बले जीवैत छलाह। दूनू बेटी समर्थ छलखिन। गामेक हाइ स्कूलसँ मैट्रिक धरि सभकेँ पढ़ौलखिन। आगा पढेबाक सामर्थ्य नहि रहनि। बिआहक लेल छटपटाएल छलाह मुदा कतहु टाका नहि भेटैत छलनि। बिना टकाक कोनो बर बिआह करए हेतु तैयार नहि छलनि। इएह सभ चिन्तामे ओ चिन्तित रहैत छलाह।

ओना पण्डितजीक सम्बन्ध पूरा गामसँ मधुर छलनि। मुदा दू-तीन परिवारक लोक हुनका बेसी आदर करैत छलखिन। हीरा बाबूक ओतए तँ भोर-साँझ दू घन्टा जरूर बैसार होइत छलनि। मुदा पण्डितजी ककरो कहिओ अपना हेतु किछु कहलखिन नहि। हीरा बाबूकेँ चारिटा बेटा छलखिन। दूटा तँ बाहर रहैत छलखिन मुदा छोटका दूनू मैट्रिक उतीर्ण केने छलखिन आ बससँ नित्य मधुबनी जाइत छल किलास करए। सरोज ओ मीरा सेहो ओकरे सभहक संगे मैट्रिक उतीर्ण केने छल।

एक दिन सौंसे गाम सुतल आ सुति कए उठल तँ गुम्मे रहि गेल। सरोज चुपचाप घरसँ निपत्ता भए गेल छलैक। घरे-घर तका-हेरी भेलैक मुदा कोनो पता नहि। आन्हर हीराबाबूक दोसर बेटा सेहो काल्हिएसँ गाएब छलैक। सौंसे गाममे कनाफुसी होमए लगलैक। पण्डितजी गरीब जरूर छलाह मुदा हुनका अपन

प्रतिष्ठाक पूरा ध्यान छलनि। ओ अहि गम्भीर चोटकेँ नहि सहि सकलाह आ रातिमे सुतलाह से सुतले रहि गेलाह।गुम्म, सुम्म आश्चर्यचकित ओ सोचि नहि पाबि रहल छलीह जे की करथि। मीरा आब एकसरि छलि। आगू-पाछू क्यो नहि। पिताक मरला चारि दिन भए गेल छलै।

सौंसे गाममे सरोजक भगबाक समाचार बिजली जकाँ पसरि गेल रहैक। मीराक तँ बकारे नहि फुटैत छलैक। की करए? पाँचम दिन सभ दियाद-वादक बैसार भेल। तय भेल जे गाम लए कए श्राद्ध भए जाए। पैसा-कौरी हीराबाबू गछलखिन। मीरासँ मात्र एतबा गछबा लेल गेलैक जे काज भेलाक बाद घर-घराड़ीहीराबाबूक नाम कए देल जएतनि। वएह पण्डितजीक एक मात्र सम्पत्ति छलनि। बैसार खतम भेल मीरा गुमसुम एकचारी दिस देखि रहल छल। पण्डितजीक श्राद्ध नीक जकाँ समपन्न भेल। हीराबाबू रजिष्टारकेँ गामेपर बजा अनलाह। लिखा-पढी सम्पन्न भए गेल। हीराबाबू मीराकेँ कहलखिन-

“मीरा, मास दू मास अही घरमे रह। तोरे घर छौक ने।”

मीरा चुपचाप सुनैत रहलि जेना ठकबिदरो लागि गेल हो। अपने गाममे, अपने घरमे मीरा बेघर भए गेल छल। गामक लोक ओकरा प्रति सहानुभूति तँ देखबैत छलैक मुदा महज मात्र देखौटी। धीरे-धीरे ओहो खतम। पन्द्रह दिन भए गेल छलैक घरक रजिष्ट्रीक। मीराकेँ आब ओहि घरमे एक पल बिताएब असम्भव लगैत छलैक। एक दिन सएह सभ सोचि रहल छल कि लगलैक जेना दरबाजापर क्यो ठाढ़ होइक।

“हीराबाबू, अपने एतेक रातिमे..?”

हीराबाबू किछु बजबाक हिम्मति नहि कए पाबि रहला छलाह। मीराक तामस अतिपर पहुँच गेलैक। ओ चिचिआएलि ___

“चोर!चोर!”

हीराबाबू भगलाह। अगल-बगलक लोकक ओहिठाम भीड़ एकट्ठा भए गेल छलैक। मीरा भोकासि पाड़ि कए कानि रहल छलि। दाइ-माइ सभ दस रंगक गप्प-सप्प करैत पहुँचि गेल छलैक। जकरा जे मोन होइक से बजैक। मीरा चुपचाप सभ किछु सुनैत रहल। क्रमशः भीड़ ओहिठामसँ हटैत गेलैक। राति गम्भीर भेल जाइत छलैक। सौंसे गामक लोक सुति रहल छलैक। मीरा चुपचाप गामसँ बाहर भए गेलि। ओकराकिछु नहि बुझल छलैक जे ओ कतए जा रहल अछि मुदा कोनो दोसर बिकल्पो नहि रहि गेल छलैक।

मीरा बड़ड पढ़लो नहि छलि। शहरमे कहिओ रहल नहि छलि। मुदा तकर बादो ओकरा कोनो गम नहि छलैक। टीशनपर गाड़ी आबि गेल छलैक आ आओर अधिक सोच-विचार करबाक अवसरो नहि छलैक। ओ तरदए टीकट कीनलक आ गाड़ीपर चढ़ि गेल। ट्रेनमे बेस भी छलैक। किछु काल तँ ओ ठाढ़े रहल मुदा ताबते ओकरा चिर-परिचित अमित सेहो ओकर सामनेक सीटपर बैसल भेटलैक। हीरा बाबूक ज्येष्ठ पुत्र अमित। मीराकेँ ट्रेनमे धक्कम-धुक्की करैत देखि ओ तुरन्त उठि गेलैक।

“मीरा तूँ कतए जा रहल छेँ?”

पुछलकै अमित। मीरा ओकरा देखि कए अवाक् रहि गेल। किछु बजबे नहि करैक। अमित ओकरा अपना सीटपर बैसा देलकै। अगिला टीशनपर किछु यात्री उतरलैक। अमित सेहो ओहिठाम उतरए चाहैत छल मुदा मीराकेँ एकसरि छोड़ि देब ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक। ओ मीरासँ ओकर गन्तव्य पुछए चाहलकै। मुदा मीरा किछु बजबे नहि करैक। बड़ मोसकिलसँ मीरा ओकर कहब मानि ओतहि उतरि गेल। गाड़ी सीटी दैत ओहिठामसँ आगा बढ़ि गेलैक। ट्रेनपर सँ उतरि कए मीरा कानए लागल। अविरल अश्रुक प्रवाह देख अमितक मोन करूणासँ भरि गेलैक। ओ मोनहि मोन निश्चय केलक जे मीराकेँ ओकर घर आपस दिआ कए रहत चाहे ओकरा कतबो संघर्ष किएक नहि करए पड़ैक। ओ बड़ मोसकिलसँ मीराकेँ चुप केलक आ अपना संगे गाम आपस नेने अएलैक।

ओहि दिन पूरा गामक बैसारी भेलैक। सभ हीराबाबूकेँ 'छिया-छिया' कहलकनि। ताबतमे अमित कतहुसँ आएल आ साफ-साफ घोषणा कए देलक जे ओ मकान मीराक छैक, ओकरे रहतैक। सौंसे गौंवा प्रसन्न भए ओकर जयगान करए लागल। मुदा हीराबाबूकेँ जेना नअ मोनपानि पड़ि गेलनि। बैसारीसँ लौटि ओ छटपटाएल रहथि। साँझमे बाप-बेटामे बेस विवाद पसरि गेलनि। मुदा अमित हुनकर गप्प सुनबाक हेतु तैयार नहि छल आ एक बेर फेर साफ-साफ कहि देलकनि जे एहि अन्यायमे ओ हिनकर संग नहि देतनि। बाद-विबाद बढ़िते गेल। अन्ततोगत्वा हीराबाबू कम्बल, बिछाओन आदि सरिओलनि आ गामसँ बिदा भए गेलाह। क्यो टोकलकनि नहि। अमित मोने-मोन सोचैत रहल- भने ई आफद टरि रहल छथि।

हीराबाबू तँ चलि गेलाह मुदा मीराकेँ तैयो चैन नहि भेटलनि। सौंसे गाममे दुष्ट लोक सभ मीरा आ अमितक बारेमे नाना प्रकारक कुप्रचार करए लगलैक। नित्य एकटा नव अफवाह गामक एक कोनसँ निकलैत आ दोसर कोन धरि पसरि जाइत। मीराकेँ ई सभ गप्प क्यो-ने-क्यो आबि कए कहि दैक। ओ बड़ संवेदनशील छलि, भावुक छलि, तँए एहन-एहन गप्प-सप्प सुनि कए कानए लगैत छलि। एक दिन अहिना एसगरे अँगनामे कनैत रहए। अमित कतहुसँ आबि गेलै। ओकरा एना कनैत देखि बड़ तकलीफ भेलै अमितकेँ।

“मीरा नहि कान!”

जेना कि सभ बात ओकरा बुझले होइक।

“सुन! हमर बात मानि ले। हमरासँ बिआह कए ले।”

मीरा आओर जोरसँ कानए लगल। अमित ई सभ नहि देखि सकल आ चुप्पे ओतएसँ सरकि गेल। तकर बाद अमित दोबारा घुरि कए नहि अएलैक ओकरा लग। पूरा गाममे हल्ला भए गेलैक जे अमित कतहु चल गेल। मीरा ओतेकटा गाममे फेर एकसरि भए गेल छल। गाममे कोनो थाह पता नहि छलैक। बच्चा सभकेँ ट्यूशन पढ़ा-पढ़ा कए गुजर करैत छल। मुदा अमितक एकदम गामसँ निपात भए गेलाक बाद ओ अत्यधिक दुखी छलि। ककरोसँ किछु गप्प करबाक इच्छा नहि रहैक। एतबेमे ककरो गरजब सुनेलैक। हीराबाबूक पितियौत अगिआ बेताल छलाह।

“कहाँ गेल पण्डितक बेटी..!” इत्यादि-इत्यादि।

मीराकेँ ई सभ गप्प नहि सहि भेलैक। मोन कहैक: “फाटू हे धरती आ समा लिअ”।मुदा ओ किछु बाजिओ नहि सकल। असोरापर करोट भए गेल। चारूकातसँ लोक सभ दौड़ल। हल्ला भए गेलैक जे 'मीराक हार्ट फेल कए गेलैक। ओ घराड़ी सुन्न भए गेलैक।'

¦
¦

उपकारक भार

ओ निम्न मध्यवर्गीय परिवारमे पालल-पोसल गेल छल। मुदा सभ दिनसँ ओकर महत्वाकांक्षा पैघ छलै। गाममे मिडिल स्कूल रहै। महींस चरा कए आबए आ फटलाही अंगा पहीरि कए फक्का फँकैत स्कूल बिदा भए जाइत छल। सातमामे जहन ओ प्रथमआएल छल तँमास्टर सभ ओकर पीठ ठोकि देने रहथिन।

पीठ ठोकैत प्रधानाध्यापकजी सेहो कहलखिन-

“बाह रे बेटा, अहिना आगू करैत रह..!”

सौंसे गाममे ओकर नाम तेजस्वी, सुशील ओ प्रतिभाशाली बच्चाक रूपमे ख्यात भए गेल छलै। आ लोकक लेल धरि ई सभ धनिसन। ओकरा पढ़बाक धुन लागि गेल छलै। किताब लए लैत, महींसपर चढ़ि जाइत आ पढ़ैत रहैत। खेबा-पीबाककोनो सुधि नहि। मैट्रिकक परीक्षामे ओ जिला भरिमे प्रथम स्थान प्राप्त कएलक। सरकारक दिसिसँ ओकरा ३०० टाका प्रति मासक छात्रवृति सेहो भेटलैक आ ओ गामसँ दूर बहुत दूर पढ़क लेल चल गेल। कलकत्ता विश्वविद्यालयक ओ सम्मानित छात्र भए गेल छल। एवम् प्रकारेण ओ पढ़िते गेल, बढ़िते गेल।

कलकत्तामे ओकरा रहए जोगर कोनो नीक स्थान नहि भेटि रहल छलै। मास दिन भए गेल रहैक कलकत्ता अएला। मुदा कोनो ठौर-ठेकान नहि भेल छलै। कहिओ ककरो ओहिठाम, कहिओ कतौ। एहिना मास दिन बीति गेलै। एक दिन विश्वविद्यालयक वाचनालयमे एसगरे बैसल छल। गुमसुम। एतबेमे ओकरे वर्गक एकटा छात्रा 'मालती' अएलै आ ओकरा एकटा हल्लुक सन चाटी मारलकै आ एकसुरे बजैत रहि गेलै-

“एना किएक गुमसुम रहैत छेँ?”

आलोककेँ ओकर सभटा बातसँ जेना छगुन्ता लागि गेलै। ओ मालती दिस एकटक तकैत रहल। मुदा किछुए कालमे ओआत्मलीन भए गेल। मालतीकेँ ओकर एहि अन्तर्मुखी आकृतिसँ बड़ असमंजस भए गेलै।

कनीकाल ओहो गुम्हरल आ फेर ओहि ठामसँ चोट्टे घुमि गेल। आलोक किछु नहि कहलकै। चुप-चाप कहि नहि की की सोचैत रहि गेल? साँझक समय लगीच छलै। वाचनालयक चपरासी कहलकै-

“बाबूजी। आब समय समाप्त छैक। कोठरीमे ताला लगतैक।”

आलोक चुप्पे ओहि ठामसँ बिदा भेल।आलोकक जिनगी अहिना अन्हरियामे बीतैत रहल छलै। इजोरियाक प्रत्याशामे जीवि रहल छल। एक-एक डेग संघर्षक पृष्ठभूमिमे कहि नहि ओकरा केमहर लए जाइत छलै। मुदा ओ चलिते रहल छल। नेनासँ अखन धरि कष्ट कटैत-कटैत ओकर संवेदनशीलता शीथिल भए रहल छलै। प्रकृतिक सौन्दर्यसँ दृष्टि हटल जा रहल छलै। ओहि समयमे मालतीक संग ओकर भेँट जेना ओकर दृष्टिकेँ एकदम बदलि देबाक हेतु तत्पर भए गेल होइक। यद्यपि ओ मालतीसँ भरि पोख गप्पो नहि केने छल, मुदा कहि नहि ओकरासँ किएक एहन आत्मीयता बुझाइत छलै।

मालती सौन्दर्यक प्रतिमूर्ति छल। ओकर स्वभावक संतुलन, एवम् दृष्टिक मार्मिकता एक-एक शब्दसँ अन्दाजल जा सकैत छल। ओ कोनो बहकल लोक नहि छल। मुदा ओकरा आलोकक प्रति एकटा स्वत: स्फूर्त, स्नेह उभरैत छलै। संभवत: ओ आलोकक संघर्षक प्रति अधिक संवेदनशील भए गेल छल। आलोककेँ कलकत्ताअएला डेढ़ माससँ ऊपर भए गेल छलै। मुदा ओकरा अखन धरि रहए जोगर मकान नहि भेटि सकल छलै। मालतीक मकानमे बहुत रास जगह छलै। आसानीसँ ओ एकटा कोठरी आलोककेँ दए सकैत छल। मुदा आलोकसँ किछु कहबाक ओकरा साहस नहि होइत छलै। आलोकक गंभीर मौन ओ तजस्वी व्यक्तित्व जखन कखनो ओकरा सामने पड़ैत छलै, ओ ओहिनाक ओहिना रहि जाइत छलि।

एही क्रमे मास दिन आओर बीति गेल। वाचनालयमे एक बेर फेर आलोक भेट गेलै। बेस दुखी बुझाइत रहैक। मालतीकेँ नहि रहल गेलै। पुछलकै-

“की बात छै? आइ बड़ उदास लागि रहल छेँ?”

आलोक चोट्टे कहलकै-

“गाम घुरि रहल छी। लगैत अछि आब आगा पढ़ब भागमे नहि लिखल अछि।”

मालती पुछलकै-

“किएक?”

आलोक गुम्म रहि गेलै। मालती कहलकै-

“चल हमरा संगे।”

आलोक ओकरा पाछू-पाछू बिदा भेल।

मालतीक पिता पुलिसक एकटा वरिष्ठ अधिकारी छलखिन आ पश्चिम बंगाल कैडरमे काज कए रहल छलखिन। मात्र दूटा कन्या छलनि। शीला ओ मालती। शीलाक बिआह, द्विरागमन सभ किछु सम्पन्न भए गेल छलै। मालती कलकत्ता विश्वविद्यालयक आइ.ए.क. छात्रा छलि। बड़ीटा मकान खाली खाली रहैत छलै। डी.आइ.जी साहैब आलोककेँ देखिते प्रभावित भए गेलाह। गंभीर, तेजमय व्यक्तित्व। संघर्षक समयमे आलोक व्यक्तित्व आओर तेजस्वी भए गेल छल। मालती ओकर गुम्मी, ओकर प्रतिभा आ सभसँ बेसी ओकर सौम्यतापर मंत्रमुग्ध छल। डी.आ.जी. साहेब तेज लोक छला। आलोकक प्रतिभाकेँ ओ एकदम तारि गेलाह। आलोकक सभ वृतान्त मालतीक मुहेँ सुनने छलाह। कहलखिन-

"आलोक। ई अहींक घर अछि। निश्चिन्त भए रहू। कोनो बातक प्रयोजन हो तँ नि: संकोच बता देल करब। संगहि मालतीकेँ कखनोक पढ़ा देल करबै। गणित कमजोर छैक। सुनैत छी अहाँ गणितमे बेस मजगूत छी।"

अपना बारेमे एकटा अतिचर्चित व्यक्तिसँ एतेक रास गप्प सुनि कए आलोक गुम रहि गेल। मालती अपन पिताक गप्प-सप्पसँ बेस प्रसन्न छल। ओकरा सएह उमीदो छलै।

आलोक आ मलती आब संगे संग रहैत दल। संगे पढ़ैत छल, कालेज जाइत छल आ कहि नहि कतेक काल धरि संगे गप्प-सप्प करैत रहैत छल। आलोक निश्छल भावसँ कहि नहि ओकरा की की कहि जाइत छल। मुदा मालती लेल धनि-सन। ओ सभ चुप्पे सहि जाइत छलि।

आइ.ए.क परीक्षा लगीच छलै। दूनू गोटे परीक्षाक तैयारीमे भिड़ल छल। आलोकक सहारा भेट गेलासँ मालती सेहो नीक पढ़ाइ कए रहल छल। दूनू गोटे परीक्षा देलक आ नीकसँ परीक्षा उतीर्ण कए गेल। आलोक विश्वविद्यालयमे प्रथम स्थान प्राप्त केने छल।

मालती प्रथम श्रेणीमे नीक नम्बर अनलक। डी.आइ.जी. साहेब आलोकसँ बड़ प्रशन्न छलखिन। मुदा आलोक लेल धनि-सन। जाहि आदमी लए कए शहर भरिमे धूम मचल छल, सएह आदमी गुमसुम कोठाक ऊपरी मंजिलपर कहि नहि की की सोचबामे व्यस्त छल।

डी.आइ.जी. साहेब मालती सहित हुनकर पूरा परिवार आलोककेँ मदति करबामे जान लगा देने छल। मुदा आलोककेँ ई सभ कोना दनि लगै। ओकरा आवश्यकतानुसार सभ किछु भेट गेल रहैक मुदा तैयो ओ कहि नहि किएक दुखी रहैत छल। मुदा करए की? अभावक असीम समुद्रमे कतेको काल धरि हेलैत-हेलैत एकटा सहारा भेटल छलै। मुदा लागि रहल छलै जे समुद्रसँ तँ उवरि गेल मुदा ओहि टापूक कोनो गहींर कूपमे डुबि जाएत जाहिसँ फेर ओ नहि निकलि सकत।

आखिर डी.आइ.जी. साहेब आ हुनकर परिवार ओकरा एतेक मदति किएक करैत छैक? मुदा करितै की? कोनो दोसर विकल्पो नहि छलै। आगू बढ़ए,सहारा छोड़ि दिए तँ फेर वएह असीम समुद्र देखाइत छलै- अभाव, कष्ट ओ संघर्षक चरमोत्कर्ष। कतए जाए? की करए? असमंजसमे जीवि रहल छल। इएह सभ सोचैत छल की मालती ऊपर आबि गेलै।

मौन एकाएक भंग भेलै। ओकरा एना गुम्म देखि मालती कहि उठलै-

“चल, चल नीचा चल। आइयो एहिना गलफुल्ली रखबैं की? तोरे कारण तँ हम एतेक नीक नम्बर लए कए उतीर्ण भेलहुँ अछि। चल, तोरा भरि पेट मिठाइ खुएबौ।”

आलोक हँसल आ मालतीक पछोर धए लेलक। नीचामे डी.आइ.जी. साहेब आ ओकर परिवारक सभ लोक आलोकक प्रतीक्षामे छलाह। ओ सभ आलोकक स्वभावसँ परिचित भए गेल छलाह आ तँ किछु कहलखिन नहि मुदा ओकर अन्यमनस्कताकेँ तँ ओ निश्चित रूपसँ तारि गेलाह। डी.आइ.जी. साहेब बात बदलैत कहलखिन-

“बी.एस-सी.मे कतए नाम लिखैब आलोक? अखन किछु सोचलियैक नहि? हमर विचार तँ अछि जे एहीठाम कलकत्ता विश्वविद्यालयमे नाम लिखाउ। कारण ई नीक विश्वविद्यालय अछि।”

आलोक चुप्पे रहि गेल। फेर आन-आन बात होमए लगलैक। ताबतेमे टेलीफोनक घन्टी बजलैक आ डी.आइ.जी. साहेब जरूरी काजसँ ऑफिस बिदा भए गेलाह। मालतीक माए सेहो कतहु उठि कए चलि गेलै। आब मात्र मालती आ आलोक ओतए रहि गेल छल। मालती गप्प शुरू करैत कहलकै-

“आलोक। तूँ बड़ नीक लोक छैं।”

आलोक एहि बातपर हँसि देलकै। कहलकै-

“नीक तँ छी मुदा...।”

“मुदा, मुदा किछु नहि!जे कहि रहल छियौ से सुन। एहीठाम रह आ संगे संग दूनू गोटे बी.एस-सी. करब। कोनो बातक चिन्ता नहि कर।”

आलोक कहि नहि कोना- ‘हँ’ कहि देलकै।

मालतीक खुशीक ठेकान नहि छलै। ओ दौड़ल घर गेल आ एक बाकुट मिठाइ आनि कए आलोकक मुँहमे ठुसि देलकै। आलोक मधुर खाइत चल गेल।

मालती आ आलोक एकटा नामक दू अंश भए गेल छल। भावुकताक संग परिस्थितिक सामंजस्य कए लेने छल आलोक। मुदा भावनाक तरंगमे बहि जाएब सेहो ओकरा पसिन नहि छलै। ओ अपन लक्ष्यपर अडिग छल। जीवनमे ओकरा बढ़बाक छलै। एही कारण ओ बहुत किछु स्वीकार कए लेने छल। मुदा ओ अपनहिसँ लगाओल लत्तीमे ओझराए नहि चाहैत छल। ओमहर मालतीक भावत्मकता सीमोल्लंघन करबाक हेतु उफान केने छल। आलोक एही कसामसीसँ परेशान छल। मुदा बीचमे संग्रामसँ भागि जाएब ओकरा मंजूर नहि छलै। ओ मालतीकेँ पढ़ए-लिखएमे भरिसक मदति करैक। गप्पो-सप्प कए लैक मुदा ओहिसँ बेसी किछु नहि। मालतीक मोन ओहिसँ भरैक नहि। असंतोषक रेखा ओकर चेहरापर स्पष्ट देखार भए जाइत छलै। संतुलन बनएवाक दृष्टिसँ आलोक कहिओ काल डाँटिओ दैक। मुदा मालतीकेँ ओकर डाँटो मीठे लगै।

आलोकक स्वभावसँ मालतीक पूरा परिवार प्रभावित छल। मुदा ओकरा लेल धनि-सन। ओकर पूरा ध्यान पढ़ाइमे लागल छलै। जे किछु समय बाँचल रहैक से मालतीकेँ पढ़बएमे लगा दैक।आओर किछु नहि। मालती ओ आलोकक प्रगाढ़ अन्तरंग सम्बन्ध ओकर माए-बापकेँ छलै मुदा ओ सभ आलोकक स्वभावसँ परिचित छलाह। मालती भलेँ बड़ भावुक छल, मुदा आलोकक संतुलित, संयत ओ अन्तर्मुखी व्यक्तित्व अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय छलै। ओमहर आलोकक अन्तर्मन ओकरा प्रति कएल गेल उपकारक भारसँ दबल छलै। ओकर किछुओ सहारा सधि जाइक ताहि हेतु ओ मालतीकेँ पढ़बैत रहैत छल।

बी.एस-सी. परीक्षाक मात्र दू मास शेष रहि गेल छलै। प्रतिदिन १०-१२ घन्टा ओ स्वयं पढ़ैत छल आ शेष समयमे मालतीकेँ पढ़बैत रहैत छल। परीक्षाक समय ज्योँ-ज्योँ निकट अएलै, ओ मालतीक पढ़ाइक प्रति अपेक्षाकृत अधिक सचेष्ट होमए लागल। ओकर एहि परिश्रमक परिणाम भेलै जे मालती पुनश्च प्रथम श्रेणीमे उतीर्ण केलक, संगे आलोक विश्वविद्यालयमे प्रथम स्थान प्राप्त केलक। एक बेर फेर ओकर घरक वातावरण आनन्दमय भए गेलै।

ओहि राति मालतीकेँ निन्न नहि भेलै। कहि नहि की की सोचैत रहि गेल। भोर भए गेल रहैक। चारू कात लोक काजमे लागि गेल रहैक। मुदा आलोकक कतहु पता नहि रहैक। किएक भेलै एतेक अबेर उठबामे? से सोचैत ओ आलोकक घर दिस बढ़ल। घरक केबाड़ी खूजल छलै। चौकीपर एकटा चिट्ठी राखल छलै।

मालती चिट्ठी खोलि कए पढ़ए लागल-

“प्रिय मालती!

बहुत रास गप्प करबाक मोन छल। मुदा कहि नहि किएक किछु बजाइत नहि छल। तोरो बहुत रास गप्प करबाक इच्छा रहल होएतौक सेहो हमरा बूझल अछि। तोरा लोकनिक उपकारक भारसँ हम ततेक दबि गेल छी जे आब एक्को घड़ी एहिठाम नहि रहि सकब। कहि नहि तोहर सभहक कर्जा किछुओ सधा सकबौक की नहि? माफ करिहेँ।”

तोहर

आलोक।

मालती आकाश दिस शून्य भावसँ देखैत रहि गेलि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

जगदीश प्रसाद मण्डलक

दूटा लघुकथा-

एकतीस मार्च

सरकारीए सूत्र जकाँ हमरो गाम सूत्रवद्ध अछि। जहिना सरकारी काम-काजक वर्षक एकतीस मार्चकेँ होइए आ एक अप्रीलसँ सालक शुरू, तहिना हमरो गाममे सालक अन्तिम काज मार्चक अन्तिम तारीखकेँ भेल। ओना, अपना ऐठाम अनेको तिथि-मिति अछिए। जेना एकटा भेल फागुनक फगुआ जे सालक अन्तिम पाबनियोँ आ सालक अन्तिम दिन सेहो छी, तहिना अंग्रेजीक एकतीस दिसम्बर सेहो अन्तिम दिनक तारीख भेल आ पहिल जनवरी सालक पहिल दिन भेल। तेतबे नइ ने अछि, बैशाखक प्रातसँ साल सेहो शुरू होइते अछि आ वैशाखी पाबैन भेल सालक अन्तिम दिन। अखाढ़ सेहो अन्तिम मास भेल आ सौन सेहो शुरू मास भेल। तेकर अतिरिक्तो अनेको तिथि-मिति सेहो अछिए। विद्यापतिक दिन-ठेकान ल.स. संवतसँ सेहो होइत अछि। खाएर जे होइए से सभ नीके तँ अछिए। बेसी लोकमे जँ बेसी तीथि-मिति नइ चलैत रहत सेहो नीक नहियेँ हएत, किएक तँ जनसंख्या बेसी रहने जँ तिथि-मिति कम रहत तखन तँ ओ ओहिना हेरा जाएत किने जेना सरकारी स्कीम हेरा जाइए। ओना, एते रहला पछातियो गोटे-गोटे हेराइयो जाइए आ भोथियाइयो जाइते अछि। जँ से नहि हेराएत-भोथियाएत तखन तँ एक्के पाबैन दू-दिना किए होइत। खाएर...। ओना, पाबनियेँकेँ की मुँह-नाङ्गैर अछि, गोटे पाबैन सालमे एके दिन होइए तँ गोटे-गोटे सालमे दू दिन। माने दू मासमे होइते अछि। जेना छठि पाबैन अछि जे कातिकमे सेहो होइए आ चैतमे सेहो होइते अछि, तहिना एहनो पाबैन तँ ऐछे जे सालमे तीन बेर, चारि बेर होइए। आ सेमासोक हिसाबसँ। जेना घड़ी पाबैन अछि एकर ने मासक ठेकान अछि आ ने दिन-तारीखक। किएक तँ जहिना सौनमे होइए तहिना दोसरो मासमे होइते अछि।तेतबे नहि,एक्के मासमे बुधे-बुध सेहो होइए आ शनिये-शनि सेहो होइते अछि। खाएर जेतए जे होइए, होइए। हमरा गामक तिथि-मिति सरकारी तिथि-मितिक संग चलैए,सेहो तँ कहले जा सकैए।

ओना, गाममे अपना-अपनीक सम्बन्ध सबहक बीच अछिए जे अपना-अपना मासक तारीखक हिसाबे वा तिथि-मितिक हिसाबे चलिते अछि। कोनो चैत-बैशाखक जे सूत्र अछि तइ हिसाबे अनहरिया-इजोरिया तिथिक हिसाबसँ चलैए तँ कोनो तिला-सकराँतिक मुँह-मिलानीक हिसाबसँ चलैए, माने जहिना तिला-संकराँइत अंगरेजीक चौदह जनवरीसँतहिना विश्वकर्मा पूजा सतरह सितम्बरसँ मुँह-मिलानी केनहि अछि। ओना, दुनूक मुँह-मिलानी एक रंग सेहो नहियेँ अछि। तिला-सकराँतिक हिसाबसँ मासक हिसाब सेहो चलैए, मुदा विश्वकर्मा पूजाक हिसाब सेहो संयासीक सहवास जकाँ असगरे परिवारो आ दिनो-ठेकान ठेकले अछि।

हमरा गामक सालक अन्तिम उत्सव सम्पन्न भेल, निर्गुण-सम्प्रदायक कबीर संत सम्मेलन अट्ठाइस सालक प्रौढ़ जवानक उत्सव छल। ओना, छिट-फुट ढंगसँ कबीर दासेक समयसँ माने मध्यकालक चौदहमी-पनरहमी शताब्दीसँ शुरू भेल। मुदा ओइ समयमे गृह-बासू कहियौ आकि गाम-बासूसे नइ भेल। हमरा गाममे शुरू भेल

अट्ठाइस बर्ख पहिनेसँ, लोचन दासकेँ महात्मा भेला पछाइतसँ। लोचन दास ओहन निष्ठित महात्मा तँ छथिये जे भीख माँगि भीख बँटै छैथ। जइसँ तीन गामक अधिकारी हिस्सेदार नइ भेला सेहो केना नकारल जा सकैए। खाएर लोचन दास जे छैथओ अपने छैथ मुदा समाजक तँ एते छेबे करैथ जे असगरो नुक्कर नाटक जकाँ सेहो आ छोट-पैघ भनडाराक बीच मंचपर चढ़ि सेहो अपन गामक संत-सम्मेलनक दल-हकार बाँटि-बाँटि निर्गुण विचारक शरबत घोरि-घोरि नइ पीआबैत छैथ सेहो केना नकारल जाएत। पीऐबते छैथ। ई तँ भेल सालक खुदरा-खुदरी कारोबार, असल होइए अन्तर्राष्ट्रीय निर्गुण सन्त सम्मेलन, जे कबीर सन्त सम्मेलनक नाओंसँ सेहो जानले जाइए आ मानलो तँ जाइते अछि। से भेल एकतीस मार्चकेँ। तीन दिनक सम्मेलन छल। पहिल दिन राशन-पानीसँ लऽ कऽ सभ तैयारी भेल आ दोसर-तेसर दिन भेल कीर्तन-भजनक संग प्रवचन।

नीक-नीक जानकारो आ विचारको महात्मा सबहक आगमन भेल छल। एक-सँ-एक महात्मा पहुँचल छला। सन्त-समागम खूब जमल, नीक उत्सव भेल। सरकारी योजना जहिना गोटे साल नीक दलक बीच संचालित भेलासँ नीक जकाँ सफलो आ सुन्दरो होइए तहिना ऐ साल हमरो गाममे भेल। माने ई जे सालक शुरूसँ अन्त धरि एकोटा पाबैन-तिहार ने दू-दिना भेल आ ने कटबी भेल। अपन-अपन मासो आ दिनो-बेरागन सबहक ठेकानपर रहलैन तँए एक-दोसरकेँ पुछनौं वा बिनु पुछनौं सभ एक-दिने ओहिना केलैन जहिना एक इंजिनक दूटा इंजीनियरकेँ एक्के रंग लूरि-बुधि रहने परोछो आ सोझहोमे एक्के रंग, एक धाराम काज संचालित होइत रहैए। ई तँ भेल आगू दिस चलनिहारक, मुदा एहनो तँ अछिए जेकर तिथि-मितिक दिशा भिन्न अछि, हुनकर जे दहिना छैन ओ अहाँक बामा भऽ जाइए। माने अहाँ जहिना हुनका आगू दिस बुझै छिऐन तहिना ओहो अपनाकेँ आगूए दिस बुझै छैथ, मुदा अहाँक मासक विपरीत हुनकर मास भऽ जाइ छैन, जइसँ अहाँकेँ विपरीत दिशा देखाए पड़ैए। तँए, अन्तर मात्र एतबे भेल। मुदा अपन-अपन परिवारक आ अपन-अपन समाजक बात जखनबसिया भात खेनिहार जकाँ माने साँझक भोरे बिसरनिहार जकाँ, लोक बिसैर जाइए तखन साल भरिक पाबैन-तिहार मन किए रखता, किए कोनो पाबैनक नीक-बेजाएक विचार करत, चौरचनक दही आ खीर-पुड़ीसँ हुनका मतलबे की छैन। छठिक कुशियारक खोंइचाकेँ मुँहक दाँतसँ सोहि-सोहि गुल्ला काटि-काटि किए रस-पान करता। जखन कि देखते छी जे बनले-बनल गुल्लो आ बनले-बनल लालमोहनो बजारमे टटके भेटै छइ। किए कुशियारक मिल बनि लोक रस पीता..? अहाँ भलेँ बुझिऐ जे टटका रस चुसै छी, मुदा ओहो तँ तिरपेखैन करि कऽ घुमलै रहै छैथ किने। माने भेल कुशियारक रससँ आगू बढ़ि सक्कड़ वा राब बनिचाहेचीनी बनि चीनियाएल बोरमे डुमल रहिते अछि। खाएर जे अछि से अछि मुदा ईहो तँ अछिए जे धानक दौन करैकाल जहिना ऐगला बरद माने पैटक बरदकेँ दौड़-दौड़ चलए पड़ै छै तँ बीचला दोसरोक भरे चलैए आ मेहोता तँ सहजे मेहे बनल महियाइत चलिते अछि, तहिना समाजोक बीच समाजक ओहन लोक नइ छैथ सेहो केना कहल जा सकैए!सेहो तँ छथिए।

साधारण परिवारमे लोचन दासक जन्म भेल छैन। साधारण शिक्षा, माने गामक साधारण स्कूलसँ लोचन दास शिक्षा पौने छैथ। ओना, हमर गाम देखौआ साधु-महात्माक बड़का कारखाना छी, जइमे धनकुटिया मशीनसँ लऽ कऽ पनि-पटिया मशीन तक तैयार होइते अछि। माने ई भेल जे रौदी भेने बढ़ि जाइए आ बरसात भेने घटि जाइए। जइसँ जहिना देशमे एक-पाटीसँ दोसर पाटीमे, नेताकेँ जाइ-अबैमे देरी नइ लगैए तहिना हमरो गाममे अछिए। आन लोककेँ जरूरीए की छै जे पुछतैन अहाँ कौआ छी आकि मेना? एक सम्प्रादायसँ दोसर आ दोसरसँ तेसर सम्प्रदायमे लोक भदवरिया धार जकाँ ऐ खेतसँ ओइ खेतआ ऐ धारसँ ओइ धारमे बहिते

अछि। आन-आन गाममे जे होइत हौ मुदा हमरा गाममे तँ एहेन अछिए जे सेवकजी सभकेँ दरमाहा दए-दए महात्माजी सभकेँ संगमे रखए पड़ै छैन। जँ से नइ करब तँ सम्राजवादी दाहीमे महनथाना राखि केना सकब। तइ रखैले जँ कोनो कल-बल छुटि जाएत तँ अनेरे ने ओ कपारपर लदि जाएत। भाय, जखन देशमे महगी आएल तँ लोकोमे महंगी एबे करत किने।

लोचन दास परिवारिक महात्मा छैथ। पचास बर्खक लोचन दासक नमहर परिवार छैन। माता-पिताक संग तीन भैयारी सेहो छैथ। नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ घर भरल छैन्हे। निम्न परिवारमे रहितो लोचन दासक परिवारमे शिक्षाक स्तर गामक हिसाबे अगुआएल छैन्हे। ओना, आन गामक लोक हमरा गामकेँ जहिना संसकरिया मानै छैथ तहिना अगि-लगिया सेहो मानिते छैथ।

सन्त-सम्मेलनक समापनक तीन दिनक पछाइत लोचन दास भेटला। रंग-रूपसँ बुझि पड़ल जे लोचन दासक चला-चलती किछु बढ़ि गेल छैन। जइसँ तबाहियो[1] बढ़ि गेल छैन आ सम्मेलनक सफलताक खुशियो मनमे छैन्हे। मुदा से झँपाएल जकाँ बुझि पड़ै छल। चेहराक जे रूखि छेलैन ओ मेहनतक छेलैन तँए मलिन सेहो छेलैन्हे। ओना, गाममे सम्मेलनक जागृत उत्साह जगिये गेल छल जइसँ जहाँ-तहाँ माने दुआर-दरबज्जा, चौक-चौराहाक गप-सप्पक क्रममे सम्मेलन छेलैहे। होइतो अहिना छै जे परिवारमे कोनो नीक काजकेँ सफल भेने जहिना परिवारोमे तहिना समाजिक काजकेँ सफल भेने समाजोमे खुशीक लहैर उठिते अछि।

भेटते लोचन दासकेँ पुछलैयन-

"की हाल-चाल, महात्माजी?"

ओना, अखन तक 'महात्माजी'क प्रयोग लोचन दासक संग नइ करै छेलौं, उमेरोक हिसाबसँ आ समाजिक हिसाबसँ सेहो लोचने दास कहैत आबि रहल छेलिऐन। महात्माजी कहलासँ लोचन दासक मन चौंकलैन मुदा पानिमे उठल ज्वार जकाँ धीरे-धीरे असथिर सेहो हुअ लगलैन। तेकर कारण भेल जे हमरासँ पहिने,माने सम्मेलने दिनसँ बहरबैयो महात्मा सभ लोचन दासकेँ महात्मेजीक नाओंसँ सम्बोधन करै छेलैन। आ गामो-समाजक लोक सेहो सएह कहै छेलैन। जही धारामे हममहात्माजी कहने छेलिऐनतही धारक पानिमे लोचन दासक मन मिलि विलीन भऽ गेलैन, जहिना समुद्रमे उठल ज्वार विलीन भऽ जाइए।

लोचन दास बजला-

"अपना नजरिये बुझि पड़ैए जे सभ ठीके-ठाक अछि। तखन तँ यज्ञँ छल, हजारो रंगक काजक विहीत छेलैहे, तँएदोग-दागमे कोनो छुटि गेल हुअए सेहो भइये सकैए।"

लोचन दासक विचारमे सेहो सुधार भेल बुझि पड़ल। सुधरबे ने जीवनक सभ किछु छी। जेना-जेना अन्हार ससरैत जाइए तेना-तेना इजोत सेहो जिनगीमे पसरैत जाइते अछि। अन्हारसँ इजोत दिस अपनाकेँ सुधारैत बढ़ाएबे ने जिनगी भेल...। बजलौं-

"आब यज्ञक काजसँ तँ निवृत भऽ गेल हएब किने?"

लोचन दासक मन उधियाएल रहबे करैन, तँए भँसियाइत बजला-

"की निवृत्ति हएब! जखन मायामे पड़ले छी तखन निवृत्तिक कोन बात। जानियेँ कऽ ते सभ भगवानेक माया छी। जाबे ओ रहता ताबे मायाक अन्त थोड़े हएत। जहिना ज्ञानक संग अज्ञान तहिना कायाक संग

मायो ने सटले अछि। एकटासँ छुटब दोसर पकड़त, तखन तँ जोगो माया हुनके छिऐन। वएह पकड़ए चाहै छी से पकड़मे अबिते ने अछि।"

लोचन दासक चढ़ैत विचारकेँ आगूए-सँ घेरि बजलौं-

"बाहरक महात्मा सभ खुशीसँ गेला किने?"

'बाहरक महात्मा' सुनि लोचन दास बजला-

"बाहरक महात्मा तँ एते खुशी भेला जे संगे-संग चलैले कहै छला, दोसर-तेसर जगह सेहो सम्मेलन सभ छी। मुदा अखुनका समयमे गामसँ निकलैबला हम थोड़े छी। जहिना एते नमहर सम्मेलन पसरलतहिना ने ओकरा उसारैमे किछु समय लगबे करत।"

लोचन दासक मनमे जे छेलैन से बुझबे ने केलौं, तँए बजा गेल-

"से की?"

लोचन दास बजला-

"अखनो तक गामकेँ नइ चिन्है छिऐ?"

'गामकेँ नइ चिन्है छिऐ'सुनिते मनमे भारी धक्का लगल। धक्का ई लगल जे जइ गाममे जनैम कऽ अधवेशू भेलौं, तइ गामकेँ नइ चिन्है छिऐ। कहू जे एहनो होइ जे हमर कोन बात जे सात पुस्तसँ जइ गाममे रहैत आबि रहलौं हेन, तइ गामकेँ अखनो धरि नहि चीन्ह पेलौं। मुदा पैछलो पुस्तक कियो चिन्हलैन आकि नइ चिन्हलैन। जँ चिन्ह पौने रहितैथ ते एक-दोसरकेँ चेतौने रहितथिन किने जे आँखिये-मुहेँ बढ़ैत हमरो लग तक आबि गेल रहैत। फेर भेल अनेरे जे मनकेँ एते औंटै-पौड़ै छीसे बेकार। किए ने लोचने दाससँ पुछि लिऐन जे केना नइ गामकेँ चिन्ह सकलौं।

पुछलयैन-

"से की यौ लोचन दास?"

लोचन दास बजला-

"केते गाममे एहेन होइए जे नवका-नवका कम्पनी सभ गाममे टेन्ट-समेना पसाइर बड़का-बड़का करतब करए अबैए आ गामक लोककेँ ठकि-फुसिया हाथ मारि भागि जाइए।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"से ते सदिकाल अखबार-रेडियोमे सुनिते रहै छी।"

लोचन दासकेँ जेना सह भेटलैन तहिना अपनाकेँ सहियारैत बजला-

"लगले सन्त सम्मेलन समाप्त भेल अछि। गाममे महायज्ञ भेल, केते रंगक काज भेल, जइमे किनकर की आएल छैन वा किनकर की देनी-लेनी अछि से जँ नीक जकाँ नइ फरिछा लेब आ जँ तइ बिच्चेमे गाम छोड़ि देबतखनतँ अनेरे ने बकियौताबला सभ बजता जे फल्लाँ एक-नम्बर ठक अछि।"

'ठक' तँ बुझल अछि, माने ठकैबलाकेँ लोक 'ठक'कहैए मुदा 'एक नम्बर ठक'की भेल से बुझबे ने केलौं। बजलौं-

“महात्माजी, ठको एक नम्बर आ दू नम्बर होइए! ठक तँ सहजे ठक भेल, ओइमे एक-नम्बर-दू-नम्बर माने शुद्ध-अशुद्ध की भेल?”

नव जागरण एने जहिना नव-नव अनेको रंगक जागरण हुअ लगैए तहिना लोचन दासकेँ सेहो भेलैन। ओना, लोचन दास गाम-घरसँ बहुत पहिनेसँ बहराए लगल छला। माने अट्ठाइस सालक सम्मेलनसँ पहिनहिसँ बाहर आएब-जाएब शुरू केने छैथ। मुदा ऐ सालक सम्मेलनमे एकटा नव जागरण एलैन। ओ ई जे कबीर सम्प्रदायक सम्मेलनक मंचपर लोचन दास सोल्होअना अपन मातृभाषा माने मैथिलीक प्रयोग केलैन। जे सुनलो छल आ बुझलो छल। लोचन दासकेँ बुझैमे आबि गेल छेलैन जे कबीर दास सधुक्कड़ी भाषा माने साधल भाषा क प्रयोग अपन भजन-कीर्तनक संग रचनोमे केने छैथ। हजारी बाबू[2] सन ज्योतिषी कबीरकेँ भाषाक तानाशाह कहने छैन। तँए ओइ गम्भीर रहस्यकेँ जाधैर अपन मातृभाषामे मातृवत बाल-बोधकेँ नइ सिखौल जाएत ताधैर शब्द-जालमे लोक फँसल रहि जाएत किने, तँए...। ओना, अखन धरि माने पैछला यज्ञ धरि, लोचनो दास ओही अष्टधातुक भाषामे बजैत आबि रहल छला आ अहू बेर सम्मेलनमे बहरबैया महात्मा सभ ओही धारमे डुमकी लगेबे केलैन।

ठकक ठकपनक चर्च करैत लोचन दास बजला-

“एक नम्बर ठक भेल जे एक नम्बर काजक (यज्ञक) बीच ठकैए आ दू नम्बर भेल जे ओइसँ भिन्न अछि, माने जे झूस-झास काज रहल ओइमे ठकैए।”

ओना, मनमे उठल जे लोचन दासकेँ एक-नम्बर दू-नम्बर काज सभकेँ बिलगा कऽ पुछि लिऐन मुदा ओहो काजमे रहैथ तँए औगुताएल रहैथ आ अपनो काजमे रहने औगुताएले रही। मुदा जँ समुद्र स्नान कएल लोक रस्तामे भेट जाथि आ हुनकासँ टोको-चाली नइ करी सेहो केहेन होएत, तँए लोचन दासकेँ टोकने छेलिऐन।

काजकेँ छिपियबैत बजलौं-

“अपन मन खुशी भेल किने लोचन दास?”

बेरागी जकाँ लोचन दास बजला-

“दुनियाँ कि चुमक-लोहसँ कम अछि। जेते दुनियाँकेँ छोड़बै ओते दुनियाँ पकड़त।जहिना चुमक-लोह साधारण लोहमे कखनो मुड़ी दिससँ सटि जाइए तँ कखनो नाङ्गैर दिससँ तँ कखनो पएर दिससँ, तहिना ने दुनियोँक आकर्षण छीहे।”

लोचन दासक विचारमे ओतेक रस नइ भेटल जेतेक हुनकर देहक चुलबुली रहैन। तँए मन मधुआ गेबे कएल। मुस्की दैत बजलौं-

“से की यौ लोचन गोंसाइ?”

अपन मनक किछु समस्या लोचन दासक छुटलैन तँ किछु समस्याक फँसरी लगि गेलैन। से फँसलैन शारीरिक रूपसँ सेहो आ मानसिक रूपसँ सेहो। मुदा लोको-लाज तँ आँखिक पानि उतारिते अछि। केना लोचन दास बजता जे अखन धरिक अपन शारीरिक क्रिया जे रहल अछि, ओइमे सँ अदहासँ बेसी बदलैक समस्या अछि। तहिना अष्टधातुक जे भाषा बजै छीतेकरो एकधातुक बनबए पड़त। नहि तँ जिनगी ओझरा जाएतव्याकरणक धातुए-पाठमे। मुदा गामोमे तँ टोले-टोल भनडारोमे यएह अष्टधातुक भाषाक प्रयोग करैत आबि

रहल छी। अपन मातृभाषा, माइक सदृश वाणी छी जे पानिमे पाथर जनमा मनुखक निर्माण करै छैथ, मुदा बच्चोक लेल तँ वएह ने भेली जे बच्चा बुझि नहि पबैए। मुदा गामो तँ गाम छी, लगले लोचन दासकेँ अपन भाषामे बजिते कहतैन- भुसकौल महात्मा छैथ।तँए भुसकौलसँ तेज महात्मा बनैक बाट लोचन दासकेँ धड़ए पड़तैन, से बुझिये ने पेब रहल छला, मन उड़ल-उड़ल जकाँ भइये गेल छैन। लोचन दासक मन उड़ैक कारण भेल छेलैन जे जेते-दूरक अपन कर्मभूमि बुझि कर्म कऽ रहल छी ओइमे भाषाक रूप बदलब। ओना, ई भाषाक रूप बदलब नइ भेल। किएक तँ विषयक गम्भीर रसक अनुशीलन करबाक सभसँ नीक भाषा भेल मातृभाषा। मातृभाषाक माने एतबे नइ भेल जे मुँहक बोली छी। ओकर माने ईहो भेल जे मातृभाषाक मातृभूमि सेहो अछि जइमे वस्तुगत सेहो आ वस्तुक रस-रहस्यगत सेहो अछिए। जइसँ सहजे दुनूक बोध होइए। तँए मातृभाषा मातृवत् होइते अछि। अही बीचमे लोचन दास,अमतीक काँटक झौंखरी जकाँ झँखुरीमे ओझरा गेल छला, जे कनी-मनी अपना आभास जकाँ बुझि पड़ल। तँए तोष-भरोस दैत बजलौं-

"लोचन गोंसाइ, जिनगीए-कैँ तँ लोक संघर्ष कहैए। से की कोनो ओहिना कहैए, जखने कियो अपन विवेकी बीआकेँ विचारक खेतमे रोपि ओकरा गाछकेँ तामि-कोरि, पटबए-सींचए लगैए आकि रंग-बिरंगक कीड़ियो-मकौड़ी आ रौदो-बसात ओकरा नष्ट करै पाछू लगि जाइ छइ। तँए, जँ रोपनिहार हारि मानि लिअए तँ वएह ने भेल रणभूमिसँ भागब।"

अपना विचारे बाजल छेलौं जे यएह विचार माने अप्पन बुझल विचार लोचन गोंसाइ सेहो बुझता मुदा से भेल नहि। लोचन गोंसाइक मनमे रणभूमि चढ़ल रणी जकाँ अपन संकल्पक दृढ़ता जगि चुकल छेलैन तँए ओइ दृढ़ताकेँ अगुअबैत बजला-

"भाय साहैब, बिनु संकल्पक मनुख ओहने जेहेन बिनु फूलक वा फलक लहटगर गाछ होइत अछि, तँए...।"

'तँए' कहि लोचन गोंसाइ ठमैक गेला।मुहसँ निकालैक क्रममे एकाएक रूकि जाएबएकर जरूर किछु कारण भइये सकैए। पुछलयैन- "तँए कहि किए रूकि गेलौं?"

लोचन गोंसाइ अपन बेवसी देखबैत बजला-

"भाय साहैब, केतेक दिन एहेन अपनो मनमे भेल अछि जे बाजि कऽ केकरो किछु गछलिऐ आ पूरा नइ पेलिऐ। लोकक तँ कथे कोन जे नगरक दशमीक डगरक ढोल जकाँ ढनढना जाइए आ करनी-धरनी किछु रहबे ने करै छइ।"

सएह अपनो 'अपनो' कहि लोचन दास अपन संकल्पि विचारकेँ मनेमे रखि मुँह बन्न कऽ लेलैन। मनमे भेल जे भरिसक कोनो एहेन काज मनमे जरूर छैन जेकर भारीपन देख घबरा रहल छैथ। तैसंग अपना मनमे ईहो भेल जे जाबे कियो अपन विचारकेँ दोसरा-आगू प्रकट नइ करत ताबे काजक रूप मनमे बदलियो सकैए। बदलैक अनेको रंगक परिवेशो सभ अछिए। तँए कोनो संकल्पित विचार ताधैर मूर्त रूपमे नइ उठैए जाधैर दोसराक आगू ओइ मूर्तिक क्रिया-कलापक रूप प्रकट नहि होइए। माने भेल, कोनो विचारकेँ बेवहारिक रूप बनबैमे ओकर रूपकेँ नीक जकाँ सजबैक प्रक्रियाक विचारक अदान-प्रदान करैत एक सीमा निर्धारण करब...।

बजलौं-

"लोचन गोसाँइ, एना जँ सिदहाक चाउरकेँ मुड़ी-छोपा तम्मासँ नपबै तखन ते परिवारमे केते लोक अधपेटे रहि जाएत।"

जहिना मीठो दबाइ भारी रोगकेँ असानीसँ भगाइये दइए, तहिना ने मीठ वाणियो छी, मुदा ओकर निशान धनुषपर ठीकसँ बैइसै। से भेल, भेल ई जे लोचन गोंसाइ ब्रह्मचारी जकाँ बजला-

"भाय साहैब, ऐ बेर सम्मेलनसँ पहिने मनमे रोपि नेने छेलौंजे भनडारा-सँ-मंच धरि अपन मातृभाषा- मैथलीमे बाजब, से केलौं।"

लोचन गोसाँइक विचार सुनि मनमे खुशी भेल। बजलौं-

"ई तँ घीबोसँ चिक्कन काज केलौं!"

'घीसँ चिक्कन'सुनि लोचन गोसाँइक उत्साह जेना दोबर रूपमे जगलैन। केना नइ जगितैन, जँ कोनो एहेन अकाट विचार जिनगीमे अकाट काजक रूप बेवहारमे अबैए ते यएह ने भेल बेवहारिक जीवन...। लोचन गोसाँइ बजला-

"सन्त सम्मेलनक अन्तिम दिनक घड़ीमे मंचपर अपन संकल्पित विचारकेँ उद्घोषित करैत बजलौं- आइ एकतीस मार्चक संग गामक ऐ सालक अन्तिम उत्सव सेहो छी। आइ दिनसँ घर हुअए कि बाहर, अपन मातृभाषा- मैथिलीमे अपन विचार व्यक्त करब।"

लोचन गोसाँइक संकल्पित विचार सुनि मन मुस्कियाए लगल। मुस्कियाइते कहलयैन-

"लोचन गोसाँइ, अनेरे जे आइ मोटका रस्सासँ अपन विचारकेँ बन्हलौंसे जँ शुरूहेसँ पतरको डोरीमे बन्हैत आएल रहितौं ते आइ एहेन रस्साक जरूरत थोड़े पड़ैत।"

लोचन गोसाँइक आत्मबलक संग आत्मज्ञान सेहो छिटैक चुकल छेलैन। बजला-

"जहिना जिनगीक पाछू जीआलसँ मरने धार तक अछितहिना ने आगूओ अछि, मुदा जखन लंगोटा धारण कऽ लेलौं तखन डुमी आकि मरी तेकर कोनो परवाह नहि, जे हेतइ से देखल जेतइ।"

लोचन गोसाँइक चपचपी देख अपनो मन चपचपा उठल। बजलौं-

"लोचन गोसाँइ! अपनो ते पैछला जिनगीक किछु अनुभव करैत हेबइ?"

प्रशान्त चित्त लोचन गोसाँइ बजला-

"भाय साहैब! असलमे हम अपने घरमे हेरा गेल छेलौं..!"

मनमे उठल- जखन अपने घरमे हेरा जाएबतखन रहब केतए! केतौ जँ रहबो करब तँ ओ हेराएले रहब किने! फेर मनमे उठल- एना उट-पटाँग बात लोचन दास बजला किए? पुछलयैन- "से की?"

लोचन गोसाँइ बजला-

"भाय साहैब, अपना मनमे होइ छेलए जे हमरा मैथली बजैक-लिखैक लूरि नइ अछि। तँए, हहैर कऽ हेरा गेल छेलौं।"

q

शब्द संख्या : 2814, तिथि : 10अप्रैल2018

गेल माघ उन्नतीस दिन बाँकी

बन्धुवर हम सभ ओही मिथिलाक बासी छी जे अपन कोखिसँ ओहेन मनुख पैदा करैत आएल छैथ जे अपन सुधिसँ समाजक प्रवर सुधिमे सपृक्त होइत रहला अछि। एहेन सुभावक बीज-बपन मिथिला सभ दिन करैत आबि रहल अछि आ आगूओ करैत रहत। एहेन-एहेन सुधिजन सभ कालखण्डमे होइत रहला अछि जे सीमामे बँटल गाम समाजक बीच टहैल-टहैल परिवारक संग आगत-भगतक सुधि रखिते आबि रहल छैथ। ओना, समाजक बीच रंग-बिरंगक कुधार सेहो सभ दिन पनपैत रहल अछि आ अखनो पनैप रहल अछि, जेकर अनेको कारण दैवीसँ मानवीय धरि रहल अछि। मानवीय भेल हजारो बर्ख परतंत्र रहब।ओना, परतंत्रता सबहक नजैरमे आबियो ने रहल छैन, तेकरो अनेको कारण अछि। बाहरी शासकक बीच रहने, मिथिलांचलक जे जन्मजात समाजिक सरोकार रहल ओइमे रंग-बिरंगक विघटन होइत रहल। जे परतंत्र बेवस्थाक सोभाविक गुण होइ छइ। दोसर भेल, दैवी विघटन। अनेको धार-धुरक बीच बसल मिथिलाक भूमि अछिए। धारो तँ धार छी, जहिना नीक लोहाक चक्कू सुपारीक संग हाथक ओंगरियो काटि दइए मुदा भतलोहक चक्कू बुते हाथक ओंगरीक कोन गप जे धारपर चढ़ला पछातियो सुपारी छिछैल कऽ कुदि उड़ैए। तहिना ने भूमिमे बहैत धारो अछि। ओहूमे कोनो-कोनो धार पनिबहो अछि आ कोनो-कोनो पनिबाहाक संग अगिवाहो अछिए। भाय, धार छहक! तोरो बसैले तँ भूमि चाहबे करी, सएह ने। ई की भेल जे जहिना कोसी तहिना कमला गामक गामकेँ काटि-खोटि-उजाड़ि-पुजाड़ि कऽ अपना पेटमे समा लइए आ मधुमाछीक ठीक विपरीत- पाछूसँ बलुअबैत अबैए..! मधुमाछी भलेँ फूलक रस चुसैए मुदा ओ मधु ने उत्सर्जित करैए। ओना, सभ धार ओहने अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। बागमती, तिलजुगा अपन हजारो बर्खसँ ओही घर-घाराड़ीकेँ धेने आबियो रहल अछि आ अपन जलधाराकेँ सेहो बरकरार रखने अछि।

तैसंग, मौसमक चाल-चूल सेहो कम अछि से केना नै कहल जाएत। अपना सबहक सौभाग्य बुझू आकि दुर्भाग्य, समुद्रसँ बहुत हटल छी। हवा-बिहाड़िक करामाती तँ समुद्रो छीहे किने। मिथिलांचलक चौहद्दीमे जहिना पच्छिमसँ बलुआह इलाका भरल अछि तहिना पूबसँ सेहो जंगल-झाड़ आ पहाड़क इलाका अछिए। खाली दच्छिनक जे समुद्र अछि ओ ओतेक दूरपर अछि जे अपना सभ दिस अबैत-अबैत ओकर पाबरे ढील भऽ जाइ छइ। रहल पूबसँ, कोणा-कोणी तँ से जरूर थोड़ेक प्रभावी अछि। तैसंग हजारो किलो मीटर हटल सेहो अछिए। जेकरा बंगालक खाड़ी कहै छिऐ ओइसँ उठल जे हवा-बिहाड़ि आकि पानि-पाथर रहल, ओकरा अपना सभ दिस अबैत-अबैत अदहोसँ बेसी शक्ति क्षीण भऽ जाइ छइ। जँ से नइ क्षीण होइ छै तँ किए असाममे अपना सभसँ दस गुणोसँ बेसी बरखा होइए आ अपना सभकेँ ओकर दशांसोसँ कम होइए। जँ ओते होइत तँ आम नइ खइतौं सएह ने। किएक तँ ओमहुरका आममे पकैसँ पहिने पीलुआ पकैड़ लइए, मुदा नारियल आ सुपारीक धनीक तँ हेबे करितौं। जखने सुपारी जोड़ पकड़ैत तखने ने पानमे सस्ती अबैत। अपना सभकेँ आरो चाही की, भरि मुँह पान भेल, जिनगी पानिसँ भरि गेल! खाएर जे भेल, अपन-अपन तकदीर की मनुखेटा केँ होइ छै आकि माटियो-पानिकेँ होइते छइ...।

मौनसुनक हिसाबसँ जहिना अपना सबहक माटिमे बारहो मास सृजन शक्ति रहै छै तहिना जँ समुचित ढंगसँ ओकरा बेवस्थित कएल जाए तँ सचमुच मिथिलाक माटि-पानिमे ओहन उर्वर शक्ति अछिए जे सोनोसँ सोनम वस्तु पैदा करत। पूबसँ अबैत मौनसुनी बरखा अपना ऐठाम मध्यम श्रेणीक भऽ जाइए, जेना-जेना पच्छिम जाइए तेना-तेना निम्न होइत जाइए आ उत्तर प्रदेश टपैत-टपैत ओहो मेटा जाइए, जइसँ पच्छिमक राज्य पंजाब, राजस्थान बरखा विहीन राज्य भऽ जाइए। उत्तरसँ मिथिलांचलक कोन बात जे सौंसे देशेक सीमा कश्मीरसँ अरूणाचल प्रदेश तक पहाड़-जंगलसँ तेना घेराएल अछि जे उत्तरवरिया कोनो आफत-असमानीक संभावनो ने अछि।

ऊपरक जे किछु भेल ओकरा ऊपरे-ऊपर बुझू, किए तँ ओ भेल देश-दुनियाँक जे आड़ि-धुर अछि से, मुदा मिथिलांचलक जे अप्पन आड़ि-धुर अछि ओ मिथिलावासी छोड़ि दोसर बुझियो केना पौत। हँ! ई जरूर भऽ सकैए जे मिथिलाकेँ जानै-चिन्हैले मिथिलामे बास करए पड़त। बिना से केने जँ मने-मन मनकेँ मनाइयो लेबतैयो चुकबे करत। किएक तँ मिथिला की कोनो माटिये-पानिटा मे अछि आकि मनुखसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछ, माल-जालआचिड़ै-चुनमुनी तकमे। आ सेहो की कोनो इग्गी-दुग्गी अछिसे नहि, अकास-सँ-पताल धरिमे पसरल अछि। जँ से नहि, तखन किए लोक बजैए जे 'मिथिलांचलक पतलिया पानि पतलिया मनुखक मनपोसक छी।' चिड़ैयो-चुनमुनीमे देखते छी जे एक दिस जहिना सुग्गा वेद-पाठ करैए तँ दोसर दिस टेंटियाहा सुग्गा टाँइ-टाँइ करैत लोकक सुर्जमुखी-फूल उपटबैए। एकरा केना नकारल जाएत। ओना, मानै छी जे कागभुशुण्डी सन महाज्ञानी कौओ अछि, मुदा कारकौआ उपैट रहल अछि, सुड़डाह भऽ रहल अछि, की एकरा नकाइर सकब? कोसी-धारक पानि भलेँ देखबोमे सौन्दर्ययुक्त आ पीबैमे सेहो पोखरिआनि नहि हुअए, मुदा तँए कि कमलो पानिकेँ सएह कहबै? एक तँ पाँकसँ पँकियाएल पानि, तैपर गाबिस उस्सर माटि तेना ने अपनामे घोरि लइए जे देखते मन मानि जाएत जे ई उसराह-नोनछराह सुआदक हेबे करत, भलेँ जखन कण्ठ सुखि कऽ प्राण उत्सर्जन करए लगए, तखन ओकरा पकैड़ कऽ रखै-खातिर एक-आध घोंट ओहो पानि घोंटि लेब आवश्यक भइये जाइए, नहि तँ जेतेक परहेज हुअए ओतेक नीक। खाएर जे अछि, ओ धार-धुर आ सुग्गा-कौआ जानए, मुदा अपना सभ तँ अपन-सभ ने भेलिऐ, तँए अपनैतीक विचार तँ करए पड़त किने। गतिक हिसाबसँ अपना ऐठाम[3] तीन रंगक मौसमक स्पष्ट रूप देखैमे अबैए। ओ भेल, जाड़, गरमी आ बरसात। ऐ तीनू मौसमक बीच चारि-चारि मास अछि। ओ चारू मास चारि रंगक, क्रियाक अनुसारे भइये जाइए। जेना, जाड़सँ गरमी धबैमे रसे-रसे जाड़ पाछू हटैत जाइए आ गरमी धबैत जाइए, जे बढ़ैत-बढ़ैत अपन प्रचण्ड रूप धारण करैए। तहिना जाड़ो-बरसातक अछिए। ओना, अपना ऐठाम जहिना छह रीतुक चर्च अछि तहिना छह शास्त्रोक[4] तँ अछिए। मुदा तीन मौसमकेँ छह रीतुमे बन्हनौं तँ बेवधान रहिते अछि। किसानी जिनगीमे अन्नसँ लऽ कऽ फूल-फल तक आहार रहल अछि। मुदा ओकर जे क्रियागत जीवन अछि ओहो तँ अपन अछिए। किछु अन्नो आ फूलो-फल कम दिनक अछि माने कम दिनक फसिल, ओ तँ एक रीतु पकैड़ लेत मुदा जे चारि मास वा ओहूसँ बेसी दिनक अछि, ओ केना पकड़त। तँए,ऐठाम हरि अनन्त हरि कथा अनन्ताक स्थिति अछिए। ओना, एक दिन-राति मिला चौबीस घन्टामे बारह रंगक एक-रंगाह मौसम बुझि पड़ैए मुदा ओहू दू घन्टामे दू रंग नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। तहिना ओहू एक घन्टाक साठि मिनटमे साठि रंगक नहि अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत। जखन एक-एक मिनटक अपन अलग अस्तित्व रखने अछि तखन मिनटक भीतर साठि पलक किए ने हएत। मुदा से सभ नहि। दुनियाँक बीच जे अपना सभ बेछप छी, तेकर

मूल कारणमे ईहो एकटा प्रवल कारण रहल अछिए। जैठाम एकरंग मौसम एक गतिक मौसम सालक विशेष अंशमे रहततैठामक आ जैठाम दू-रंग, तीन-रंगक मौसम रहत तैठामक जिनगीमे अन्तर एबे करत। जखने जिनगीमे अन्तर औत तखने ओकर जिनगीक सभ क्रियामे अन्तर एबे करत।

दुनियाँक अधिकांश देश अही एक-रंग, दू रंगक मौसमक बीच अछि। मुदा मिथिलामे तीन रंगक मौसम अपन उग्रसँ उग्रतर रूप देखबैत रहल अछि। जे तीनू- शीतलहरी, लूआ बाढ़िक रूपमे विद्यमान अछि।

एक दिन माघ बीत गेल। संयोग ऐ सालक एहेन रहल जे पूसक पूर्णिमो आ सकराँतियो परसू एके दिन भेल। जइसँ बकेन महींस जकाँ लगैमे मास कबैया-ड्योढ़ नइ भेल। कबैया-ड्योढ़क माने ई जे कहियो-कहियो जहिना महींसक लगैक[5] समय अनिश्चित भऽ जाइए तहिना पूर्णिमो-सकराँतियोकेँ दू दिन भेने मासोक गति-विधि कबैया-ड्योढ़ भइये जाइए। से ऐ साल नइ भेल, एके दिन पूर्णिमोक हिसाबसँ आ सकराँतियोक हिसाबसँ पूसक अन्त भेल। जखने एके दिन पूसक अन्त भेल तखने माघक शुरूआत सेहो एके-दिन ने हएत, सएह भेल। करीब चारि बजे बेरुका समय, जखन टहलै-बुलैले निकलए लगलौं कि धक्-दे मास मन पड़ल जे आइ माघक एक दिन बीत गेल, उन्नतीस दिन बीतैले बाँकी अछि। जहिना माघक पाला, तहिना जेठक रौद आ भदवारिक बाढ़ि सेहो जनमारा छीहे..! तहूमे बुढ़-बुढ़ानुस आ बाल-बोधक लेल तँ सोलहन्नी दुर्काल..!

मने-मन गाम-समाजक हिसाब मिलबए लगलौं। पाँच साए घरक बस्तीमे आँगुरपर गनल सातटा ओहन बुढ़-बुढ़ानुस छैथ जे अस्सी बर्ख पार कऽ चुकल छैथ। बाँकी लोक ओकर निच्चे छैथ। तँए हुनका सबहक खोजे-खबैर लेब ने मनुखक मनुखता भेल। खोज-खबैर लेबक माने भेलजे अबैबला दुर्कालमे हुनका सबहक की स्थिति हेतैन आ अखन की छैन। ओना, बालो-बोधक संग एहने परिस्थिति अछि, मुदा बाल-बोधकेँ तँ माइयक आश्रय भेटैए, तँए जँ एकक एक आश्रयदाता भऽ गेल तँ ओ ओहेन समस्या नइ भेल, जेहेन बिनु आश्रयदाताक आश्रितक भेल। तहूमे समय एहेन आबिये गेल अछि जे परिवारमे बुढ़े-बुढ़ानुस परिवारक गाड़ाक घेघ बनि जाइ छैथ, जइसँ परिवारजनक मनक बीच एहेन विचार जनमिये जाइए जे कखन ई घेघ[6] हटत जे पिण्ड छुटत।

दुनियाँमे जीवनक लेल कोनो बाधा अछि तँ ओ अछि बुढ़ माता-पिताकेँ जीवित रहब। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहअ। समाजमे जखन जन्म नेने छी तखन समाजक दायित्व अपना ऊपर नइ अछि सेहो केना नकारल जा सकैए। तहूमे हम सभ मैथिल छी। बाल-बोध भलेँ किछु कहि दिअए, मुदा जिनगीक आधार वेद छी आ वैदिक पद्धतिये ने अपना सबहक जिनगीक क्रियाक प्रक्रिया भेल, ई बुझैत केना बिसैर जाएब।

चाह पीब, पान खाकऽ चद्दैर ओढ़ि गाम-समाज दिस विदा होइसँ पहिने पत्नीकेँ कहलयैन-

"गामे दिस जा रहल छी, तँए अबैक ठेकान निसचित नहियेँ अछि, अहाँ सभ किछु देखैत-सुनैत रहब।"

पत्नीक मनमे की शंका भेलैन से तँ ओ जानैथ मुदा बजली किछु ने।तइसँ अपना मनमे भेल जे भरिसक माघक जाड़ असगर काटब हिनका भारी बुझि पड़ि रहल छैन, तँए थकथका रहली अछि। नजैर उठा-उठा नखो-शिखक झाँकी देखए लगलौं आ शिखो-नखक। मुदा मनमे समाजक अस्सी बर्खसँ ऊपरक बुढ़-बुढ़ानुसक जिनगी नाचिये रहल छल, तँए पत्नीक लटारम ओहन मने ने बनए दिअ चाहै छल जे हुनकर लाड़-

झाड़क पाछू लगितौं। ओना, मनमे ईहो भेल जे भरिसक पत्नी चुपचाप आदेशक आशा ताकि रहली अछि..! तँए, विचारकेँ समेटैत बजलौं-

“ओनातँ गाममे साते गोरे अस्सी बर्खसँ ऊपरक छैथ, मुदा अखन पहिने रूपनी दादीसँ भेँट करब। किएक तँ ओ सभसँ बुढ़, करीब नबे बर्खक छैथ। ओना,अपनो परियास करब जे खाइ-पीबै राति धरि घुमिये जाएब, मुदा दुइयो-चारि घन्टा रूपनी दादीक संग नइ बिताएब सेहो केहेन हएत।”

पत्नीक मन सेहो एकाएक जेना पघिल गेलैनतहिना बजली-

“हमरा दिससँ दादीकेँ कहबैन जे सतरहटा एकादशी आ उनैसटा भादवक रबि केने छी, तइमे सँ पाँचटा एकादशी आ चारिटा रबि हम हुनका चढ़बै छिऐन,तँए नअ बर्ख आरो औरदाक गारंटी तँ भइये जेतैन।”

पत्नीक मुँह-मिलानी करैत बजलौं-

“कालिदासक मेघदूतसँ की हम कम छीजे अहाँक धर्मक बाट रोकब। पहिल वाणी अहींक समाद रहत। कुशल-छेमक पछाइत अपन विचारक गप-सप्प करब,मुदा तइ सभसँ पहिने अहींक अर्जी पेश कऽ देब।”

पत्नीक मन मुस्किया लगलैन, मुदा अपना शंका भऽ गेल जे पत्नी मजाक ने बुझि गेली। पत्नीक संग हँसी-मजाक आन जकाँ नहियेँ होइए, मुदा नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत। ओना, हँसी-चौल सम-सम्बन्धीक बेवहार भेल मुदा आनो संग तँ लोक करिते छैथ। पत्नी चुपे रहली तइसँ बुझि पड़ल जे आदेशक स्वीकृति भेट गेल। विदा भेलौं।

जेठुआ[7] छह बजेक सुर्जक अकबाल जे रहैए तइसँ बहुत कम अकबाल चारि बजे माघक सुर्जक भइये गेल छेलैन। सोल्होअना डुमल नइ छला, मुदा डुमलेक स्थिति बुझि पड़ै छल। अपना घरसँ करीब बीस बीघा हटल रूपनी दादीक घर छैन। तँए, जाइमे बेसी देरी नइ लगल।

रूपनी दादीक सम्पन्न परिवार छैन। ओना, पति मरि चुकल छैन मुदा दूटा जहिना समकस बेटा छैन तहिना दुनू पुतोहुओ छैन्हे। पोता-पोती, नाति-नातिनसँ सेहो परिवार सम्पन्न छैन्हे, तँए मनुखक दुख रूपनी दादीकेँ नहियेँ छैन। मनुखक दुख भेल- परिवारमे मनुखक घटबी। मनुखक घटबी नइ रहने आकि अपन जिनगीक निवृति क्रिया-कर्म[8] रहने मन खुशी छैन की नहि, से तँ रूपनीए दादी जनती मुदा दरबज्जापर पहुँचला पछाइत देखलौं जे माघ रहितो देह-हाथ मारि परिवारक कियो बैसल नहि छैथ, सभ अपन-अपन दिनक अन्तिम काजकेँ सम्हारि कऽ उसारैमे लगल छैथ आ घूर पजारि रूपनी दादी कलपर हाथ-पएर धोइ छेली।

जखने सरकारी बान्हसँ उतैर रूपनी दादीक दरबज्जाक रस्तापर एलौं कि कलेपर सँ रूपनी दादी बजली-

“बौआमोहन! ताबे घूर लग बैसह, हाथ-पएर धोने अबै छी।”

लहरैत घूर देख अपन मन चपचपा गेल। जहिना पियासल बेकतीक आगूमे पानि अबितेआकिभूखल बेकतीक आगूमे भोजन अबिते, चाहेजिज्ञासु बेकतीक आगूमे ज्ञान अबिते मन चपचपा जाइए तहिना अपनो मन चपचपाएल। घूर लग चारू भाग पुआरक बीरबा पसारल। चारि आँगुर खड़ाइ आ बीत भरिक लम्बाइ-चौड़ाइक बीरबा सभ छल। एकटा बीरबापर बैसलौं। ओना, मनमे ईहो छल जे दादी दहिना भाग बैसैथआ अपने बामा

भाग बैसब। मुदा से हिसाब मिलल नहि,किएक तँ घूरक चारूकात बीरबा पसरल छेलइआअसगरे बैसनिहार रही। सभ दहिने भेल आ सबहक-सभ बामे भेल। एकटा बीरबापर बैस सेरिया कऽ जखन घूर दिस हाथ बढ़ेलौं कि रूपनी दादी सेहो पहुँचली। पहुँचते जेना बुझि गेली तहिनाबीरबापर बैसते दादी बजली-

“आन सालसँ ऐबेरक समय नीक अछि।”

ओना, ऐठाम आएले छी कुशल-छेम बुझैले, तैपर रूपनी दादी नीक समय अपने मुहेँ बजली, तँए नीक भेबे कएल। अपना मनमे विचार छल जे माघ मास भेल जाड़क कड़कड़ौआ जुआन मास। पानियोँ-पाथर बनिते अछि। ओना, आन साल जकाँ शीतलहरियो नहियेँ भेल, मुदा जाड़मे थोड़-थाड़ कमी भलेँ हुअए मुदा जाड़ अपन जवानीक ताल नइ देखा रहल अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत। करसी[9]क तेहेन घूर छलजे बुझि पड़ल भरि राति दरबज्जाकेँ गरम केने रहत। जखन भूखल लोकक घरमे जँ कनियोँ अन्न रहल तैयो ओते कालक संतोष तँ ओकरा रहिते छै जे एते कालक अभाव नइ अछि। घूर तँ सहजे माघक घूर छी, गाड़ीक एक्सिडेन्ट जहिना सड़कपर होइए तहिना माघक जाड़क सड़कपर एक्सिडेन्ट नइ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। पुरना दम्मोकेँ उखाड़िते अछि आ देहो-हाथकेँ नि:चेष्ट बना जाम करैत निष्क्रीय सेहो बनैबते अछि, जइसँ रंग-रंगक रोगो-वियाधिक सृजन होइत रहैए।

ओना, घरपर सँ नियारि कऽ आएले छी जे रूपनी दादीक हालो-चाल बुझब आ जँ कोनो तरहक असुविधा हेतैन तेकरो निमरजना करब। मुदा से सभ किछु देखमे ऐबे ने कएल। अगुआ कऽ किछु पुछबो केहेन होइए, तँएबेकतीगत रूपमे रूपनी दादीकेँ किछु पुछबकेँ उचित नहि बुझिपरिवारेकेँ अगुआ बजलौं-

“दादी, अदहासँ बेसी जाड़क समय निकलिये गेल, मुदा जनमारा जाड़ तँ पछुआएले अछि। बच्चा सभपर नजैर राखब।”

रूपनी दादी बजली-

“से तँ रखनहि छी। आन साल जकाँ ऐ साल शीतलहरियो नहियेँ भेल। ओना, समयक कोनो ठेकान अछि।भाइयो सकैए।”

बजलौं-

“हँ, तँ समयक कोनो ठेकान नहियेँ अछि, शीतलहरी भाइयो सकैए आ नहियोँ भऽ सकैए। ओना, शीतलहरियोक कोनो ठेकान नहियेँ अछि जे केहेन हएत केहेन नहि। लोक तँ अपना जनैत प्रतिकारे करत किने।”

रूपनी दादी बजली-

“ऐ बेरक माघ तँ माघ जकाँ बुझियो ने पड़ैए। केते साल तँ अगहने-पूससँ तेना शीतलहरी लाधि दइ छल जे माघमे घरसँ निकलबो कठिन भऽ जाइ छल। ओना, तीसो दिनक माघक शीतलहरीसँ बँचैक ओरियान कइये नेने छी।”

दादीक विचार सुनि अपनो मन भँसिया गेल-

“दादी, अहीं सन-सन बुढ़-बुढ़ानुसक दिन पहाड़ जकाँ बनि जाइए।”

‘पहाड़ सन दिन’सुनि दादीक आत्म-शक्ति जगलैनतहिना मजगूत आत्म बलेबजली-

"बौआमनोहर! एकटा माघकेँ के कहए जे अस्सीक लगभग माघ भोगि चुकल छी। कहियो कोनो रूइयाँ भगन नइ भेल। आब तँ सहजे जीबैक लूरि भऽ गेल। माने माघ कटैक लूरि भऽ गेल। तहूमे एक दिन माघ बीतिये गेल। जहिना एक दिन बीतल, तहिना ने उन्नतीसो दिन, जे बाँकी अछि, सेहो बीतबे करत।"

रूपनी दादीक विचार-शक्ति देख अपनो विचार सक्कत भेल। बजलौं-

"दादी, घूरक आगि देख जाइ-के ते मन नइ होइए, मुदा...।"

रूपनी दादी बजली-

"मनोहर, बेर-बिपैतमे मनकेँ सक्कत बना कऽ राखी। दिन-महिना-साल अहिना अबैत रहत आ जाइत रहत। जखन जेहेन समयसँ पाला पड़ए, तखन ओइ पालासँ अपन निमरजना केना हएत, तैपर नजैर राखि अपन जीबैक लूरि बनाबी।"

q

शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15अप्रैल2018

---

[1]काजक तबाही

[2]डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

[3]मिथिलांचलमे

[4]दर्शनोक

[5]दूध दुहैक

[6]बुढ़-बुढ़ानुस

[7]जेठ मासक

[8]जीबैक विधि-बेवहार

[9]गोबरक सुखाएल गोला।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१. जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास)- आगाँ २.रबीन्द्र नारायण मिश्र- नमस्तस्यै (उपन्यास)- आगाँ

१

जगदीश प्रसाद मण्डलक

पंगु

उपन्याससँ...

3.

1945 इस्वी अबैत-अबैत गाम-गामक जे स्कूलक शिक्षक सभ जहल चलि गेल छला जइसँ स्कूल सभ बन्न भऽ गेल,ओहो सभ जहलसँ निकलला आ स्कूलो सभ खुजल। ओना, ने सभ गाममे स्कूलेछल आ नेसभ स्कूलक शिक्षक जहले गेल छला। हँ, ई बात जरूर छल जे अधिकांश स्कूलक शिक्षक जहल गेल छला, बाँकी डरे पड़ा कऽ घर धऽ नेने छला। घर धड़ैक कारण खाली अंगरेजी शासन द्वारा चलौल गेल दमन चक्रे नहि छल, ओहूमे दू रंगक विचारक छला। पहिल जे अंगरेजी शासनक समर्थक छला, तँए जनजागरणसँ डरि गेल छला आ दोसर ओहन विचारक लोक छलाजे प्राचीन पद्धतिक विचारसँप्रभावित छला।ओ सभ पुरान विचारसँ एतेक प्रभावित रहैथ जे अपनाकेँ मात्र एक निष्पक्ष गुरुतुल्य मानै छला, जइसँ देशक अजादीक आन्दोलनसँ ओ सभ अपनाकेँ सोल्हन्नी अलग रखने रहला। मुदा विषम परिस्थिति, माने लड़ाइ-दंगाक परिस्थिति देख अपन जिनगीक विचारकेँ समेट अपनाकेँ सुरक्षित रखैले स्कूल छोड़ि-छोड़ि घर धऽ चुकल छला।

स्कूल खुजिते दोसर-तेसर शिक्षक सभ आबि शिक्षण कार्य संचालित केलैन। सीतापुरक स्कूलमे सेहो पढ़ौनी शुरू भेल। पहिलुका स्कूलक सभ कागज-पत्तर जब्त भऽ चुकल छल। किएक तँ पहिलुका जे शिक्षक छला हुनकापर शासनद्रोहक अभियोग लगि चुकल छेलैन जइसँ साल भरिसँ ऊपरे जहलोमे रहला। स्कूल खुजला पछाइत पुन: विद्यार्थी सबहक नामांकन भेल। देवचरण सेहो अपन पौत्र हरिचरणक नाओं लिखा देलैन। ओना, बच्चाकेँ केतेक उमेरमे विद्यालय पठौल जाए, प्राचीन पद्धति की कहैए? मुदा तइ सभपर कोनो विचार नहि कएल गेल। बिना कोनो प्रमाण पत्रे, बिना कोनो जन्म-कुण्डलीए विद्यार्थी सबहक नामांकन भेल। पाँच बर्खक बच्चासँ पनरह-बीस बर्खक बच्चा, जेकरा वौद्धिक रूपमे अक्षर-बोध नहि छल,सबहकप्रवेश स्कूलमे भेल।

पढ़ल-लिखल, विचारवान शिक्षक भेने हुनका सबहक मन एतेक तँ मानिते रहैन जे समाजक प्रवुद्ध अंग होइक कारणे देशक सेवा हमरो कर्तव्य भेल। तँए बिना कोनो भेद-भाव केने अधिकांश शिक्षक विद्यालयमे पढ़बैत रहैथ। ओना, समाजक बीच विद्योपार्जनक लेल समाजिक रोक-राक नहि छल एकरो नकारल नहियेँ जा सकैए। किछु शास्त्रीय ज्ञान एहेन तँ छेलैहे जेकरा महिला आ बच्चासँ परहेज मानल जाइ छल। ओना, भागवतकथा गाम-गाममे चलैत रहइ। जइ आसनपर बैस व्यासजी[1] ध्रुव-प्रहलादक कथा सुनबैत रहथिनओही आसनपर ऋृषिकाक[2] कथा सेहो कहिते रहथिन मुदा समाजक बीच जे चलैन छल, माने समाजक जे गति-विधि रहै तइमे खोंच-खरोच नहि छलएकरो नकारल नहियेँ जा सकैए।शिक्षकक बीच सेहो जातीय बेवहारक प्रभाव रहैनजइसँ शिक्षक शिक्षकक बीच सेहो किछु-ने-किछु दूरी बनले छल।

1945 इस्वी बीतैत-बीतैत 1942 इस्वीक जे तूफानी आन्दोलन छल ओइमे किछु नरमी आएल। अंगरेजो बहादुर महसूस कइये चुकल छल, जे आब शासन सत्ता बँचाएब कठिन अछि।तँए सत्ताक हस्तांतरण करबे विकल्प अछि। जहलसँ आन्दोनकारी सभकेँ निकालल जाए लगल।गाम-गाममे जे गोरा-पल्टनक घोड़-दौड़ चलि रहल छल ओहो समटा कऽ केन्द्रित हुअ लगल। अपन देशक सत्ता अपन देशवासीक हाथ औत जे अपना ढंगे चलौत। अखन धरिक जे देशक शासनक इतिहास रहल ओ सिर्फ अंगरेजीए शासनटा नइ रहल, ओइसँ पहिनौं विदेशी शासन रहल। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे मुगल शासनक पछाइत अंगरेजी शासन आएल।

जहिना जेठ-अखाढ़मे रौदसँ जरल जमीनक जे धरतीसँ जुड़ल घास-पातक संग छोट-छोट जे गाछ-लत्ती छलओहो सभ जरि-सुखि चुकल छल, मुदा वादलक बर्खासँ धरती तेना सिंचाएल जे जरल-मरल, मौलाएल-टटाएल सभ गाछ-लत्ती जगि-जगि कऽ ठाढ़ भेल।

देशक अजादीसँ पहिने देशक जे-जे समस्या छल ओ 1945 इस्वीक पछाइत जखन देशक जन-गणक बीच बिसवास जगल जे आब अंगरेजी शासन टुटबे करत अपन शासन हेबे करत। बिसवास जगिते सबहक नजैर अपन-अपन जिनगीक बाधा-रूकाबटपर पड़लैन। पहिने निज समस्याक निदान आवश्यक, लोकमे ऐ तरहक विचार जगिते हजारो समस्याक उदय गाम-गामक समाजमे हुअ लगल।

किसानक देश भारत, किसानक बेटा देशकेँ अंगरेजी शासनसँ मुक्त कराअपन कल्याणकारी रस्ता पकैड़ आगू मुहेँ चलता, तँए किसानी लेल माटि-पानि, बीआ-बाइलिक संग खेती करैक लूरि सेहो चाही, तखने खेती अपना गतिये संचालित हएत।दिनानुदिन नव लूरियो आ साधनो भेने उपार्जन बढ़बे करत, जइसँ देश शक्तिशाली बनत। जखने देश शक्तिशाली हएत तखने देशक लोक शक्तिवान हेता। सबहक मनमे यएह आशो आ बिसवासो छेलैन्हे।

बकास्त जमीनक आन्दोलन उठि चुकल छल। मुदा ओइमे एकरूपताक अभाव रहल। गाम-गामक समाज वैचारिक रूपमे सेहो आ बेवहारिक रूपमे सेहो बँटाएल रहला। खेतक मर्मकेँ बुझनिहार जे किसान छैथ ओ इंच-इंच भरि जमीनक उपार्जित शक्तिकेँ नीकसँ बुझै छैथ, तँए ओहन किसान नहि छैथसेहो नइ नहियेँ कहल जाएत जे अपन खेतकेँ हगनार बना रूआबसँ बजै छैथ- 'जँ हम हगनार नइ दिऐ तँ लोकक हगब बन्न भऽ जाएत।'

अजादीक अन्तिम दौड़ अबैत-अबैत देशक समस्या दर्जनो राजनीतिक दल सेहो बनौलक। समस्याकेँ कोन रूपे समाधान कएल जाए, अधिकांश वेद-वक्ता सभ विचार करिते रहैथ। जइसँ पोखरिक जाठि लगक माटि उखाड़ि पोखरिक पानिकेँ थाहि लेता, ईहो तँ विचारक क्षेत्रमे अछिए। बकास्त आन्दोलन कोनो-कोनो गाममे शत-प्रतिशत सफल भेल आ कोनो गाममे खिच्चैड़ नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। भेल दुनू। खाएर जे भेल, किछु लोक अपना-अपना हाथे अपन-अपन भाग्य सेहो लिखलैन आ किछु गोरे या तँ लिखबे ने केलैन वा लिखि कऽ मेटा लेला। गाम-गामसँ जमीनबला किसानक बेटा गाम छोड़ि बजार दिस भागिये रहला अछि। अधिकांश लोक,चाहे ओ बुद्धिजीवी परिवारक हुअए वा मसिजीवी परिवारक,चाहे ओ किसान परिवारक हुअए वा औद्योगिक परिवारक वा खेतिहर-बोनिहारक परिवारक, गाम-घरसँ पड़ा कऽ किए बजारोन्मुख भेल अछि?

लाखो-करोड़ो जीव-जन्तुक बीच मनुख सभसँ ऊपर विवेकवान जीव मानल जाइत अछि, मानल नहि जाइत अछि वास्तवमे अछियो। कहैक क्रममे, जहिना मंचपर वक्ता बजै छैथ जे बरद बहैले[3] आ विवेकवान कहैले जन्मे नेने छैथ, तखन जँ से नइ हुअए तँ सेहो जुलुमे बात भेल। खाएर जे भेल, जहिना एक वक्ताक विचार ऊपर अछि तहिना दोसरो वक्ता तँ एहेन छथिए जिनक कहब छैन- 'जहाँ बसी तँह सुन्दर देशू। जहि प्रतिपालल सोइ नरेश।'

विचारणीय प्रश्न तुलसियो बाबाक छैन्हे, भलेँ ओ खिसिया कऽ कहने होथि वा भावसँ भवित होइत प्रेमाभावमे कहने होइथ।

साढ़े तीन हाथक मनुखकेँ दुनियाँ दिस देखैसँ पहिने अपन शकल-सूरत आन-आन जीव-जन्तुक शकल-सूरतसँ भजाइर लेबा चाही। कहैकाल तँ कहिये सकै छिऐ जे हाथी हुअए कि बाघ, भलेँ जंगलमे अपना शक्तिये ओ राजा किए ने बनल अछि,मुदा अपना रहैक घर बनबैक लूरि ने हाथीकेँ छै आ ने बाघकेँ, मुदा माटिमे रहैबला मूसो आ खिखिरो-नढ़िया ओहने अछि सेहो केना कहल जाएत।

बजार दिस गाम-घरक लोककेँ पड़ाइन करैक जरूरत किए पड़लैन? चाहे ओ कोसीक कछेरक लोक होथि वा कमला-बागमतीककछेरमे रहैबला, की ओ सभ ई नइ जानि रहला अछिजे दुनियाँक समृद्धिशाली शहर नदियेक कछेरेमे बसल अछि। दुनियाँक बात छोड़ू, अपने बिहारक जे प्रमुख शहर अछि ओ केतए अछि?

सभ कियो तँ यएह ने चाहै छी जे अधिक-सँ-अधिक शान्तचित्तसँ जीवन व्यतीत अपनो करी, परिवारो करए आ समाजोकेँ शान्ति भेटौ। मुदा तइले की खगता अछि आ केतए कोन रस्ता किए बाधित अछि, तैपर विचार के करत?विचारणीय विषय अछि जे केहेन जीवन चाही? जखने धरतीपर जन्म लेलौं, तखने भूख लगबे करत, जँ भूख नहि मेटाएब तँ शरीर खसैत-खसैत खसि पड़बे करब। ओना अन्नोसँ बेसी जरूरत पानिक अछिआ तहूसँ बेसी खगता हवाक अछि जे साँस लइ छी। मुदा ओ तँ प्रकृति अपन अकवालसँ सौंसे दुनियाँकेँ भरि देने अछि। ओना, अछि पीबैक पानियोँ आ भोजनो सामग्रीकपैदा करैक माटियो, मुदा ओइमे कनी मेहनतक जरूरी पड़िये जाइत अछि। धरतीसँ अन्न पैदा होइए आ निच्चाँ पताल आ ऊपर अकाससँ पानि टभकैए। तइमे मनुखक अपन तर्रदुत एते तँ बढ़िये जाइए जे तइले इनार, चापाकल इत्यादिक बेवस्था करए पड़ै छइ। ओना, अकासक पानि जहिना पवित्र बेसी अछि तहिना ओकर तर्रदुत सेहो कठिन अछि, मुदा असाधे अछि सेहो कहब उचित नहियेँ हएत। जखन कि तीनू साधन भरपुर अछिए। तखन अन्नक अभाव किए होइए? पानि दूषित केना भऽ जाइए? वायु प्रदूषित किए भऽ जाइए..?

विवेकवान मनुख रहितो जिनगीक मूल-भूत ढाँचासँ ओझल भेल छी। ओना, ओझल होइमे सोल्हन्नी अपने दोख अछि सेहो नहियोँ कहल जा सकैए। सर्वविदित अछि जे कोनो बच्चाक जन्म अज्ञानावस्थामे होइते छै, जेकरा जीता-जीवनक सभ शक्तिक बीज रहितो ओहन शारीरिक अवस्था होइ छै जे कछुआक बच्चा जकाँ नहि जे पानिक ऊपर देने दौड़ैत गेलौं आ अण्डा खसबैत गेलौं। ओइ अण्डाक शक्ति ओहन छै जे माए-बापक खोज नहि करैए, खगतो नइ होइ छइ। लगले अपने फुटि बच्चा भऽ जाइए। बच्चा होइते दौड़ैक शक्ति ओकरामे आबि जाइ छइ। दौड़ैक शक्ति अबिते अपन जीवनक भार उठा लइए। मुदा केतबो कछुआक बच्चा पनिगर किए ने हुअए मुदा ओ अपन माइयो-बापकेँ कहाँ चीन्हि पबैए? मनुख तँ से नहि छी। एकरा माता-पिता परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिक सहारा छइहे। मनुखक जीवनक लेल भोजन मूल छी। भोजनक उपरान्त

सभ्य समाजमे[4] जन्म नेने जुगानुकूल वस्त्रक आवश्यकता दोसर आवश्यकता भेल। जंगली जीव तँ मनुख आब रहल नहि, आबक मनुख तँ बहुत ऊपर उठि गेल अछि। जइ अनुपातमे जीवन अछि तही अनुपातक ने आवासो चाही, तहिना पढ़ाइ-लिखाइ,बर-बेमारीक इलाजक संग साहित्य-कला इत्यादि सेहो सभ चाहबे करी। यएह भेल मनुखक जिनगीक ढाँचा।

अखन धरि जे अन्धकार मनुख समाजक बीच व्याप्त अछि ओ प्रकृतिगत सेहो अछि आ कृत्रिमगत सेहो। समाजमे रूढ़वादी विचार, अन्ध-बिसवास जे पसरल अछिओ कृत्रिमगत अन्धकारक भारी स्त्रोत छी। रंग-रंगक अन्ध-बिसवास पसरलो अछि आ नव-नव शिरासँ पसारलो जाइते अछि। अखन बेसी नहि, अखन एतबे जे मिथिलांचलक मध्य जे दरभंगा-लहेरियासरायमे स्वास्थ्यक लेल अस्पताल बनल आ ओइमे आधुनिक ढंगक इलाजक जे बेवस्था भेल, की ओकर विरोध नइ भेल? खूब विरोध भेल। गाम-घरक जेतेक ठक-फुसियाह छल, सभ अपना-अपना ढंगे विरोध केलक। तँए की आइक मनुख ओकरा अधला बुझत। जीवनक एक मूल-भूत आवश्यकताक पूर्ति तँ भइये रहल अछि।

दुनियाँक बीच आजुक परिवेशक जिनगी केहेन बनए?ई तँ विचारणीय प्रश्न अछिए। अखन जेकरा शहर-बजार बुझै छी, ओइमे जिनगीक सभ मूल-भूत आवश्यकताक साधन बनि गेल अछि, जइसँ जिनगी असान भऽ गेल अछि। मुदा सीतापुर सन-सन गाम जे मिथिलांचलमे हजारो अछि, ओइमे किछु ने अछि!गामक जिनगी भारी बनि गेल अछि।तँए अपन मातृभूमिकेँ तियागि अपन शारीरिक मानसिक शक्तिकेँ जगा अपन-अपन परिवारक भरण-पोषण लेल एका-एकी सभ कियो दुनियाँक कोण-कोणमे जा बसि रहला अछि।

वैचारिक रूपमे अखनो हम मिथिलाक ओ रूप देखिये रहल छी, जे अदौक चिन्तनधाराक अनुकूल अछि। तँए हम सभ आजुक मिथिलाक चित्रांकन जँ नइ करब, तँ खाली जादू-टोना वा छू-मन्तर कहि देलासँ भए जाएतईसम्भव नहि अछि। हजार-लाख बरख पहिलुका सतजुग-त्रेतासँ निकैल आइ हम सभ एकैसम सदीमे पहुँच चुकल छी।

बकास्त आन्दोलन सीतापुरमे शत-प्रतिशत सफल भेल। शत-प्रतिशत सफल होइक पाछू दू कारण भेल। ने आन गाम जकाँ सतरह रंगक राजनीतिक दल छल आ ने अजादीक आन्दोलनमे सतरह रंगक विचार। काँग्रेस आ वामपंथी माने पूजीवादी आ समाजवादी मात्र दुइये विचारधारा गाममे छल। जखने काँग्रेस महाधिवेशनसँ बकास्त जमीनक प्रस्ताव पास भेल तखने सीतापुरक दुनू दल मिलि आन्दोलन रूपमे आन्दोलित भेल। जइसँ सफल भेल। ओना काँग्रेसी कार्यकर्त्ता जे छला ओ स्वामी सहजानन्दजीक विचारसँ प्रभावित छला आ अपनाकेँ स्वामीजीक भक्त सेहो बुझै छला।

सीतापुर गामक समाज सेहो देशकेँ कल्याणक दिशामे एक कदम बढ़ाएब बुझलैन। तँए आन गाम जकाँ ने सुदि-सवाइबला महाजन उठि कऽ ठाढ़ भेला आ ने भरना-बन्हकीबला भरनदार वा बन्हकीदार। तँए शान्तिपूर्ण ढंगसँ बकास्त आन्दोलन सीतापुरमे सफल भेल। मुदा बगलेक गाम रूक्मिणीपुरमे गधकिच्चैन भऽ गेल।

बीसमी शताब्दीक दोसर दशकमे[5] गाँधीजी बिहार आबि चुकल छला।जमीनक सिस्टम आ जमीन्दारी शोषण सुनला पछाइत आएल छला। तइसँ पहिने 1880 इस्वीमे काँग्रेस पार्टी विदेशी ह्यूम द्वारा बनि चुकल

छल। जइक भीतर गाँधीजी अपन कार्य संचालन केलैन। 1925 इस्वीमे वामपंथी पार्टी सेहो देशमे बनि चुकल छल। 1927 इस्वीमे सोसलिस्ट पार्टी सेहो बनि गेल।

रूक्मिणीपुर गामक सौभाग्य बुझी वा दुर्भाग्य वामपंथी[6] पार्टी नइ बनल। वामपंथीक रूपमे समाजवादी[7] आ दच्छिनपंथीक रूपमे काँग्रेस बनल। दुनूक आधार बदैल जातीय आधार बनि गेल। सभ तरहक माने ओकातिक हिसाब,सम्पैतिक हिसाब लोक दुनू पार्टीमे विभाजित भऽ गेला। ओना रूक्मिणीपुरक आमजन सेहो अंगरेजी हुकूमतक विरोधमे ठाढ़ भेल, मुदा नेतृत्व रहल सम्पैतशाली लोकक हाथमे।

बकास्त आन्दोलन उठिते रूक्मिणीपुरमे जातीय उन्माद उठि कऽ ठाढ़ भेल। जइसँ जातीय सत्ता जोड़ पकड़लक। देश स्वतंत्र नइ भेल छल मुदा जातीय उन्मादक केतेक रंगक विवाद गाममे ठाढ़ भइये गेल छल। मालगुजारीक लेल बैशाख-जेठ मासक रौदमे ईंटापर ठाढ़ करब सदृश केतेको घटना भऽ चुकल छल। छोट-छोट गल्तीमे पानिमे नहा घोरनक छत्ता देहपर झाड़ि चुकल गेल छल। गोला-लाठी भरि, भरि-भरि दिन रौदमे सजाए देल जा चुकल छल, वएह गाम छी रूक्मिणीपुर।

बकास्त जमीनक आन्दोलनक हवा उठिते रूक्मिणीपुरक सूदिखोर-महाजन उठि-उठि ठाढ़ भेल। जहिना काँग्रेस जातीय आधारपर भीतरे-भीतर विभाजित छल तहिना सोसलिस्ट पार्टी सेहो भइये गेल छल। नरमदल-गरमदल कऽ कऽ काँग्रेस आ सोसलिस्ट, प्रजासोसलिस्ट, संयुक्त सोसलिस्ट इत्यादि इत्यादि केतेको विभाजन दुनूक बीच भऽ चुकल छल। बकास्त जमीनक आन्दोलनसँ अगुआ गेल सूदिखोरी, महाजनी।

ओना, दुनू पार्टीक बीच एहेन सेहो भेबे कएल जे एक-दोसरकेँ अँखिया-अँखिया माने जातीय आधारपर बकास्त जमीनक आन्दोलन छिट-फुट रूपमे जरूर जागल। मुदा ओ सामुहिक नहि, राजनीतिक दलक अनुकूल जागल। जे मात्र विचारधाराक अनुकूल रहल, आन्दोलनक अनुकूल नहि। गामो तँ गाम छी। कोनो गाम एक जाइतिक तँ अछि नहि, जे किछु मुद्दापर एक भऽ चलबो करत। तहूमे रूक्मिणीपुर तँ आरो अजीव अछि। ऐ गाममे देवी-देवता, स्थान-धर्मशाला सभ किछु बँटाएल अछि।

रूक्मिणीपुरमे आठ कट्ठा जमीन दखल करैक प्रश्न उठल। गामक ई पहिल घटना छल। भेल ई जमीन दखल करैक प्रश्नपर एक जाइतिक शूमा बनल। काल्हि जमीनपर हर चढ़ौल जाएत। रातिये भरिमे रंग-रंगक योजना गाममे बनए लगल। आठ बजे भिनसरमे हर चढ़ैक समय जे निर्धारित छल, तइसँ पहिनहि, माने छबे बजेमे दू जाइतिक बीच एहेन मारि फँसि गेल जे दुनू दिससँ लहासे नइ खसल, एक दिससँ एकटा आ दोसर दिससँ दूटा मरबो कएल। अंगरेजक लड़ाइमे तँ रूक्मिणीपुरक एको गोरे जहल नहि देखने छला मुदा साल भरि दुनू जाइतिक लोक जहलेमे रहला, ईहो हिसाब तँ अजादीक आन्दोलनेक अंग ने भेल। आकि नइ?

q

शब्द संख्या : 2092, तिथि : 21मई2018

[1]भागवत बचनिहार

[2]वैदिक विदुषीक

[3]हरजोतैले

[4]विकसितसमाजमे

[5]1917 इस्वी

[6]कम्युनिष्ट

[7]सोसलिस्ट

२

उपन्यासकार रबीन्द्र नारायण मिश्रक

नमस्तस्यै

उपन्याससँ...

६.

जँ पुष्पा नहि रहैत तँ कहि नहि हमर की गति होइत? हमरा मारि देल जाइत कि कतहु कोनोठाम बेचि देल जाइत?की होइत तकर किछु अनुमान करब कठिन अछि, कारण मोछा ठाकुर आओर ओकर संगी सभ तँ राक्षस छलहे। पैसा,रूपैआक आगू किछु नहि सुझाइक। मुदा कि हस्र भेलैक? कहाँ गेलै ओकर घमण्ड? अत्याचारक पाराकाष्ठा कए ओ सभहक श्राप लेने कहाँ टीकि सकल?

मोछा ठाकुर छलहो आततायी। अपन सहोदर भाएक हत्या कए देलक। ओकर जमीन-जाल सभ कब्जा कए लेलक। ततबेपर नहि रुकल। ओकर पत्नी धरिकें नहि छोड़लक। ओकर एकमात्र संतान तँ की केलक तेकरा आइ धरि कोनो खोज-खबरि नहि लगलैक।

आखिर ओकरो अन्त भेल। मुदा कतेको गोटेक जिनगी बर्बाद कए गेल। पुष्पा तँ एकटा बानगी छलि। ओकर निकटस्थ छलि मुदा आन-आन कतेको लोक ओकर दुष्टतासँ फिरसान छल। हमहूँ ओहिमे सँ एकटा रही। पैसाक लालचमे हमर अपहरण कए लेलक। फिरौतीक मांग जतेक फुरेलैक, ततेक बढ़ा देलक। मुदा ओही पापे तरे बर्बाद भए गेल। पैसा तँ हाथ नहिए लगलैक। मुदा हमरा तबाह कए गेल। एकटा छोट-छीन बच्चा मासो काल कोठरीमे बन्द रहल। माएक एकमात्रक आशाक किरण विलुप्त भए गेल छलि। सोचक छल जे ओहि माएपर की गुजरल होएत? कोनो ओ जीवित रहि गेल से आश्चर्य लगैत अछि। मुदा समय सभ शक्ति प्रदान कए दैत अछि। से नहि होइतैक तँ पाण्डव, द्रोपदीक अन्याय कोनो देखिते रहि जइतथि,कोना उचित समयक प्रतीक्षा कए सकितथि। हमरो माए सएह सभ किछु-किछु सोचैत समय कटने होएत। आखिर

अपन नान्हिटा संतानकेँ फेरसँ अपना लग देखि सकल। तकर सभटा श्रेय छलैक पुष्पाक। पुष्पाक इज्जति हमरे घरमे नहि अपितु परिपट्टामे होमय लगलैक। लोक ओकरा बारेमे पूछताछ करए लगलैक। ओ के अछि? कतएसँ आएलि? ओकर क्यो समांग छैक की नहि? तरह-तरहक जिज्ञासा लोकमे होएब स्वाभाविक छलैक। मुदा ओकरा अखनो एतेक शक्ति नहि भेल छलैक जे किछु प्रत्युतर कए सकए।

आखिर हमर माए आगू आएलि। लोक सभहक जिज्ञासाकेँ शान्त करबाक हेतु ओ सभकेँ एकट्ठा केलक। माएक मुहेँ पुष्पाक कथा सुनि लोक सभ जतबे अबाक छल ततबे क्षुब्ध। अपना लोकक हाथे एहन अत्याचार होइत से लोक नहि सोचि सकैत छल मुदा सएह भेल रहैक। यर्थाथक धरातलपर अनुमान ओ तर्ककेँ कोनो गुंजाइश नहि रहि सकलैक। लोक सभ एक स्वरसँ कहलक-

“पुष्पाक संग बहुत अन्याय भेलैक। मुदा प्रतिकार की भए सकैत छल?”

सभक ध्यान पुष्पा ओ ओकर कएल तांडवपर छलैक। हम उपेक्षित जकाँ महसूस करए लगलहुँ। स्कूल गेनाइ बन्द भए गेल। घरमे कोनो मनोरंजनक साधन नहि छल। रहि-रहि कए मोनमे बीतल बात सभ घूमए लगैत छल। जंगल महलमे बिताओल गेल एक-एक दिन पहाड़ सन बितैत छल। मुदा आब तँ हम ओहिठामसँ स्वतंत्र भए गेल रही। अपन घरमे रही। माए लगीचमे छलि, तथापि मोन प्रशन्न नहि छल तकर कारण स्पष्ट थिक।

हमर स्कूल छुटि गेल छल। संगी-साथी सभसँ भेँट-घाँट छुटि गेल छल। हम एकदम एसगर पड़ि गेल रही। माएक अन्तर्मन तँ दग्ध छलहे। ओ कतेक कए सकैत? जे कए सकैत से करए मुदा ओकर सीमान छलैक। हम कोनो बेटा तँ रही नहि,जे ओ खेलाइ-धुपाइ लेल हमरा स्वतंत्र छोड़ि दैत। फेर हमरा संगे तँ अप्रत्याशित दुर्घटनो भए गेल छल।

नान्हिटा बएसमे एतेक उठा-पटक नहि हेबाक चाही। ने हमरा मोनपर एतेक बोझ रहक चाही। मुदा ओ समय आइ-काल्हि जकाँ नहि रहैक। बच्चोक अधिकारपर समाजक प्रतिबन्ध बहुत मजगूत रहैक। हम घुरि अएलहुँ, दानवक मुहसँ बँचि अएलहुँ से हमर स्कूलमे सभकेँ बूझल रहैक। मास्टर सभ अनुमान करए जे थोड़ेक दिनमे सभ किछु सामान्य भए जाएत आओर हम फेरसँ स्कूल आबए लागब।

मास दिन जहन बीति गेल आओर हम स्कूल नहि गेलहुँ तँ एक दिन मास्टर साहेब हमरा ओहिठाम अएलाह। हुनका गाममे सभ जनैत छलनि। हुनकर घर गामसँ सटले छलनि। नाम छलनि- शशिकान्त। ओ बहुत आदर्शवादी शिक्षक छलाह। हमरा बहुत मानैत छलाह। हुनका बूझल रहनि जे हमरा बाप नहि अछि। ताहि स्थानक पूर्ति तँ सम्भव नहि छल मुदा जे सम्भव छल से ओ करैत छलाह।

हमर बाबूक अभावक पूर्ति करबाक सामर्थ्य जँ ककरोमे छल तँ से हमर शिक्षासँ भए सकैत छल। से बात ओ बेरि-बेरि हमर भंगपीबा पित्तीकेँ कहथिन। मुदा ओहि दिन तँ अपन बात रखबाक जहाँ प्रयास केलाह कि हमर पित्ती बमकि उठल-

“हम अपन बच्चाक भविष्य नीकसँ बुझैत छी। अहाँ के छी राय देबए बला?”

मास्टर साहेब अबाक रहि गेलाह। मुदा ओहो छलाह सिद्धान्तक पक्का लोक। अपन बात स्पष्ट करैत नारी शिक्षाक महत्वपर अड़ि गेलाह। अपना ओहिठामक इतिहासक गप्प उठबैत गार्गी, भारतीसभक नाम गना

गेलाह। ईहो कहि गेलाह जे जँ शिक्षाक उचित अवसर देल जाए तँ बेटी ककरोसँ कोनो मामलामे कमतर नहि रहत।

मुदा ओ समय आइ जकाँ नहि छलैक। हमर पित्तीकेँ शशि बाबूक बात नहि अड़घलैक। ओ चिकरि उठलाह-

“अहाँ अपन सीमानमे रहू। हमरा अपन बच्चा सभहक भविष्यक स्वयं चिन्ता अछि।”

आब ओ की करितथि? मास्टर साहेब खाली हाथ स्कूल लौटि गेलाह। हमर कपारमे चौथासँ बेसी पढ़ाइ नहि लीखल छल से सएह भेल। हम फेर स्कूल नहि जा सकलहुँ।

q

७.

फगुआक समय रहैक। गाम-घरमे साँझक फागक मधुर ध्वनि गुंजायमान होइत छल। जगह-जगह लोक सभ डाफ,झाइल लए गबैत रहैत छल। प्रकृति सेहो संग दए रहल छलैक। पीयर टुह-टुह सरिसवसँ खेत सभ पाटल छल। हवामे मनमोहक सुगन्ध पसरि रहल छल। एहन समयक स्वागत सम्पूर्ण प्रकृति कए रहल छल। ओमहर हमर पित्ती हमर बिआहक तैयारीमे भिड़ल छल। १२ बर्खक कन्याक बिआह हेतु सम्पूर्ण शक्तिसँ आतुर हमर पित्ती एकटा सुखी-सम्पन्न वर ताकि लेने छलाह। हमर माए बहुत विरोध कएलक। हमर बएसे की रहए? मुदा ओकर किछु नहि चलल। बिआह तय भए गेल। तकर समर्थनमे नाना तरहक तर्क हमर पित्ती दैत रहलाह। हारि कए हमर माए बिआहक तैयारीमे लागि गेल।

ओहि समयमे कम बएसक कन्याक बिआह कोनो नव गप्प नहि छलैक। तेरह बर्ख तँ आदर्श मानल जाइत छल। ओहिसँ बेसीबएसभेलापर समाजमे निन्दा होइत छल। लोक-लाजक बहुत ध्यान कएल जाइत छल। बिआह की होइत छैक तकर किछु ज्ञान नहि छल। एतबा बुझाएल जे भोज-भात भए रहल छैक। उत्सवक महौल रहैक। लोक-बेद सभ गाम-गामसँ आएल रहैक। तरह-तरहक मिठाइ, पकवानसँ घर भरल रहैक। हमरा माए खने दुलारकरए, खने कानए लागए। रहि-रहि कए ओकर छाती जेना फाटए लागए। नान्हिटा बच्चा सासुर चल जाएत, से सोचि कए जेना ओकरा बकोर लागि जाइक। मुदा सत्य तँ सएह रहैक। हमर बिआहक समय आबि गेल रहैक।

साँझ होइते बरिआतीक आगमनक प्रतीक्षा होमए लागल। ओहि समयमे आइ-काल्हि जकाँ बसक बस बरिआती जेबाक परम्परा नहि छलैक। पाँचटा बरिआती अएलैक। तकरो बेसीए बूझल जाइक।

गीत गाइन सभक मधुर संगीतसँ सम्पूर्ण वातावरण मंत्रमुग्ध छल। बरिआतीक आब-भगतमे सौंसे गामक लोक लागल छल। हमर पित्तीक आनन्दक कोनो सीमा नहि छल। हमर माए एहि बातसँ प्रशन्न छलिजे बर सुन्दर, सुखी-सम्पन्न ओ सज्जन व्यक्ति छल। एसगरे छल। भाए-बहिन नहि छलैक। छोट-छीन परिवार। पर्याप्त सम्पत्ति छलैक। ताहिपर सँ बर पढ़लो रहैक। आब की चाही?

बरकेँ परिछन हेतु बजाओल गेल। बर देखि हमर माएक छाती जुड़ा गेलैक। अतीब सुन्दर, गोर-नार, ठाढ़ नाक पैघ-पैघ आँखि, लगैक जेना कोनो देव लोकसँ आएल हो। एहि बातक ककरो ध्यान नहि

रहलैक जे एहि तइसबर्खक बरक कनिआ मात्र बारह बर्खक छैक। कन्याक उज्जवल भविष्यसँ सभ आशान्वित छल, प्रशन्न छल। बिआहक विध सभ आगा बढ़ल। ओमहर बरिआती सभक स्वागत होइत रहल। कोनो वस्तुक कसरि नहि रहल। रहबो किएक करतैक। ड्योढ़ीक कन्याक बिआह छलैक ने।

दू दिन धरि बरिआतीक स्वागत होइत रहल। कोनो चीजक कमी नहि रहलैक। बरिआती सभ अतिशय प्रशन्न रहथि। कनिआकेँ देखि तँ मोन गदगद भए गेलनि। अतीव सुन्दरी मुदा नेन्ने। हमर ससुर तरह-तरहक गहना अनने छलाह। पैरसँ माथ धरि गहनासँ छाड़ि देल गेल। दोसर दिन सायं काल बरिआती आपस गेल। सभकेँ यथोचित विदाइ देल गेल। परिपट्टामे ओहि बिआहक चर्चा होइत रहल। सभ किछु भेल मुदा हमरा बिआहक एतबे ध्यानमे रहि गेल जे खूब भोज-भात भेलइ। नीक-नीक गहना सभ आएल। कपड़ा-लत्ताक तँ अम्वार लागि गेल छल। बर की होइत छैक से बुझबाक तँ लूरि नहि छल।

साँझमे बरिआती चल गेलाक बाद घरक लोक सभ निश्चिंत भेल। बरिआती सभ पीअर-पीअर धोती पहिरने, काजर,चानन केने जेमहरे जाथि लोक टकटकी लगौने देखैत रहैत। हमर ससुर जाइत काल बहुत प्रशन्न रहथि। बहुत आशीर्वाद देलाह।

q

८.

हमर बिआहक समाचारसँ हमर मास्टर साहेब (शशिकान्त बाबू) बहुत दुखी भेल रहथि। यद्यपि ओ किछु कए नहि सकलाह मुदा चुप्पो नहि बैसलाह। बेरि-बेरि हमर पित्तीकेँ बुझेबाक प्रयत्न केलाह। ओतबे नहि, हमरो बुझबथि। मुदा हमरा ओतेक लूरि कहाँ छल? हमर माए बेबस छल। ओकरा चिकड़बाक-भोकड़बाक आदति छलैक। तँ क्यो ओकर विरोधक स्वरकेँ ततेक महत्व नहि दैक।

मास्टर साहेबक अन्तर्मनमे एहि घटनाकेँ बहुत गम्भीर चोट लागल छल। ओ प्रगतिवादी विचारक प्रखर व्यक्तित्वक लोक छलाह। ओ हारि मानए हेतु तैयार नहि छलाह। ओहि दिनसँ गाम-गाम घुमि कए बेटी सभहक पक्षमे वातावरण बनाबए लगलाह। जे बेटी कहिओ स्कूल नहि गेल छल, सेहो सब स्कूल आबए लागल। मास्टर साहेब इलाकामे चर्चित भए गेलाह। मास्टर साहेबक प्रयास कारगर होमए लागल। रहैक कि एकदिन कोनो बच्चाकेँ स्कूलमे साँप काटि लेलकै। साँपक जहर उतारबाक बहुत प्रयास कएल गेल मुदा कोनो असर नहि भेलैक। देखिते-देखितेमे ओ बच्चा मरि गेलैक। ओहि बचिआक आकस्मिक मृत्युसँ गाममे कुहर्रम मचि गेल। ओकर माए-बाप तँ स्कूलपर धरना धए देलक। मास्टर साहेब की कए सकैत छलाह? स्कूलक जर्जर घरमे पता नहि कतेक विषधर नुकाएल होइक। डरे लोक सभ अपन-अपन धिया-पुताकेँ स्कूल पठौनाइ बन्द करा देलक।

स्कूलक देबार सभ जर्जर छल। भदवारिमे तँ सभ साल कोनो-ने-कोनो देबार खसि पड़ैत छल। फेर ओकरा कहुना कए ठाढ़ कएल जाइत छल। कतेको बेर एकर सिकाइति अधिकारी सभकेँ कएल गेल मुदा किछु नहि भेल। ढहल-ढनमनाइत खपरासँ छारल स्कूलक भवनमे इलाकाक बच्चा सभ कहुना कए पढ़ैत छल। मुदा साँप काटि लेबाक दुर्घटनाक बाद तँ स्कूलमे पराहि लागि गेलैक।

स्कूल बन्द हेबाक स्थितिमे पहुँच गेल। तीनटा शिक्षक आओर पाँचटा विद्यार्थी रहि गेल रहैक। ओहो पाँचटा विद्यार्थी नियमित नहि अबैक। असलमे लोकमे शिक्षाक प्रति रूझान नहि छल। बेटीक स्कूल गेनाइ तँ व्यर्थ लगैत छलैक। घरक काज केनाइ माए-बाप, भाएक सेवा केनाइ, सिलाइ-फराइ केनाइ ओकर मूल काज छल। एहि परिस्थितिमे परिवर्तन आनब आसान नहि छलैक। बेटीक बिआह भए जाइक तँ वैतरणी पारभए गेल।

मास्टर साहेब मास्टर कम, समाज सुधारक बेसी छलाह। देश गुलाम छल। तरह-तरहक प्रतिबन्धसँ समाजक प्रगति अबरुद्ध छल। जातीय संघर्ष, धार्मिक उन्माद चारूकात पसरि रहल छल। अंग्रेज सभक कुचेष्टासँ समाज खण्ड-खण्ड बँटि गेल छल। आपसी मतभेदक हवा दए शासन करैत रहब ओकर सभक मूल उद्देश्य छल। सरकारी नौकरी करैत सामाजिक संघर्षक रुखि बदलब मास्टर साहेबकेँ कठिन भए रहल छल। फेर ओ स्कूल चलिओ नहि रहल छल। विद्यार्थी अएबे नहि करैक, क्रोटि उपाय केलाक बादो स्कूल भम पड़ैत छल। उल्टे अभिभावक सभ उपराग दैत रहैत छलैक।

मास्टर साहेब घरक सुखी-सम्पन्न लोक छलाह। जीवन-यापन हेतु मास्टरीपर निर्भर नहि रहथि। गाँधीजीक उच्च विचारसँ प्रभावित रहथि। समाजमे नव चेतना आनबाक हेतु कृत संकल्प छलाह। तेँ एक दिन मास्टरीक नौकरीसँ त्यागपत्र दए पूर्णकालिक समाजसेवक बनि गेलाह।

गर्दनिमे झोड़ा, खादीक धोती, कुर्ता पहिरने गाम-गाम अलख जगबए लगलाह। स्वतंत्रता आन्दोलनक विहाड़ि सौंसे बहि रहल छलैक। कतेकोराष्ट्रीय नेतासभ घूमि-घूमि राष्ट्र चेतनाकेँ जगेबाक प्रयास करएमे लागल छलाह। मास्टरो साहेब ओहीमे तन-मन-धनसँ लागि गेलाह।

१

९.

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनमे भाग लेबए मास्टर साहेब सौंसे देशक भ्रमण करए लगलाह। पैघ-पैघ नेता सभसँ परिचय भेलनि। गामपर रहबाक, ओहिठामक खेत-पथार देखबाक अवसर कमे भेटनि। दियादबाद सभ एहि अवसरक अनुचित लाभ उठाबए लागल। हुनकर जजातिक बिदति करब आम बात भए गेल छल। मास्टरी छुटि चुकल छल। खेती-पथारीसँ उपजा से नहि भए रहल छल। ताहिसँ परिवार चलब समस्या भए गेल छल। मुदा हुनकर उत्साह कम नहि भए रहल छल। आखिर एकसँ एक राष्ट्रीय नेता सर्वस्व त्याग कए समाज सेवा कए रहल छलाह।

से सभ बात तँ ठीक रहैक मुदा घरक खर्चा कतएसँ चलत? ई समस्या दिन-प्रतिदिन गम्भीर भए रहल छल।

मास्टर साहेब गामसँ बाहर गेल रहथि। गामपर हुनकर परिवार छल। एक राति हुनकर घरमे डकैती भए गेल। घरक जे काजक वस्तु छल से सभ गोट-गोट कए लूटि लेलक। गाममे ककरो हिम्मत नहि भेलैक जे कनिको विरोध करैत। आओर जे केलक से केलक मास्टर साहेबक पत्नीकेँ डाँरपर ततेक चोट मारलक जे ओ भुजरी-भुजरी भए गेल छल। ओहि दिनसँ हुनकर पुत्र सेहो कतहु बिला गेल।

प्रात भने सौंसे गामक लोक करमान लागल छल। थाना-पुलिस सभ एकजुट भए गेल। मास्टर साहेबक परिवारसँ ककरा एतेक दुश्मनी छलैक जे एहन बदला लेलकै? तरह-तरहक गप्प सभ दिन भरि होइत रहलैक। पुलिस आएले छल कि मास्टर साहेब सेहो घुमैत-फिरैत आपस गाम आबि गेलाह।

घरक हालत देखि मास्टर साहेब गुम्म पड़ि गेलाह। क्यो किछु बाजि नहि रहल छल। ताहिसँ अन्देशा बढ़ैत गेलिन। घरमे जाइते विभत्स दृष्य देखिते धराम दए खसलाह।

एहि दुर्घटनाक बाद जे मास्टर साहेब गुम्म भेलाह से गुम्मे रहि गेलाह। कतबो कोशिश करथि परन्तु बजले नहि होनि। डाक्टर सभ नाना प्रकारसँ प्रयास केलक मुदा सभ बेअसर भए गेल। ओकर बादसँ मास्टर साहेब असगर चुपचाप असोरापर बैसल रहैत छलाह।

स्वतंत्रता आनदोलनमे भाग लेबाक क्रममे कतेको नीक लोक सभसँ हुनकर सम्पर्क भेल रहनि। मुदा दुर्दिनमे क्यो साथ नहि देलक। असगर गुम्म-सुम्म रहलाहसँ हुनकर माथ खसकैत गेलनि। विचार क्रम गड़बड़ाए लगलनि। क्रमश: लोक सभकेँ चिन्हबो नहि करथि।

मास्टर साहेबक ई स्थिति देखि ग्रामीण सभ चिन्तित छलाह। मुदा समाधान किछु फुराइन नहि। डाक्टर-बैद सभ व्यर्थ भए गेल। सभ आश्चर्य करए जे एतेक व्यस्त रहएबला मास्टर साहेब केना एहेन भए गेलाह?

९

१०.

बरिआतीसँ गाम लौटलाक बाद हमर ससुरक खुशीक अन्त नहि छल। सौंसे गामकेँ भोज देल गेल। गीत-नादसँ समस्त वातावरणमे आनन्द पसरि रहल छल। जे क्यो आबैत तकरा हमर ससुर ऑंजुर भरि-भरि मधुर देने बिना विदा नहि करितथि। आनन्दोत्वसक ई क्रम साल भरि कोनो-ने-कोनो तरहेँ चलिते रहल।

गामक लोक सभ हमर ससुरक उत्साह, प्रशन्नता देखि दंग रहथि। चतुर्थीक भारसँ हमर सौंसे दरबाजा पाटल छल। रंग-विरंगक माँछ करमान लागल छल। हमर माए तँ भार सभ देखि छगुन्तामे पड़ि गेलि। "जरूर एकर सासुर बहुत धनाढ्य अछि। एतेक भार ओहो एहन सजल-धजल सबहक बसक बात नहि थिक।" सभ हँसैत-बजैत छल। गाम भरि बैन परसल गेल। तखनहुँ माँछक सरबाक परिस्थिति भए गेल। अन्ततोगत्वा जन, बनिहारमे बाँचल-खूचल माँछ बॉंटल गेल। क्यो खाली नहि गेल। कहबी छैक जे चतुर्थीक उतारा होइत अछि कोजागरा। कोजागरामे कनिआ ओहिठामसँ बरक ओतए भार अएबाक छल। कोजागराक डाला ततेक नमहर छल जे ओकरा दस गोटे मिलिओ कए उठा नहि पाबि रहल छलाह। तरह-तरहक साँठ, तरह-तरहक मधुर, पकबान, पान, मखानसँ भरल, गज-गज करैत डाला जखन रस्ते-रस्ते आगू बढ़ैत छल तँ लोककेँ ठकबिदोर लागि जाइत छल। सभ एक दोसरसँ कानाफुसी करए लगैत छल। "कतएसँ एहन सजल-धजल डाला आबि रहल अछि?किनका ओहिठामक जाएत?"डालाक पाछा-पाछा अनगिनित संख्यामे भार आओर ओकरा उघैत भरिआ सभक दृष्य देखैत बनैत छल।

एतेक भारी डाला, एतेक संख्यामे भार जखन दरबाजापर पहुँचल तँ ओकर शोभा देखैत बनैत छल। कतेक भारमे तँ ततेक सामग्री राखल छल जे भरिआ सभकेँ रस्ता नापब पराभव छलैक। चारि डेग चलैत कि थाकि जाइत। ओहि समयमे आइ-काल्हि जकाँ गाड़ी- छकरा तँ रहैक नहि जे लोक समान सभ ट्रक वा गाड़ीमे लादि कए पहुँचा दैत। ओहि समय तँ भरिआ ओ भारक चला-चलती छलैक। जतेक भार गेल, ततेक सोहनगर गप्प।

भार सभ तँ पहुँच गेल मुदा समस्या रहैक जे एतेक सामग्रीक हेतैक की? खएबाक सामग्री जेना मधुर, केरा, दही,माँछतँ टीकैत नहि। घरमे कतेक खर्च होएत? अपन दियाद सभकेँ तँ सबजाना नोते छलनि। तखन कएल की जाए? माँछक बड़का-बड़का मूरा, ओ खोरक-खोर दही नष्ट नहि भए जाए ताहि हेतु सौंसे गाममे घरे-घर बैनपरसल गेल। नौकर-चाकर,जन-बनिहार सबहक घरमाँछ-मधुरसँ भरि गेलैक।

इलाकाक प्रसिद्ध नटुआ गीत गोविन्द गाबि कए लोकक मनोरंजन करथि।

"धीर समीरे यमुना तीरे बसति बने बनमाली...।"

लोक सभ प्रशन्न भए नटुआक उपर टाकाक बर्खा कए देथि। कै दिन धरि चलएबला एहि नृत्य कार्यक्रममे के-के नहि अएलाह।

द्विरागमनक हेतु कोनो जल्दी नहि रहैक। ओहि समयमे तीन साल, पाँचो सालक बाद द्विरागमन होइक। मुदा हमर सासु अड़ि गेलखिन। साल भरिक भीतरे द्विरागमन भए गेल। सोचल जा सकैत अछि जे ओतेक कम बएससँ सासुर बसब केहन भेल होएत। हमर माए बहुत व्याकुल भेल रहथि। हम तँ कनैत-कनैत धरती, आकाश एक कए देलिऐक। हमर पित्ती सेहो बहुत कानल रहथि। द्विरागमनक दिन मानएमे आनाकानी केलखिन मुदा हमर ससुर अड़ि गेलथि।

एतेक कम बएसमे कनिआ बनि सासुरमे रहब कठिन भए सकैत छलैक। मुदा हमर सासु बहुत नीक रहथिन। अपन बेटी जकाँ दिन-राति हमर देखभाल करथिन। मानदान तँ ततेक होइत छल जे थोड़बे दिनमे नैहर बिसरा गेल। सासुरमे एतेक सम्मान होइत छल जे हमरा नैहर जेबाक इच्छा नहि भेल। मुदा कहिओ काल माए मोन पड़ि जाइत तँ कानए लागी आ कि हमर ससुर, सासुकेँ होनि जे कोना मनाबी, की कए दी।
q

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.४.डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (रजनी छाबड़ाक मूल हिन्दीसँ)

उमेश पासवानक किछु कविता

बताह वादल

ऐ दुनियासँ
रिश्ता तोड़ि देलौं अहाँ
दुखसँ रिश्ता
जोड़ि देलौं अहाँ
बताह वादल जकाँ
घुमल फिड़ै छी हम
नहि जानि एना किए
केलौं अहाँ
की कमी छल हमरामे
अन्हारमे छोड़ि कऽ हमरा
दोसराक घरकेँ
इजोत केलौं अहाँ
कहियो किछु केलौं नइ
वस अपना जकाँ मानै छेलौं
तैयो समुद्रक नोर
आँखिसँ बहा देलौं अहाँ
खेललौं हमर जिनगी
आ खुनसँ होली
जखन तेरह अक्टुबरकेँ
हमर जनम दिन छल
खुशीक समयपर
सनेसमे कफन भेँट देलौं अहाँ
जिनगीक ऐ युद्धमे
ओही कफनकेँ ओढ़ि कऽ
जीवित छी

आस अखनो बाँकी अछि
मुदा अहाँक बेबफाइसँ
लजाइ छी हम
ऐ दुनियासँ रिश्ता...।

घा

फुलोपर नइ अछि भरोस
बिनु मौसमक फुलाइए ओ
सावनकेँ अबैसँ पहिनहि
केतेको रंग बदलैए ओ।

सभ भौंरासँ दोस्ती अछि हुनक
सभ कियोसँ मिलैए ओ
मुदा
अपन बना कऽ काँटसँ
घाइल कऽ दैत अछि ओ
सभ भौंरा शिकाइत करैत अछि हुनक
किए एहेन बेवफाइ चालि चलैए ओ
हुअए केतौ और घा तँ बरदास कऽ लेब
मुदा दिलमे काँट जकाँ गड़ैए ओ
दवाइ करब मुदा दवाइ मिलैए कहाँ
कियो खुदासँ दुआ करैत अछि
कियो बिसरए चाहैत अछि
कियो पाबए चाहैत अछि
केकरा कहबै
के पतियाएत
कियो सुनौ ने चाहैए
किएक तँ कोमल मौलाएल लगैए ओ

फुलोपर नइ अछि भरोस।

जिद्द

ई दुनियाँबला
बेर-बेर देखौलक
प्रेमी सभकेँ अपन तागत
किए अछि दुनियाँबलाकेँ
प्रेमी सभकेँ दिल दुखबैक आदत
हम लैला-मजनू नइ छी
जे हुनका छोड़ि देब
हम तँ प्रेमक आगिमे जरै छी
पत्थरक देवालोकेँ तोड़ि देब
कियो हुनका समझा दियौ
दुगो प्रेम केनिहारक बीचमे नहि आबए
नै तँ हम हुनको
दुनियाँमे आगि लगा देब
शायद हुनका ई मालूम नै
हम माथपर कफन बान्हि कऽ चलै छी
अप्पन प्रेमक लेल जीबै-मरै छी
जखन हम जिद्द कऽ देब
प्यारक ई दुश्मनकेँ दुनियासँ उठा देब
ई दुनियाँबला
बेर-बेर देखौलक...।

सड़क

हम सड़क छी

किछु बाजि नइ सकै छी
मुदा किए लोक हमरा
बदनाम करैए
कियो खुनक इलजाम लगबैए
जखन कि अपने चलबैए
गाड़ी-घोड़ा रेसमे
आम लोककेँ कुचलैए।

हम सड़क छी
किछु बाजि नइ सकै छी
मुदा किए लोक हमरा
बदनाम करैए।

रखैत अछि बान्हि कऽ
बोडर-सीमा-सरहदसँ
तखनो नै अछि हमरा
मुदा
डर तँ ऐठामक नेता-ठीकेदारक
ओ घोटाला कऽ लैत अछि
हमरा ऊपर खर्च होइबला खरचा
जे दैत अछि ई देशक जनता।

हम सड़क छी
किछु बाजि नै सकै छी
मुदा किए लोक हमरा बदनाम करैए
सभ कियो अछि अप्पन स्वार्थमे लीन
सड़ल-गलल फेकैत अछि
अपने संग सेहत हमरो बिगाड़ैत अछि
काटि-छाँटि कऽ हमरा
आइर-खुड़पेरिया बनबैत अछि

हम सड़क...।

मैथिली

मैथिलक पहचान अछि
मैथिली
स्वर-लहरी भाषा
विश्व भरिमे मधुसँ मीठ अछि
मैथिली
जे भाषा भगवान श्रीरामकेँ नीक लागल
हमर माइक बोली
महान अछि मैथिली
जेतुक्का संस्कृति देखैले
देवो ललाइए
ओ मिथिला महान अछि
मैथिली
विद्यापति मण्डन आयाची रहैथ
ओतैक शान छी
मैथिली।

बिसैर जाउ

जे भेल ओकरा बिसैर जाउ
नसीबमे जे नइ छल अहाँक
ओकरा आब नइ बोलाउ
पाछू घुमि कऽ नइ ताकू

जे भेल ओकरा बिसैर जाउ।

कहियो काल एना होइत अछि
अगर पड़ि गेल किनको प्रेमक नशाँ
तँ छाँहो हुनका बोलबैत अछि
जे भेल ओकरा बिसैर जाउ।

किनको भेटैत अछि
किनको हेराइत अछि
दू क्षनक जिनगी अछि
फेरो ओकर यादि अबैत अछि।
पाछू घूमि कऽ नइ ताकू
जे भेल ओकरा बिसैर जाउ।
ई जे देख रहल छी
मुरदासँ पटल असमसान
सभ किछु छोड़ि आएल
अछि ई सभ इंसान
पाछू घूमि कऽ नै ताकू
जे भेल ओकरा बिसैर जाउ।

खिस्सा

दुखमे डुबि कऽ भेटल हमरा
एगो किनार बेवफाइक
जैपर बैस कऽ कनै छी हम
कोसै छी हम अपने-अपनाकेँ
खोजै छी हम ओइ बितलाहा दिनकेँ
जे बितेने छेलौं सहज भावसँ

शिकाइत नइ अछि हमरा
बेवफा केर बेवफाइसँ
मन पड़ैत अछि हमरा
लिखल ओइ चिट्ठीक पन्ना
जइमे लिखने छलि ओ हमर नाओं
अप्पन लहूसँ
बिसैर गेलौं रातिक जगनाइ
इजोरिया रातिमे
चान देखैक बहन्ने
हुनकासँ मिलैले
हुनक पाइजलक खनक सुनि कऽ
जगि-जगि जागल रही
पुरान भऽ गेल ओ सभ खिस्सा
अप्पन प्रेमक
जइमे रहै छेलौं दुनू गोरे
ओ रूसनाइ ओ मनेनाइ
चुपचाप चिट्ठी लिखनाइ
आब सदिका, बितलाहा दिन
दिलमे छूरी बनि कऽ भोंकैए
की भेटल हमरा?
दुखे-दुख?

फाँसी

काल्हि हमरा फाँसी भेटतै
की अहाँकेँ ई बुझल अछि
अहाँ एगो बेवफा छी

तइ खातिर अहाँकेँ बजौने छी
हमर नाओंसँ जे मेहदी
लगौने छी अपन हाथमे
ओकरा आइ हमर खूनसँ
धोइक दिन आएल अछि
की अहाँकेँ ई बुझल अछि
अही दुनियाँमे
सभ प्रेमी बहुत नीक होइत अछि
मुदा अहाँकेँ मालून नइए
आइ हम अहींक प्यारमे
मौतकेँ गला लगौने छी
की अहाँकेँ बुझल अछि
हम जिन्दा लहाश बनल छी
अहाँक बेवफाइसँ
साँस हमर कखन चलि गेल
नोर आ लहू
एके संगे बोहेने छी
ई अहाँकेँ मन अछि
हम और अहाँ मिलल छेलौं
फुलक बगियामे?
मुदाआइ हमरा सुलीपर
चढ़ेने छी
नीकसँ देखू अहाँ अप्पन सूरत
जे अहाँकेँ वफासँ बेवफा बनौने अछि।

गलती

कखनो लग अबै छी अहाँ
कखनो दूर चलि जाइ छी
की गलती भेल हमरासँ
किए एहेन जुलुम अहाँ करै छी
नीन हमर, चैन हमर
सभ छीन लेलौं अहाँ
आँखि-सँ-आँखि मिला कऽ
आब आँखि किए चोरबै छी
बेचैन भऽ जाइए ई दिल हमर
जखन नाओं हम अप्पन
अहाँक मुहसँ सुनै छी
मन करैए आइए अप्पन बना लूँ
जीवन भरिक लेल
मुदा सपना केकरो औरक
अहाँ देखै छी।

रोग

चलि जाउ अहाँ
हमरा अहाँसँ
नफरत अछि
प्रेममे तँ लोक हँसैत अछि
मुदा अहाँ कनै छी
चलि जाउ अहाँ
मौसम जकाँ अहाँ
बदैल गेलौं
अप्पन जवानीक आ जानमारूख चालिसँ

जेकर कोनो इलाज नइ अछि

ऊ रोग अहाँ दऽ गेलौं

चलि जाउ अहाँ

अहाँक ई बेवफाइक

गम हम, सहि नै सकलौं

जहरक कोन जरूरत

हम तँ ओहिना मरि गेलौं

मन पाड़ू ओ दिन

जे बितेने छेलौं संग-संग

तैयो आइ हम नोरक जगह

आँखिसँ लहू बहेने छी

चलि जाउ अहाँ

हमरा अहाँसँ नफरत अछि।

बटोही

अपने शहरमे हेरा गेल छी हम

खोजैले निकलल छी स्वयं अपनाकेँ

लऽ कऽ हाथमे डिबिया

मुदा टिमटिमाइत इजोतक गरमीसँ

जरल जा रहल छी हम

बेखबर भऽ गेल छी ऐ शहरसँ

बटोही सन लगै छी हम

कियो बता दिअ हमर घरक पता-ठेकान

नहि जानि केतएसँ केतए

चलि कऽ, चलि एलौं हम

बिना कोनो मतलबक

ऐ अन्हार रातिमे
अइमे दोख अहाँक नै
दोख हमर अछि
परिस्थितिये एहेन चलि आएल अछि हमर।

हवा

मनमौजी अछि ई हवा
सम्हैर कऽ कहाँ चलैए
ठोकर मारैए पहाड़मे
नहि जानि केतएसँ आएल ई हवा
सनसनाइत-ऐंठैत ई हवा
गरदा उड़बैत निडर भेल चलैए
लाज-शर्मक परदा
चेहरासँ हटा कऽ
चलैए ई हवा
ने कोनो दुख
आ ने कोनो चिन्ता छै
जेम्हरे बहड़ाइए तेम्हरे
हल-चल मचबैए
डारि-डारिकेँ हिलबैए ई हवा।

दोख

मंजिल लगसँ
घूमि आएल छी हम

अपने जिनगीमे आगि
लगा आएल छी हम
जरै छी अही आगिमे
अपनोपर दया नै अछि हमरा
केहेन परीक्षा अछि हमर जिनगीक
कोन दोख अछि हमर
ओ हँसैए
हमर ई हाल देख कऽ
कियो हुनकासँ पुछियौ
बेवफा हम छी आकि छैथ ओ?

गुमान

दुखक नदीमे
डूब लगबए लगलौं
चाहियो कऽ पार नै करि सकब
ई दर्द भरल याद
सभ बेवफा यादक
चीता सजबए लगलौं
अधूरा रहि गेल ओ कहानी
जे लिखनै छेलौं
दुनू गोरे मिलि कऽ
निश्छल प्रेमक
आब ई ऐना
साँच बाजए लगल
गुमानक प्रेमक धुलमे
मिलए लगल

जे देने छल, निशानी प्रीतक
सभ चिट्ठीक पन्ना
आगिमे जराबए लगल
लूटि कऽ हमर जिनगी
खुशी ओ मनबए लगल
यादि सभ चिन्ताक, चादैर बनि कऽरहि गेल
जिनगीक सभ आशा
दुखक नदीमे
डुबए लगल।

लड़की

मासुम सूरत हुनक
कनैल, गुलाब जकाँ
हँसी जेकरा चेहरापर झलकै छल
ओ लड़की किए उदास रहैए
साउन मासमे
सुनसान रातिमे
चान जखन वादलक संग
लूका-छिपि करैत रहै छल
नट-खट परि सन
चुपचाप नंगे पएरे
हमरासँ मिलैले अबै छल
ओ लड़की किए उदास रहैए
हुनक आँखिमे भरल नोर
किछु कहैए
आब नजैर झूकल-झूकल हुनक रहैए

जेना किछु तेहेन हेराएल होइ
सभ दुख डुबल दर्द पीब कऽ
नोरमे डुबल रहैए
ओ लड़की किए उदास रहैए
कखनो ई हम सोचने नइ छेलौं
कियो केकरो संग एते प्रेम करैए
समए बित गेलाक बादो
फेर वएह दिन अबैक इन्तजार करैए
जनु तँए
ओ लड़की उदास रहैए।

आदत

जीयब केना
हँसी तँ कोसो दूर
चलि गेल
आब नोर पीऐक आदत भऽ गेल
भरोस केकरापर करी
दिलमे रहनिहार कातिल बनि गेल
केकरासँ दिल लगाबी
सुनरकी गेल दिल तोड़ि
भरि दैत अछि दिलमे जख्म ओ
दोसरेक खुशी देख-देख
हमरो जीबैक आदत भऽ गेल
समुच्चा राति ओनाहिते
चानकेँ देख-देख जगैक आदत भऽ गेल।

अनजान

किये हमरा बजा रहल अछि
अही अनजान जगहपर
अखन आधा राति बित चुकल अछि
फेर केकरो कनैक अवाज
सुना रहल अछि
ई केहेन सनसनाहट अछि
उज्जर कपड़ा ओढ़ने कियो
परी जकाँ लगैए
मुदा ओकर चेहरा
ठीकसँ हम देखलौं नहि
मन होइए लगसँ जा कऽ देखूँ
मुदा हमर दिल काँपि रहल अछि
बस एगो शकल हमर मनमे आबि रहल अछि
ई के भऽ सकैए
एहेन दृश्य, नै देखलौं कहियो
की केकरो मरि गेला बाद
आत्मा फेरसँ जीबित लोक जकाँ
हल्ला कऽ सकैए
फेर हँसैक अवाज
आब कनी धुआँ जकाँ उठल
हम देखैत रहि गेलौं
किये ओही जगहसँ उठल आ चलए लगल
बस एक्के बात बजैत जा रहल अछि
अहाँ चलि आउ, अहाँ चलि आउ...
आखिर ओ भऽ के सकैए?

लोभ

कनी कनीकऽ
सभ अलग-अलग रहैए
सभपर जेना कोनो आरोप रहैए
ई देख
फुलैए दम, मुँहगरहा सभकेँ
दुतकारैत-फिड़ैत नजैर आबि रहलअछि सभ
घमण्ड अछि केकरो
अप्पन दादा-पुरखाक
घरमे दुबकल रहैए सभ
चुप-चाप बैसल रहैए
गुज-गुज अनहरिया रातिमे
दौड़ैत-भागैत रहैए- अनेरे
सुखक तलाशमे
मेहनतसँ कोसो दूर रहैत अछि
मुदा लोभ भरल नजैरसँ।

स्वार्थी

कोनो पुरान याद
फेरसँ दिलमे उतैर आएत
ई कहियो सोचनै नइ छेलौं
ओ दिन अखनो याद अछि
जे देखै छेलौं

फुलक कियारीमे भँवरा फुलक संग
अटखेल करैत रहै छल
ओ दिन आ आइक दिनमे
काफी फरक अछि
फुलक गाछमे फूल आब फूल नहि रहल
ओकर कोमलता काँटमे बदैल गेल
बस गाछ कनी पुरान भऽ गेल
आब कोनो भँवरा
ओही गाछ लग नइ जाइए
बुझना जाइए औझका मनुखे जकाँ ओहो
स्वार्थी भऽ गेल।

करिछौन

केतए हेरा गेल ओ याद
ओ सभ आब रातिमे
सपनो देखब भुलि गेलौं
दूर चलि गेल
जेना छोड़ि कऽ अप्पन छाँहो हमरासँ
आशाक निकलल किरण डुबि गेल
पियासल हम रहि गेलौं
मनक समुद्र सुखि गेल
घरक कोणमे दुबकल रहै छी
कैदी जकाँ
अपनो नइ चिन्ह रहल छी
समयक ऐना बदैल गेल
ओ नीक समए करिछौन भऽ गेल

पत्थल भऽ गेल ओ छाती
जइमे रहै छल ओ कहियो।

एकबेर

जंगलगे-जंगले
जा रहल छेलौं हम
अहाँकेँ खोजै-ले
बदहबास बताह जकाँ
गाछो सभ रूसल छल जे हमरासँ
खबैर नहि छल
जे अहाँ केतौ और छी
गाछक रूसनाइ
भीतरे-भीतरे हमरा हिला रहल छल
जेना ओ कहि रहल जे
यएह मनुख सभ तँ
सावनक हमरासँ कोसो दूर केने अछि
शकल-सूरत तँ देखू
आजुक दुश्मन बनि कऽ बैठल अछि
दोख दऽ रहल अछि हमरा
आ निकलल अछि खोजैले ओकरा।

साँच

झगड़निहारकेँ की पता
हमर चुप्पी कहियो रंग लाएत।

बिना मतलबे उलैझ कऽ
बितौने अछि अप्पन समए
हम तँ एक-एक पल बितबै छी
काजमे, नीक काजमे
जे समैझ लेत ऐ रहस्यकेँ
समए-सुत्रकेँ
ओ सभ दुख पार कऽ गेल
ने दुश्मनी केकरो संग भेल
ने कहियो दुखमे केकरो आगू झुकए पड़ल
कोमल-बेवहार हुनक निशानी रहल
सभसँ अछि प्रेम
दोसर देख-देख कऽ जरैत-जरैत मरैत रहैए
झूठ-झूठे रहत आ साँच-साँच रहत।

यादमे

अखनो डुबि जाइ छी
हम मन पाड़ि कऽ ओइ दिनकेँ
जे हम कियो सोचने नै छेलौं
की अहाँ हमरासँ केते दूर चलि जाएब
प्रेमक धागामे गुथल
ई प्रेमक मोती टूटि जाएत
हमर जगैत आँखि
अहाँकेँ सपनामे देखैले तरैस जाएत
पिजड़ाकेँ खुलिते देरी
चिड़ै जकाँ उड़ि जाएत
अहाँक यादमे ई महल।

जमाना

यादक दीप मिझा देलौं अहाँ
हम भटकैत रहलौं, पागल जकाँ
डुबि गेलौं वियोगमे
अहाँक प्रेममे
मिलल नै किच्छो
छुलौं अहाँ खाली हाथ
भेटल तोफामे बेवफाइ आ जखम
मुदा देखाएब ई केना
आब तँ जमानापर भरोस नहि अछि
बस भेटैए निशानीमे धोखा
बेवफाइक दुख जे सहि कऽ जीबैए आशिक
जे सम्हैर जाए ओ जमाना।

पछताएब

आँइखो आब थाकि चुकल अछि
कब्र सेहो
मरना सन भऽ गेल
यादो हुनक दफन भऽ जाएत
अन्तिम घड़ीमे
कफन भऽ जाएत
मेटा जाएत सभ निशानी
हम कहाँ

फेर भेट सकब
दर-दर ठोकर खाएब
पछताएब आ नोर बहाएब
फेर भेटत नइ ई समए
के कहलक आइ हम छी
तँ काल्हि अहाँ नइ।

चिट्ठीक पन्ना

यादमे डुबल रहैए ओ
नजैर झुका कऽ चुप-चाप
नोर बहबैए ओ
डेग मानू रूकि गेल अछि
देखल बरिखो बित गेल
कहियो काल भेँट-मुलाकात होइए
चिट्ठीक पन्नामे, आ सपनामे
खुजल आँखिसँ
नजैर कहाँ अबैत अछि ओ
सभ सपना टूटि गेल
बरखो बित गेल
दिलक हँसब आ खुशी
दिलेमे दफन भऽ गेल
नइ जानि हमरासँ
मिलैसँ डरैए किए ओ।

कविता

जखमक देबालसँ
अनहत मनसँ
निकलैए एगो अनजान शब्द
जेकरा अप्पन भावनासँ
जोति-कोरि कऽ
बनबै छी कविता
किछु अप्पन रहैत अछि
किछु दोसराक शब्द जे
समाजक सच्चाइकेँ देखबैत अछि
किछु शब्द तलवार सन
धारदार रहैत अछि
किछु मौध सन मीठ
कोनो शब्द भावनासँ दलमलित रहैत अछि
जे पढ़ि कऽ खिस्सा जकाँ कनबैत अछि
सभ शब्दसँ
अप्पन दिलकेँ होइए भेँट
तँए कोनो शब्द दिलकेँ झँकझौरैए
आ किछु समा जाइए सीनामे
सादा कागत, कलम आ जखमसँ
भऽ गेल दोस्ती
तइ दुआरे लिखै छी कविता।

गामसँ

कियो लड़की चुप-चुप
हमर घरक खिड़कीसँ

चिट्ठी लिख कऽ फेकने अछि
के छल ओ लड़की
कियो नइ देखने अछि
जखन खोललौं ओइ चिट्ठीकेँ
चिट्ठीक ऊपरमे हमर नाओं लिखने अछि
एगो सुन्दर सन गुलाबक फूल
बना कऽ
फुरसतमे
प्रेमक पैगाम लिखने अछि
घर केतए अछि ओकर
मालुम नइ।
मुदा अही गामसँ लिखने अछि
अप्पन कोमल हाथसँ
प्रेमक ढ़ाइ आखर भरि इतमीनानसँ
लिखने अछि
अन्तमे हमर प्रसंसो केने अछि
नइ जानि कोन रिश्ताअछि
हमर गजलकेँ
ओ अप्पन नोर लिखने अछि
कियो लड़की चुप-चाप
हमर घरक खिड़कीसँ
चिट्ठी लिख कऽ फेकने अछि।

तरहत्थी

खुदासँ मँगने छेलौं अहाँकेँ
किए हमरा अलग कऽ देलक

जीए देत कनी जिनगी हमरो
कनैए कनी हमरा दया कऽ देने रहैत
देख कऽ अहाँ हथेली
ओहीपर हमर नाओं लिख देने रहैत
खुदासँ मँगने छेलौं अहाँकेँ
किए हमरा अलग कऽ देलक,
जइ दिन उठल अहाँक बिआहक डोली
ओही दिन हमरो जनाजा उठा देने रहैत
हमहूँ जैतौं संग-संग
अहाँ अप्पन सासुर जैतौं
आ हम भगवानक लग चलि गेल रहितौं
किए हमरा आइ अलग कऽ देलक
पुछितौं हम ओइ भगवानसँ
किए परीक्षा लइए
प्रेमीकेँ प्यारमे
दिल लगबैसँ पहिने
काटि देने रहैत
खुदासँ मँगने छेलौं अहाँकेँ
किए हमरा अलग कऽ देलक।

डुबैत

जे मँगने छेलौं हम
भगवानसँ
से नइ भेटल हमरा
डुबैत गेलौं हम
गम केर गहराइमे

चीर कऽ सीना राखि देलौं
दिल, अप्पन वएह पैरपर
जरैत रहलौं हम
बेवफाइक रौदमे
गली आ चौराहापर
बितल दिन आएल फेर
तुफान जकाँ
तोड़ि हमर जिनगीकेँ फेक देलक
लबारिस लाश जकाँ भऽ गेलौं हम
जखन फेर मन पड़ल
पुरना प्रेमीकेँ
तब खोजने फिड़ै छी
ताज-महल आ कब्रिस्तानमे
हम तँ बस प्रेम छी।

तागत

प्यारक दुश्मन छी ई दुनियाँबला
हमरा हिनका लऽ जाए दियौ
कन-कनमे बसल अछि प्यार अहाँक
तखने हम जिन्दा छी
तइ दुआरे एकरा हमरा जराबए दियौ
प्यारक दुश्मन छी ई दुनियाँबला
हमर आँखिसँ जे गिर रहल अछि नोर
अहाँ अपना-ले हमरा
छोड़ि कऽ जाए दिअ
हमर तागत अछि प्रेम अहाँ

अंसर एकरा देखबए दियौ
प्यारक दुश्मन छी ई दुनियाँबला
सुनै छी खिस्सा हम
लैला-मजनू-सिरी फरीहादक
हँसि-हँसि कऽ मरए दिअ
गम आ प्यारमे
तागत हमहूँ देख लइ छी
कम्बख्त ई तलवारमे
प्रेमीक फेर अजमौने अछि
हँसैत आइ सुलीपर चढ़ए दिअ
प्यारक दुश्मन अछि ई दुनियाँबला
सभ जखमपर अहाँक नाओं होएत
सभ खूनक बुन्नपर अहींक नाओं होएत
सभ प्रेमीक लेल प्यारक पैगाम होएत।

हालत

हेरा जाएब हम एक दिन
छोड़ि कऽ जाए दिअ निशानी अप्पन
फेर के जनलक
कहियो आएब मिलैले हम
ई वादा अछि जवानीक
दौड़त रग-रगमे रवानीक
मुदा तखनो भुलि जाइ छी हम
जखन लग अबै छी अहाँ
रूकि जाइए नजैर अहाँकेँ देखते
की करूँ हम

केकरा सुनावी ई दिलक खिस्सा
एतए लोक सभ मतलबी अछि
जखम दिलक केकरा देखाबी हम
कनै छी सदिखन हम, पागल जकाँ
लोक हँसैए हमरापर
हम तँ कनै छी एतुक्का हालत देख कऽ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

प्रीतम कुमार निषादक

किछु कविता

कत्तऽ तकै छी?

धाकर सन-सन मैथिल बाबू
ढहैक सुनितेँ हुम्मैर ढकै छी
जुगक कलम अँड़पेना दैछ तेँ
दुलकैत-दौड़ैत बैसि थकै छी
गाम छोड़ि परदेशी बनितेँ
अपनेहिं मरजी खूब अँकै छी
तेँ मिथिला आब सोर पाड़ैए
एत्तहु देखू ने कत्तऽ तकै छी।।
एतहुँ देखू ने... कतऽ तकै छी।। 0।।

जानल-मानल-पुरखा-पिहानी
कहए गरोसैत दादी-नानी
मूड़ैत-ममहर-जूड़ैत बपहर
खेलैत-कुदैत हँसल जुआनी
मुदा बथाएल-मिथिला-महिमा

भूत खेलि सभ झूठ बकै छी
तैँ मिथिला..! सोर पाड़ैए...।। 1।।

वैह देसिल बयना अवहट्टा
बनल मैथिली भाषा-मिट्ठा
साहित्य व्याकरणअदौसँ पढ़ैत
भेल मनीषी ज्ञानक पट्ठा
देव भाषा संस्कृतो थुड़ाएल
मैथिलीश बाजैत खूब ठकै छी
तैँ मिथिला 'आब सोर पड़ैए' ...।। 2।।

एक्खन बुझनुकहो हकमैए
अन्वेषक बनि कच्छड़ कटैए
अप्पन मैथिली टूअर भेल अछि
जाहि लेल किए नैँ माइल फटैए
कहैछ प्रीतम सुनू मैथिल जन
कोन सेहन्ताक घूर पकै छी
तैँ मिथिला...। आब सोर पाड़ैए...।। 3।।
¦

आद्यार्चना

नवरात्र जगल, धूप-दीप सजल
माँ जगदम्बे सुर गीत भजल
विजया दशमीक दशद्वार खुजल
नर-नारीक हियहरषित बिहुँसल।
नवरात्र जगल धूप-दीप सजल....।

जुग धर्म अधर्मक द्वन्द्व डगर
जगवासी डरय सन्तान नगर।
कबुला-पाती मनसा रोपल
जगतारिणी दर भगतन कुहसल

विजया दशमीक दशद्वार खुजल
नवरात्र जगल...।

सदिखन कृपाशिष दैत रहू
जीवन सदगतिकेँ सम्हारि अहूँ
सृष्टिक सन्तान पुकारि रहल
असरा केर पोटरी खोलि कहल
विजयादशमीक दशद्वार खुजल
नवरात्र जगल...।
¦

दिवसास्त्तार्चना

अम्बाक आभा पसरल सगरो
भगत श्री ज्योति जलावि रहए..।
तैयो कुमतिजन अछि अन्हराएल
कलपि सुता-सुत गावि कहए..।
अम्बाक आभा पसरल सगरो...।

निशि दिन सुरगण महिमा बखानए
शूलेश्वरी माऽए करए भ्रमण
असुरनिकन्दिनी कात्यायिनीकेँ
यश गाथा करए जगत श्रमण
शुम्भ-निशुम्भ महिषासुर मर्दिनी
जया विजया माऽए भावि रहए...।
अम्बाकआभा पसरल सगरो...।

छन्दोक्ति : नव दुर्गा माऽए नाम जेकर अछि,
पार कहाँ केओ पाओल
पाप विनाशिनी माऽए जगतारिणी,

अद्भुत् रूप रचाओल
शैलसुता ओ स्कन्द माता,
माऽए चन्द्र घण्टा कहओली
ब्रह्मचारिणी, कुष्माण्डा औ सिद्धिदात्री यश पओली
कात्यायिनी कालरात्रि भऽ मैया, महागौरी जग भावए
विश्व धारिणी आदि शक्तिनी,तीनहुँ लोक बचावए
सिंहवाहिनी-वैष्णोदेवी सन्तति हृदय धएली
बरिख-बरिख कृपा आशिष संग विजयादशमी लऽ अएली

धृत-वाती-कर्पूर निराजन
सुमन समर्पण भगत करए
कंचन थाल सजल मधुव्यंजन
भोग लगा वृती माथ धरए
लोक शोक संग कुहुसए प्रीतम
करूणालाप सुनावि रहए
अम्बाक आभा पसरल सगरो...।
¦

सांध्यार्चना

दोहालाप :
अनेक अनाथ सनाथहुँ होवए
भगवती जागरण भक्तिसँ..।
शोक मेटाएब अम्बे शरणमे
विनती करए मां शक्तिसँ..।।
केओ पूजए केओ भोग लगावए
केओ संकल्पकेँ दोहरावए..।
केओ पुष्पांजली मधुमेवा दए
केओ सुदीपसँ गोहरावए..।।

कोरस (गुंजन) : श्री मातु शरणम्.., श्री अम्बे शरणम्... ।।
माऽए केर मन्दिरमे ज्योति जराएब...।
साँझ दऽ मंगल दीप सजाएब...।
माऽए केर....।

अड़हुल.. संझा.. चम्पा.. चमेली
जगदम्बा पग फूल चढ़ाएब..।
माऽए केर...।

मनोकामना सन्तान हृदयमे
रहियौ सहाय माऽए कोप प्रलयमे..।
धरम-करम कलियुग छलिया संग
तमस-तामस केर युद्ध विजयमे...
परिऽक्रमारत.. व्रती नर-नारी
सभ मिलि-विजया ध्वज फहराएब..।
माऽए केर मन्दिरमे.. ज्योत जराएब...।

छन्दालाप : कूदए कवित्त छन्द.. सनकए सवैया..।
जय अम्बे.. सुर-भगत.. जय हो गवैया।।

आऽऽऽ लाली लालेँ लालक मुखसँ..
मगन अछि माऽएक लाल..।
भूषण-कवि विद्यापति-वर संग..
लखए-बिहारी लाल..।।

छन्छ : जय अम्बे जय हो लाल.. माऽए केर चुनर लाल
भक्तक मृदंग-झाल सुरताल झमके..।
ब्रह्माणी ज्ञान लाल, वैष्णोवरदान लाल
गौरी-गणेश लाल बाल-चान बमके..।।

दिशा-दिग्पाल लाल.. अम्बर भूचाल लाल
महिषासुर रम्भ लाल, काल भाल धमके..।
दानव गुमान लाल, मंगला-मुस्कान लाल
कात्यायिनी कत्ता लाल, रक्त लाल टपके..।।
सिंहक नाखून लाल, राक्षस केर खून लाल
श्यामाकाली मुँह लाल,लाल जीभ लपके..।
निशा-श्मशान लाल, तांत्रिक मशान लाल
भैरव-श्वान जीभ लाल, भूंक काल झपके..।
पूजा केर फूल लाल, संझा अड़हूल लाल
गेन्दा-गुलाब लाल, धुजा लाल चमके..।।
दुर्गाक त्रिशूल लाल.. कलियुग कबूल लाल
प्रीतम बातुल लाल सुर-ताल रमके..।।

अन्तरा : माऽए मंगला.. दरसन दियऽ अनुखन
असरा लगौने रहलौं सदिखन..।
अम्बेक आगम दिव्य ज्योत संग
सिंहवाहिनी-गोहरावै भक्तन..।।
माऽए आशिष लऽ.. कहए सुत प्रीतम
संकल्पित सिंह संग खेलाएब..।
माऽए केर मन्दिरमे.. ज्योत जराएब...।।

निशार्चना

दोहालाप :
शुभनवरात्रक विजयादशमी..
पर्व मनोरम् जग बिहुँसल।
जगतारिणी माऽएक लीला महिमा
गामेगाम त्योहार सजल।।

कोरस : आऽऽऽ... ऊँ द्यौ.. दुर्गे माऽए काली..।

अहाँक लीला अजब.. अम्बे शेरावाली..।।
ऊँ द्यौ... दुर्गे माऽए काली...।।
हे माऽए खप्पड़वाली जय-जय जोतावाली..।
ऊँ द्यौ...।

अन्तरा : दानव कोपसँ देवता कानल इन्द्र डरल-घबराएल।
असुर रम्भ महिषासुर बल कँ कोपसँ सुर थर्राएल..।।
तप कए महिषासुर ब्रह्मासँ 'अमरत्त्वक' वर मँागल।
'एवमस्तु'वर देबऽए सँ पहिले, ब्रह्माक मानस जागल।।
बेटा सृष्टिक नियमसँ ई कोना हेतै..?
जे केओ जन्म लेतै.. ओ तँ मरबे करतै..।
तखिने अम्बरसँ देव-किन्नर.. मारए लागल ताली..।।1।।
ऊँ द्यौ...।।

अन्तरा : ब्रह्मा वचन सुनितँ महिषासुर..
निजमन सोच बढ़ौलक।
'कन्याकुमारी' मारए हमरा..
छल मन बुझ्ध बतौलक।।
तब चतुरानन कहल 'तथास्तु'
गगन पुष्प बरसौलक।
सुरगण-आदि शक्ति समेटैत
शर्व शक्ति निरमौलक
दरसए सुरलोक सीमा-योगमाया छाया।
दिव्य-शक्ति दरसए.. जगदम्बेश्री माया।।
दैव दुन्दुभि ध्वनि गुंजन, संग-प्रगटल शेरावाली...।
ऊँ द्यौ...।।2।।

छव्यालाप : शिव शक्ति 'मुँह'विषणु शक्ति 'कर'
ब्रह्माशक्तिसँ बनल चरण।
धर्मराज केर शक्ति केश भेल

चन्द्रमाक शक्ति द्वै स्तन।।
पृथ्वीक शक्ति रचै नितम्ब द्वै
जंघा रचलनि शक्ति वरुण।।
वसुकै शक्ति हस्तांगुली औ
पादांगुली देल शाक्ति अरूण।।
संध्याक शक्ति देल दुन्नु भौं
वायुदेव द्वै रचल श्रवण।
दाँत बनल प्रजापतिक शक्तिसँ
अग्नि-शक्ति-त्रिनेत्रनयन..।।

आयुधालाप : ब्रह्मा देलनि कमण्डल माऽए केर
विष्णु चक्र प्रदान केलनि।
शंकर देलनि त्रिशूल पिनाकी
अग्नि शक्तिवाण देलनि।।
शंख औ पाश वरुणजी देलनि
इन्द्रहु वज्र दऽ ध्यान केलनि।
काल दण्ड यमराजो देलनि
पर्वत श्रृंखला सिंह देलनि।।
रवि, रश्मि दए रोम कूपमे
ज्योति शक्तिनी माऽए दरसल।
मांगलिक मणिमाला प्रजापति दऽ
भक्त आँजुर माऽए वर परसल।।
अम्बुज-रत्न श्री कुडल-कंगन
हँसुली नुपूरसँ माऽए सजल।
पृथ्वीक अंऊँठी-हार पहिर माऽए
'रण-चण्डी' हुँकार भरल।।

अन्तरा : रणमे राक्षस सबल माऽएसँ युद्धो प्रबल
महिषासुर जेँ मरल, माऽए केर जयगान बढ़ल।।
रणमे राक्षस विह्वल माऽएसँ युद्धो प्रबल

महिषासुर जेँ मरल, माऽए केर जयगान बढ़ल।।
माऽए विजयाक यश गावए प्रीतम
जय-जय शेरावाली...।
ऊँ धै...।। 3।।

विद्यापति स्मृति

विद्यापति पर्वागत श्रीमन
दएलहुँ दर्शन तँ कुशल कहू...।
मिथिला आशिष दए हुकरि रहल
जुनि स्वारथ कोपमे घुसल रहू...।।
दएलहुँ दर्शनसँ तँ...।। 0।।

तिरहुत मिथिलांचल अपनेहिकेँ
बाटो जोहए मन्हुआएल जकाँ...।
संस्कार गिरल-लोक-लाज मरल
डाही देखए कन्हुआएल जकाँ...।।
कुटनी-लुटनी सभ दुइस रहल
बुधियार छी तैं सभ दुसल रहू...।
मिथिला आशिष दए हुकरि रहल...।। 0।।

गौंआँरी मितौरीक खटपट्टी
बाबाक खिस्सा खिसिआएल छै।
बेसुध अछि पंचो-परमेसर
जँहि-तँहि लेरहल घिसियाएल छै,
रूसना विधना देल कोप करम
अभिशापित भऽ किएँ रूसल रहू...।
मिथिला आशिष दए हुकरि रहल...।। 0।।

हथटुट्टा कुरसी हकैम कहए
अबियौ कनि गाम अहाँ बौआ
हेहरूघर दरबज्जा हुचकए
शहरी सुख नाचए झमकौआ
सुख रोगी पूत सेहन्तेसँ
बड़बेस नगरमे हुस्सल रहूँ
मिथिला आशिष दए हुकरि रहल...।। 0।।

डीह-डाबर माटिसँ नेह करू
कहियो-कहियो बनु घरमुहाँ
पोखैर गाछी देव थान कहए
पावैन लाथे सेहो आऊ अहाँ
प्रीतम कर जोड़ए सुनू मैथिल
शुभकाल अछि तैं नहि हुस्सल रहू
मिथिला आशिष दए हुकरि रहल...।। 0।।
¦

वरद वसन्त

वरद वसन्त सुमन्त सुहावन
स्वागत मृदुकोकिल स्वरकँ
विहुँसल कुसुम सरस ॠतु भावन
मुदित कएल भू अम्बरकँ
वरद वसन्त, सुमन्त सुहावन...।। 0।।

धन्य वसन्त अनन्त दिगन्तक
व्यग्र बुलन्त महन्थक रूपैँ
सुमनक सौरभ, ललित पलाशक

मधुकर मधुप जयन्त सरूपेँ
श्रुति सुर सरगम राग विरागहिं
पिक पंचम सुर पिऊपिऊ गावए
गीत-संगीत औ थाटक बाटहिं
काफी वसन्त बहार सुहावए
सुन्दरि छमकावए पग पैजनि
फागुन सुमिरए ईश्वर कें
विहुँसल कुसुम... वरद वसन्त...।। 1।।

मदनोत्सव मृदंग मंजीरन
डम्फक संग नचए रंगरसिया
रति पति मदनक पंचवाण संग
कामोन्वेषी टेरय बँसिया
युगश्री कविजन जेहि वसन्तक
काव्याधार सँ स्नात भएल
विद्यापति ज्योतिरीश्वर संगहि
कालिदास ऋृतु रीत धएल
आजु अहर्निश प्रीतम अरचए
मिथिला मैथिली सुर गहवरकेँ
बिहुँसल कुसुम...। वरद वसन्त...।। 2।।
।

सरस वसन्त

बौरए वसन्त कन्त करय बरजोरी
फनकैत फागुन धुन-गावैए होरी।।
रंग-विरंग अंग-ओढ़नी-ऑँचर संग
उमकए उमंग तंग-भावैए गोरी।।
बौरए....।

युगबोध स्नेहक संगतिया संगोरए
स्वारथ मितौरीकेँ सद्भाव तोड़ए
उत्सव उड़ेहि लोक-लाज देह ओड़ए
डम्फा-जोगीरो आब जनमन झकोरए
सनकए मंजीर-ढोल करए सीना-जोरी
फनकैत फागुन धुन...
बौरए वसन्त कन्त...।।1।।

कवित्त : ॠतुराज वसन्त और मस्त पवन
फागुन मधु मासक रंग रमल
कामिनी-भामिनी-मदनोत्सव रत
होलीक हुड़दंग केर संग जमल
तरुणीक जौवन तरुकेँ पल्लव
नव ललित शुभ्र रक्तिम-हरियर
कलशल बैगनी अलसी-अड़हर
तोड़ी-सरिसो पीयर-उज्जर
गहुमो केर शीष आशीष भरल
सुखदा-वरदा धरती बिहुँसल
सतरंगी छटा जँहि-तँहि हलचल
खग दल कलरव जगती निहुँछल
पपिहाक पंचम सुरतान सजल
संगीत थाट हिय 'काफी' हँसल
मृदुराग 'वसन्त-बहार' नवल
सुरभित गायन हिय मुग्ध बसल
आऽऽऽ... रंग-विरंग अंग, ओढ़नी आँचर संग...।
बौरए वसन्त कन्त...।

आहत अबीर कएल बे रंग-कुरंग सँ
सीखल पहुनाई पवन रतिपति अनंगसँ
परसल पकवान रस पूछए प्रसंगसँ

दुबकए प्रीतम किए, होलीक हुड़दंगसँ
बेसुर मनुक्खोकेँ रंग संग...।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

डॉ. शिवकुमार प्रसादक

किछु कविता

भुमकम

चारि दिवस ओ सगर यामिनी
नीनक मातल भेल हताश
किनकहुँ कतहु त्रास भेटए नहि
भुमकम भेल गरदनिक फाँस।

कोना जीयब?
की करत विधाता?
ज्ञान-विज्ञान सभ भेल अथाह
दरकल भीत भियौन लगैत अछि
घरो बाँचक नहि अछि आश
भुमकम भेल...।

किनको छुटल प्राण
क्यो बाँचल
क्यो-क्यो दुखे भेल बताह
मनक बेथा किनकासँ बाँटी
घरक-घर भऽ गेलै नाश
भुमकम भेल...।

धरतीक संग थरथर काँपइ
गाछ-बिरीछ संग मानव जाति
की हम केलहुँ की हम पेलहुँ
किनको नहि बुझबाक अवकाश
भुमकम भेल...।

दू-चारिक बात रहल नहि
हजारक-हजारकेँ लऽ गेल काल
केतबो क्यो कलोल कए थाकल
बैठला थाकि-हारि-कऽ आश
भुमकम भेल...।

पाथरक नव जंगल बनाओल
जानक ग्राहक ओ बनि गेल
सर-सम्पैत संग छीनि कए लऽ गेल
जीवनक सभटा हास-विलास
भुमकम भेल गरदनिक फाँस। q

दीप

सगर राति हम दीप जरेलौं
तैयो घर अन्हारे अछि
राति-राति भरि दिनक आशमे
मन हमर ओझड़ाएले अछि
तैयो घर अन्हारे अछि।

तमसो मा ज्योर्तिगमय केर
पाठ सभ नित्य दोहराबैत अछि

तैयो नित्य इजोतक चाहमे
एखनो सभ अन्हाराएल अछि
तैयो घर अन्हारे अछि।

मैथिली संगे मिथिला जीतल
देशक भाषामे नाम जुड़ल
भाषा केर सम्मानो बढ़ने
सबहक आँखि किए मुनल अछि
तैयो घर अन्हारे अछि।

भाषा ओ साहित्यकेँ जे जन
आगू आइ बढ़ाबै छथि
हमरा बुझने वएह छथि मैथिल
हुनके नाम आइ गाबक अछि

राति-राति भरि दिनक आशमे
मन हमर ओझड़ाएल अछि
सगर राति हम दिन जरेलौं
तैयो घर अन्हारे अछि।

मन पछताय

कन-कन माटि कन-कन देह
कन-कन पानि कनकन छै खेत
अगली-बगली खेत पाटि गेल
ऊँचका पाटी भेल बलाय
की करी नै करी मन पछताय।

हाथ-पएर केर आँगुर ठिठुरल
छिपली मानए नहि आँगुरक बात
खेतक आड़िपर राखल जलखै

कौआ अलगे खेल-खेलाय
की करी नै करी मन पछताय।

धानक बुट्टी जरि गेल भोरे
आगि-छय केर कोन उपाय
बिनु पटौने खेत छोड़ि कऽ
आगिक भॉंजमे कतए जाय
की करी नै करी मन पछताय।

बड़ झंझटिया खेती-बाड़ी
गहुमक खेती बड़ दुखदाय
जाड़ै-जनमए जाड़े बाढ़य
जाड़े मे ओ फरए-फुलाए
की करी नै करी मन पछताय।

जाड़े-जड़ेलहुँ खेत भेल हरियर
धरती भेली परम सहाय
पछबासँ जँ बाँचि गेल तँ
सभटा मेहनत जाएत भुलाय
की करी नै करी मन पछताय।

सभ झूठ-फूसमे बाझल छी

सभ झूठ-फूसमे बाझल छी
कियो अपन डीह नहि ताकै छी।

अपन चास-बास छोड़ि सभ
अनकर चास सम्हारै छी
अपन गाम सुनसान लगैत अछि

अनकर गाम बसाबै छी
सभ झूठ-फूसमे...।

अपन सहोदर दुआरपर अँटकल
दोसर सहोदर ताकै छी
गाम-गाम केर एक्के खिस्सा
दुआरो दीप नहि बारै छी
सभ झूठ-फूसमे...।

भाषा भेष बदैल रहल छै
नित-नित नूतन मिथिला केर
अपन भाषा बिसैर रहल छी
आने भाषापर आश्रित छी
सभ झूठ-फूसमे...।

हाकिम, अमला मील मजूर बनि
जीबू जेतए जे काज मिलए
अपन भूमि-भाषा नहि बिसरी
मिथिले केर अहाँ बेटा छी
सभ झूठ-फूसमे बाझल छी। q

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु अनुदित काव्य (रजनी छाबड़ाक मूल हिन्दीसँ)
(PAGHALAIT HIMKHAND

Maithili translation of 'PaighalteHimkhand'
An Anthology of Hindi Poems by Rajni Chhabra from Hindi into Maithili by Dr. Sheo Kumar Prasad.)

अकास भरल छै

अकास भरल छै
दहों-दिस बेकल छै
नहि जानि आइ प्राकृत
कोन लीला करतै!

बेसुध

बेसुधिक हालैतमे
अपनाकेँ हम
ओहिना बजबै छी
जेना अहीं बजाबैत होय हमरा।

नहि जानि कहिया
जएत ई पगलपन
होश हएत
कहिया। q

नारी

जनानीकेँ मात्र जनानी
किए नहि बुझल जाइ छै!

समाज स्थापित
कऽ देलकै
ओकरा लेल
जिनगीक किछु आदर्श
किछु शर्त
ओकरा जे निभौती
ओ देबी कहौती।

अपेक्षाक सिंघासनसँ
उतरिते
भऽ जेती पतिता।

कखनो तँ देबी सन पूजलक
कखनो पाएरक पनही बनौलक
कखनो कठपुतरी सन
मन माफिक नचौलक
अपेक्षा एतेक ऊँच भऽ गेलइ
जे जनानीक जिनगी ओछ भऽ गेलइ।

किए नहि मानै छी सभ
ओ मात्र जनानी छी!
सहज सरस सरलमैत
सम्वेदनाक जननी आ
सृष्टिक सिरजनहारि।

अपना मने जिबाक
ओकरो अधिकार छै
जनानी बस जनानी अछि। q

एकटा हेराएल जनानी
शिकाइत की अनकासँ
अपने सभ छीनि लेलक
हमरासँ हमर पहिचान।

बेटी पुतौह कनियाँ माए
मे ओझराएल
मेटा लेल

हम अपनेसँ
अपन पहिचान।

बाटपर जाइत काल्हि
सोर पाड़लक संगी
नेन्हपनमे राखल छल
जे हमर नाओं।

खुजए लागल तखन हमर
स्मृतिक झरोखा
रौदक चालैनमे
किरिणसँ निकसल
धुँआएल-धुँआएल नाओं।

हमहुँ कहियो हम छेलौं
माए-बापक फुदकी चिड़ै
हास विलाससँ भरल
उड़ैत रही अँगना-घर
गामक गलीसँ गामक सिमान धरि।

हमर अजादीक खिस्सा पसैर गेल
काँचक किरिच सन गरए लगलैन
अड़ोस पड़ोस संग
सर-सम्बन्धीकेँ
हमर पसरल पाँखिक अजादी।

नोचैले पाँखि अजादिक हमर
सुन्नर सुन्नर बहन्नासँ
करौल गेल बिआह
नेनपनेमे हमर।

पढ़ब-लिखब सपना भेल
हमरा पोल्हाएल गेल
घरेक सेवामे मेवा भेटै छै,
जाबत सुतल छल
अपन पहिचानक इच्छा
ताबत किछु बर्ख धरि
रहलौं गिरहस्थीमे लीन।

बच्चा अपन जिनगी आ
पुरुष अपन काज संग
पलखैत ने हुनका
हमरा लेल एको छण।

पाकैत बाउल सन
तपैए मन।

धधकैत मरूभूमिमे
ढन-ढनाइत घैल सन
मन हमर खाली अछि
जिनगिक मरीचिकामे तकै छी
अपन पहिचान।

फल्लाँक बेटी हम फल्लाँक बहुरिया
फल्लाँक कनियाँ आ फल्लाँक माए बनि
हम गेलौं हेराए।

शिकाइत की अनकासँ
अपने सभ छीनि लेलक
हमरासँ हमर पहिचान। q

राजभाषा
भुगतानक बेर बैंकमे
कहल गेलइ नाओं

राजभाषा नाओं देखि
भेटल मनकेँ अराम।

अहाँसँ तँ देशोकेँ
बढ़ल अछि शान
अहाँ बिनु रहने की
होएत हिन्दुस्तानक पहिचान।

भुगतान लेबए काल जखन
लगौलनि ओ औंठा निशान
झमान भऽ खसल मन
भेलौं मृयमान।

नाओं आ गुणक
केतौ ने कोनो मेल
बिधाता की केला
केहन केला खेल।

मनमे लेने ओकर
पढ़ेबाक अभिलाषा
माए-बाप रखने हेतए
नाओं राष्ट्रभाषा।

परिस्थितियो राजभाषासँ केलकै मजाक

ejournal 'विदेह' २५३ म अंक ०१ जुलाइ २०१८ (वर्ष ११ मास १२७ अंक २५३) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

अक्षरोक बोधसँ ओकरा केलकै फराक। q

बिद्याक बाट

गबरा, धापू, लिछमी आ रामी
पैघ पैघ डेग बढ़बैत
पाठशालाक बाटपर बढ़ि रहल अछि।

आइ बहिनजी सिखेती हाँसिल-जोड़
जेकरा सिखला बुझला पछाइत
बनियाँक चलाकी
नहि चलतै।

आखर ज्ञानसँ
फैदे-फैदा
बनियाँक जोर
नहि चलतैन जादा।

गबरा, धापू, लिछमी आ रामी
आब तोरा सभसँ मनक बात कहियौ
कहबौ किए ने
गामक सभ जनानी पढ़ए चाहै छै
हमहीं किए अनपढ़ रहब?

चुलही पजारैत, दालि भात रान्हैत
बिजलोका जकाँ मनमे लौकैत अछि
धधकैत आगिकेँ निहारैत
सुनगैत मन नेने
चुल्हिसँ कचका कोयला निकालि
देबालेपर 'क''ख''ग''घ' लिखने जाइ छी।

सेन्टरपर नहि जा पबैछ तँ की
अपन बेटिये सभकेँ गुरू बनबैत
धापली बिद्याक बाटपर बढ़ि रहल अछि।

छौरमे सुनगैत चिनगी
आहूत करैत शिक्षाक महायज्ञक
हमरा गामक सभ जनाना
महान यज्ञमे आहूति दैत
बिद्याक ठेकान पाबि
सुखद जीबनक बाटपर बढ़ि रहल अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आगाँक अंक

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ २०१८ मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु